राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹ 15/-

उभरता बिहार

वर्ष : 16, अंक : 2, अगस्त, 2023

सच्चाई, ऊर्जा, सकारात्मक विचार

बिहार के इन सात छात्रों ने लहू से लिखा था आज़ादी का इतिहास

जहां न कोई पुजारी, न होती है पूजा-पाठ

उत्पादकता का बिहार बनाना है बिहार बढ़ेगा तभी देश बढ़ेगा

फिर से जीवंत हो उठा 1971 का...

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस
कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन
की हार्दिक शुभकामनाएं

समीर महासेठ

उद्योग मंत्री
बिहार सरकार

उभरता बिहार

वर्ष : 16, अंक : 02, अगस्त 2023

RNI No. BIHHIN/2007/22741

संपादक
राजीव रंजन

समाचार संपादक
राकेश कुमार

विशेष संवाददाता
कुमुद रंजन सिंह

छायाकार
विनोद राज

विधि सलाहकार
उपेन्द्र प्रसाद
चंद्र नारायण जायसवाल

साज-सज्जा
मयंक शर्मा

प्रशासनिक कार्यालय
सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर
कंकड़बाग, पटना - 800020
फोन : 7004721818

Email : ubhartabihar@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक रांजीव रंजन द्वारा कृत्या पब्लिकेशन, लंगरटोली, बिहार से मुद्रित एवं सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर, कंकड़बाग, पटना - 800020 से प्रकाशित।
संपादकः राजीव रंजन

सभी कानूनी विवाद पटना न्यायिक क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत निपटाये जायेंगे। लेखकों द्वारा व्यक्त विचार उनके अपने है। इसकी जिम्मेदारी उनकी है एवं इसके लिये संपादक, प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नही है। सामग्री की वापसी की जिम्मेवारी उभरता बिहार की नहीं होगी। इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वोधिकार सुरक्षित है। कुछ छाया चित्र और लेख इंटरनेट, एजेंसी एवं पत्र-पत्रिकाओं से साभार। उपरोक्त सभी पद अस्थायी एवं अवैतनिक है। किसी भी आलेख पर आपत्ति हो तो 15 दिनों के अंदर खंडन करें।

नोट : किसी भी रिपोर्टर द्वारा अनैतिक ढंग से लेन-देन के जिम्मेवार वे स्वयं होंगे।

संरक्षक

डॉ. संतोष कुमार | अखिलेश कुमार जायसवाल
राजीव रंजन | डॉ. राकेश कुमार

कैलाशनाथ मंदिर: जहां न कोई पुजारी, न होती है पूजा-पाठ 05

राजगीर में मलमास मेला का आगाज... 14

1971 भारत-पाक युद्ध के स्वर्णिम ... 24

राजीव रंजन
संपादक

समाज की जनसंख्या की गणना करना, वर्णन करना और समझना और लोगों की किस तक पहुंच है और उन्हें किस चीज से बाहर रखा गया है, यह न केवल सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए बल्कि नीति चिकित्सकों और सरकार के लिए भी महत्वपूर्ण है। जाति भारत के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में एक प्रमुख भूमिका निभाती है, फिर भी कोई विश्वसनीय और व्यापक जाति डेटा नहीं है। सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए एक विश्वसनीय जाति जनगणना आवश्यक है। अब जब बिहार ने पहल की है और लगभग 3.50 लाख गणनाकारों को तैनात करते हुए जाति-आधारित गिनती का पहला चरण शुरू किया है, तो एनडीए सरकार को इस मामले पर अपनी दुविधा छोड़नी चाहिए और राष्ट्रीय स्तर पर इस अभ्यास को शुरू करना चाहिए। जाति के आधार पर जनसंख्या की गणना करने से आरक्षण नीति को सुदृढ़ करने में मदद मिलेगी। यह बड़ी संख्या में उन मुद्दों को सामने लाएगा जिन पर किसी भी लोकतांत्रिक देश को ध्यान देने की जरूरत है, खासकर उन लोगों की संख्या जो हाशिए पर हैं, या जो वंचित हैं। इस प्रकार उत्पन्न विस्तृत डेटा नीति निमार्ताओं को बेहतर नीतियां और कार्यान्वयन रणनीतियां विकसित करने की अनुमति देगा। हालाँकि संविधान स्पष्ट रूप से राज्यों को जनगणना करने की अनुमति नहीं देता है, लेकिन यह बताया जाना चाहिए कि सुप्रीम कोर्ट ने नौकरियों, शिक्षा और निर्वाचित निकायों में राज्य-स्तरीय जाति कोटा को मंजूरी देने के लिए पिछड़ेपन पर मात्रात्मक डेटा को मुख्य मानदंड बनाया है। इस मोर्चे पर, तेलंगाना सरकार इस मुद्दे का समर्थन करने में सबसे आगे रही है और पहले ही विधानसभा से एक प्रस्ताव पारित कर चुकी है, जिसमें केंद्र से जनगणना कार्य में जाति-आधारित गणना को शामिल करने का आग्रह किया गया है। हालाँकि, यह चौंकाने वाली बात है कि केंद्र सरकार ने सितंबर 2021 में सुप्रीम कोर्ट के समक्ष अपनी प्रस्तुति में जाति-आधारित जनगणना का विरोध करते हुए कहा कि यह प्रक्रिया प्रशासनिक रूप से कठिन और बोझिल थी। छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और ओडिशा जैसे राज्य भी जाति सर्वेक्षण कराने के इच्छुक हैं।

कैलाशनाथ मंदिर: जहां न कोई पुजारी, न होती है पूजा-पाठ

महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित विश्वप्रसिद्ध एलोरा की गुफाएं भारतीय शिल्प कला का बेजोड़ नमूना हैं तो है ही यहां का कैलाशनाथ मंदिर भारत का एक प्रसिद्ध मंदिर भी है। औरंगाबाद से 30 किमी दूर स्थित एलोरा की गुफाओं को वर्ल्ड हेरिटेज के रूप में संरक्षित किया गया है, ताकि आने वाली पीढ़ी भी तकरीबन 1400 साल पुराने भारतीय कला की इस उत्कृष्ट कृति को देख सके. एलोरा की गुफाओं में 34 गुफाएं शामिल हैं. ये गुफाएं बेसाल्टिक की पहाड़ी के किनारे बनी हुई हैं. गुफाओं में स्थित कैलाशनाथ मंदिर को लयण-श्रृंखला के अनुसार राष्ट्रकूट वंश के शासक कृष्ण प्रथम ने 757 ई. से 783 ई. के मध्य निर्माण करवाया था। 16वीं शताब्दी में मुगल शासक औरंगजेब ने इस मंदिर को नष्ट करने के लिए एक-दो नहीं कई बार आक्रमण कराया और सैनिकों ने लगभग 3 वर्ष तक नष्ट करने का पूर्ण प्रयास किया, लेकिन थोड़ी - बहुत क्षति के अलावा वे इस मंदिर को पूरी तरह से नष्ट करने में असफल रहे। गुफाओं में हिंदू, जैन और बौद्ध तीन धर्मों के प्रति आस्था के त्रिवेणी संगम का प्रभाव देखने को मिलता है. यहां की गुफाओं में की गई नायाब चित्रकारी व मूर्तिकला अपने आप में अद्भुत हैं. इसके साथ ही यहां की गुफाएं धार्मिक सद्भाव की अनूठी मिसाल हैं. भगवान शिव को समर्पित इस मंदिर में न तो कोई पुजारी है और न ही यहां किसी प्रकार की पूजा-पाठ की कोई जानकारी मिलती है.

सुरेश गांधी

भारत के अलग-अलग हिस्सों में कई ऐसे मंदिर हैं जो अपने इतिहास और अपनी प्रचीन परंपराओं के साथ अपनी वास्तुकला, सुंदरता, समृद्धता के लिए भी प्रसिद्ध हैं। इन मंदिरों की वास्तुकला एवं खूबसूरती कुछ ऐसी है कि आज भी नवीन तकनीकी और विज्ञान की सुविधाओं के बाद भी इस प्रकार की वास्तुकला को हकीकत में उतार पाना बहुत ही मुश्किल है। ऐसा ही एक मंदिर है महाराष्ट्र के औरंगाबाद की एलोरा की गुफाओं में, जो अपनी खूबसूरती के पीछे कई सारे रहस्यों को दफन किए हुए है। ये मंदिर भारत के 8वें अजूबे से कम नहीं है। भगवान शिव का निवास माने जाने वाले कैलाश पर्वत के आकार की तरह ही इस मंदिर का निर्माण कराया गया है। कहते है 276 फुट लंबे और 154 फुट चैड़े इस मंदिर को एक चट्टान को काटकर और तराशकर किया बनाया गया है। ऊं के आकार में इस चट्टान को काटने मे 18 साल का समय लगा। इस चट्टान का वजन लगभग 40,000 टन बताया जाता है। आमतौर पर पत्थर से बनने वाले मंदिरों को सामने की ओर से तराशा जाता है, लेकिन 90 फुट ऊंचे कैलाश मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसे ऊपर से नीचे की तरफ तराशा गया है।

इस मंदिर में प्रवेश द्वार, मंडप तथा कई मूर्तियां हैं। दो मंजिल में बनाए गए इस मंदिर को भीतर तथा बाहर दोनों ओर मूर्तियों से सजाया गया है। मंदिर में सामने की ओर खुले मंडप में नंदी है और उसके दोनों ओर विशालकाय हाथी तथा स्तंभ बने हुए हैं। कैलाश मंदिर के नीचे कई हाथियों का निर्माण किया गया है और यह मंदिर उन्हीं हाथियों के ऊपर ही टिका है। यही कारण है कि मंदिर के निर्माण में दैवीय सहायता की भी संभावना जताई जाती है। मंदिर से जुड़ी एक और विचित्र बात यह है कि यह भगवान शिव को समर्पित है, लेकिन मंदिर में न तो कोई पुजारी है और न ही यहां किसी प्रकार की पूजा-पाठ की कोई जानकारी मिलती है। दावा है कि कैलाश मंदिर एक

ही पत्थर से निर्मित विश्व की सबसे बड़ी संरचना है। सबसे खास बात यह है कि यह मंदिर हिमालय के कैलास मंदिर की तरह दिखता है। कहते हैं कि इसे बनवाने वाले राजा का मानना था कि अगर कोई इंसान हिमालय तक नहीं पहुंच पाए तो वो यहां आकर अपने अराध्य भगवान शिव का दर्शन कर लें। कैलाश मंदिर दिखने में इतना आकर्षक है कि यह सिर्फ भारत के लोगों को ही नहीं बल्कि दुनियाभर से पर्यटकों को आकर्षित करता है।

राजा कृष्ण प्रथम ने कराया मंदिर निर्माण

मंदिर की देखभाल करने वालों की मानें तो एलोरा के का निर्माण राष्ट्रकूट वंश के राजा कृष्ण प्रथम के द्वारा सन् 756 से सन् 773 के दौरान कराया गया। मंदिर के निर्माण को लेकर यह मान्यता है कि एक बार राजा गंभीर रूप से बीमार हुए तब रानी ने उनके स्वास्थ्य के लिए भगवान शिव से प्रार्थना की और यह प्रण लिया कि राजा के स्वस्थ होने पर वह मंदिर का निर्माण करवाएंगी और मंदिर के शिखर को देखने तक व्रत धारण करेंगी। राजा जब स्वस्थ हुए तो मंदिर के निर्माण के प्रारंभ होने की बारी आई, लेकिन रानी को यह बताया गया कि मंदिर के निर्माण में बहुत समय लगेगा। ऐसे में व्रत रख पाना मुश्किल है। तब रानी ने भगवान शिव से सहायता मांगी। कहा जाता है कि इसके बाद उन्हें भूमिअस्त्र प्राप्त हुआ जो पत्थर को भी भाप बना सकता है। इसी अस्त्र से मंदिर का निर्माण इतने कम समय में संभव हो सका। बाद में इस अस्त्र को भूमि के नीचे छुपा दिया गया। मंदिर की दीवारों पर अलग प्रकार की लिपियों का प्रयोग किया गया है जिनके बारे में आजतक कोई कुछ भी नही समझ पाया। ऐसा कहा जाता है कि अंग्रेजों के शासनकाल में मंदिर के नीचे स्थित गुफाओं पर शोधकार्य शुरू कराया गया, लेकिन वहां हाई रेडियोएक्टिविटी के चलते शोध को बंद करना पड़ा। इसके अलावा गुफाओं को भी बंद कर दिया गया जो आज भी बंद ही हैं। ऐसी मान्यता है कि इस रेडियोएक्टिविटी का कारण वही भूमिअस्त्र और मंदिर के निर्माण में उपयोग किए गए अन्य उपकरण हैं जो मंदिर के नीचे छुपा दिए गए थे।

औरंगजेब भी नहीं तोड़ पाया इस मंदिर को

इस्लामिक आक्रांता औरंगजेब ने इस मंदिर को नुकसान पहुंचाने का बहुत प्रयास किया। लेकिन छोटे-मोटे नुकसान के अलावा वह इसे किसी भी प्रकार की क्षति पहुंचाने में असफल रहा। इतिहासकारों के मुताबिक औरंगजेब के हजारों सैनिकों ने 1862 में इस मंदिर को तोड़ने के लिए 3 साल तक प्रयास किया। इसके बावजूद भी वो मंदिर को नहीं तोडने में असमर्थ रहे। क्योंकि औरंगजेब को इस बात की जानकारी हो चुकी थी कि वह इस मंदिर को नुकसान नहीं पहुंचा सकता और उसने तुरंत उन सिपाहियों को दूर हट जाने का आदेश दे दिया था। सिर्फ इतना ही नहीं तोपों से भी इस भव्य मंदिर को खंडित नहीं किया जा सकता है। जियोलॉजिकल डिपार्टमेंट सर्वे के खोजकताओं का कहना है कि इस भव्य मंदिर को बनाने के लिए चट्टानों से 4 लाख टन पत्थर को काट कर हटाया गया होगा। एक अनुमान के मुताबिक अगर 7000 मजदूरों ने 12-12 घंटे भी काम किया होगा तो 18 साल में 4 लाख टन पत्थरों को निकालने के लिए हर वर्ष कम से कम 22 हजार टन पत्थरों को निकाला गया होगा। यानी 60 टन पत्थरों को हर दिन निकाला गया है। या यूं कहे 5 टन पत्थरों को हर घंटे निकाला गया होगा। इस बात पैर यकीन करना बहुत ही मुश्किल है क्योंकि सहस्त्र वर्ष पूर्व आधुनिक उपकरण तो हुआ ही नहीं करते थे और इतने कम समय में इतनी बारीकी से अद्भुद इमारत को बनाना लगभग ना के बराबर ही है।

शिल्पकला का बेजोड़ नमूना है एलोरा

एलोरा में कुल 100 गुफाएं हैं, जिसमे 34 गुफाएं ही लोगों के लिए खुली है। बाकी गुफाओं में लोगों का जाना वर्जित है। मंदिर गुफा नंबर 16 में है। इस मंदिर को 1983 में यूनेस्कों द्वारा विश्व विरासत स्थल का दर्जा मिला है। मंदिर की अद्भुत नक्काशी व वस्तुकला में पल्लव और चालुक्य शैली नजर आती है। पुरातनविदों के अनुसार इस मंदिर को बनाने में लगभग 150 वर्षों या इससे भी अधिक लगने चाहिए। जिस काल में इसका निर्माण किया गया उस समय न तो आधुनिक मशीने थी न कोई ऐसी कोई विशेष तकनीक, और आज के युग में भी इस प्रकार के मंदिर का निर्माण केवल 18 वर्षों में करना असंभव ही है। जियोलॉजिकल डिपार्टमेंट सर्वे के अनुसार उनके कई अधिकारी और खोजकताओं का दावा किया है कि इस दिव्य मंदिर के नीचे एक पूरा शहर है। परन्तु वहां तक पहुंचने का रास्ता किसी को भी ज्ञात नहीं है। इस मंदिर की बारीकी से कि गई जांच के पश्चात पता चला कि शिल्पकारों ने इस पूरे मंदिर को सफेद रंग से ढक दिया था। ताकि ये कैलाश पर्वत की भांति नजर आए और इसकी बनावट भी इतनी अद्भुत है कि कैलाश पर्वत से ही मिलती है। जांच के बाद सबसे बड़ा रहस्य यह निकल कर आया है कि जिन्होंने निर्माण किया या जिन्होंने निर्माण करवाया उनके बारे में कोई भी पुख्ता सबूत नहीं है और इस मंदिर का संपूर्ण निर्माण किस दिन किस तारीख को संपन्न हुआ इस बात को भी कोई पुख्ता सबूत नहीं है। जिस कारण से इसकी कार्बन डेटिंग तकनीक द्वारा इसकी सही उम्र पता लगा पाना संभव नहीं है। यहां पूरा का पूरा एक ड्रेनिंग सिस्टम बना हुआ है बारिश के पानी को स्टोर करना, अतिरिक्त पानी को नालियों द्वारा निकालना। यहां छोटी से छोटी चीज को सुनियोजित तरीके से बनाया गया है।

एलोरा उत्सव

प्रत्येक वर्ष ठंड के मौसम में महाराष्ट्र टूरिज्म डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन एलोरा महोत्सव का आयोजन करती है. पहले कैलाश मंदिर का इस्तेमाल एलोरा महोत्सव के लिए किया जाता था. लेकिन अब औरंगाबाद में ही स्थित खूबसूरत सोनेरी महल में एलोरा महोत्सव को मनाया जाता है. सोनेरी महल डॉक्टर बाबा साहेब अंबेडकर मराठावाड़ा विश्वविद्यालय में स्थित है. इस महोत्सव में नृत्य और संगीत का अद्भुत संगम देखने को मिलता है. महाराष्ट्र टूरिज्म डेवलपमेंटकॉर्पोरेशन इस महोत्सव के लिए देशभर से नृत्य और संगीत की दुनिया के मशहूर कलाकारों को आमंत्रित करती है. इस उत्सव के आयोजन का मुख्य उद्येश्य देश की समृद्ध विरासत भारतीय नृत्य व संगीत कला को उजागर करना है. इस उत्सव में शास्त्रीय और लोक नृत्य और संगीत का आयोजन होता है, जिसे भारत के मशहूर कलाकार प्रस्तुत करते हैं.

कैसे पहुंचे

यदि आप भी दुनिया घुमने के शौकीन हैं तथा कलाप्रेमी हैं.तो एलोरा आपके लिए एक अच्छा पर्यटनस्थल है. एलोरा की गुफाओं में स्थित है कैलाश मंदिर, जो दुनिया भर में एक ही पत्थर की शिला से बनी हुई सबसे बड़ी मूर्ति है. यहां

बौद्ध धर्म से जुड़ी शिल्पकलाओं और चित्रकलाओं से अटी पड़ी गुफाएं हैं. ये मानवीय इतिहास में कला के उत्कृष्ट अनमोल समय को दशार्ती है. कैलाश मंदिर, औरंगाबाद शहर से 30 किमी दूर स्थित है। मंदिर का सबसे नजदीकी हवाईअड्डा औरंगाबाद ही है जो दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद, तिरुपति, अहमदाबाद और तिरुवनंतपुरम जैसे शहरों से जुड़ा हुआ है। इसके अलावा रेलमार्ग से हैदराबाद, दिल्ली, नासिक, पुणे और नांदेड़ जैसे शहरों से भी औरंगाबाद पहुँचा जा सकता है। कैलाश मंदिर से औरंगाबाद रेलवे स्टेशन की दूरी लगभग 28 किमी है। महाराष्ट्र की सार्वजनिक परिवहन सेवा की बसों के माध्यम से राज्य के लगभग सभी बड़े शहरों से औरंगाबाद पहुँचने के लिए बस सेवा उपलब्ध है। पुणे से मंदिर की दूरी लगभग 250 किमी है। इसके अलावा मुंबई से कैलाश मंदिर लगभग 330 किमी की दूरी पर स्थित है।

बिहार के इन सात छात्रों ने लहू से लिखा था आजादी का इतिहास

कुमुद रंजन सिंह

भारत के आजादी में बिहार के बुजुर्ग शेर वीर कुंवर से लेकर छात्रों तक का इतिहास रहा है,जो भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बिहार में भी आंदोलनकारियों ने अपने खून से जगह-जगह शहादत का इतिहास लिख डाला था। ऐसी ही एक घटना पटना के सचिवालय पर हुई थी। अगस्त क्रांति के दौरान फिरंगी हुकूमत के प्रतीक सचिवालय पर तिरंगा फहराने के क्रम में पटना के सात छात्र 11 अगस्त 1942 को गोलियों के शिकार हो गए। लेकिन, उन्होंने तिरंगा फहराकर ही दम लिया था।

गांधी ने दिया करो या मरो का नारा

यह द्वितीय विश्वयुद्ध का दौर था। भारत में आजादी की तड़प भी तेज होती जा रही थी। उसी दौर में 1942 में महात्मा गांधी ने आर-पार की लड़ाई के लिए 'भारत छोड़ो आंदोलन' का प्रस्ताव रखा। इसे कांग्रेस ने आठ अगस्त 1942 को स्वीकार कर लिया। लेकिन, अगले 24 घंटे के अंदर देश के तमाम बड़े नेता या तो गिरफ्तार कर लिए गए या भूमिगत हो गए। लेकिन, तब तक गांधीजी ने आजादी की ललक हर व्यक्ति में जगा दी थी। रगों में लहू की जगह बापू का दिया नारा 'करो या मरो' बहने लगा था। रामवृक्ष बेनीपुरी ने लिखा है कि तब हर व्यक्ति नेता हो गया था। नौ अगस्त को आंदोलन शुरू हो गया।

नौ अगस्त को फूटी आंदोलन की चिंगारी

पटना तो स्वाधीनता आंदोलन का महत्वपूर्ण गढ़ रहा था। नौ अगस्त को पूरे देश के साथ आंदोलन की चिंगारी पटना में भी भड़क उठी। घर-घर आजादी के गीत गाए जाने लगे। कॉलेजों में छात्र-शिक्षक सभी आजादी का पाठ करने लगे। हवाओं में अंग्रेजो भारत छोड़ो के जोशीले शब्द गूंजने लगे। राजधानी का कण-कण पुकार उठा - आजादी।

हर व्यक्ति बन गया नेता

नौ अगस्त को सभी अपने-अपने हिसाब से आंदोलन कर रहे थे। बिहार के राजेंद्र प्रसाद, मथुरा बाबू, अनुग्रह नारायण, श्रीकृष्ण सिंह आदि तमाम बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए थे। अन्य नेताओं की गिरफ्तारी के लिए भी लगातार छापेमारी हो रही थी। कोई ऐसा बड़ा चेहरा नहीं था, नहीं जो नेतृत्व कर सके।

अगले दिन यानी 10 अगस्त को आंदोलन के साथ पटना ने एकजुट होना शुरू कर दिया। लोग अंग्रेजों की धमकी और दमन से बेखौफ सड़कों पर उतर रहे थे। ब्रिटिश सत्ता को सीधी चुनौती दे रहे थे। स्कूल-कॉलेजों से लेकर हर प्रतिष्ठान में आंदोलन की ज्वाला धधकती जा रही थी। उत्तेजना कुछ ऐसी थी कि 10 की रात लोग मुश्किल से सो सके।

ठान लिया: आजादी से कम मंजूर नहीं

11 अगस्त की सुबह हुई। लोग घरों से निकलने लगे। अशोक राजपथ जनसमूह से भरा हुआ था। आंदोलनकारियों का जत्था बांकीपुर पहुंचा, जहां आज बांकीपुर बस स्टैंड है। सभा हुई। आजादी से कम किसी को कुछ मंजूर नहीं था।

> “ यह द्वितीय विश्वयुद्ध का दौर था। भारत में आजादी की तड़प भी तेज होती जा रही थी। उसी दौर में 1942 में महात्मा गांधी ने आर-पार की लड़ाई के लिए 'भारत छोड़ो आंदोलन' का प्रस्ताव रखा। इसे कांग्रेस ने आठ अगस्त 1942 को स्वीकार कर लिया। लेकिन, अगले 24 घंटे के अंदर देश के तमाम बड़े नेता या तो गिरफ्तार कर लिए गए या भूमिगत हो गए।

ठान लिया कि आज यूनियन जैक का झंडा नहीं, अपना तिरंगा फहरेगा। आजादी आज चाहिए।

भीड़ चल पड़ी शासन के केंद्र यानी सचिवालय की तरफ। सचिवालय पर बड़ी संख्या में बिटिश हुकूमत ने सुरक्षा बल तैनात कर रखा था। परंतु, जब मिटने का जज्बा हो तो फिर रोक कौन सकता था?

जान पर खेल लहरा दिया तिरंगा

आंदोलनकारियों पर सुरक्षा बलों ने लाठी चार्ज कर दिया। परंतु कदम डगमगाए नहीं, हर लाठी पड़ते के साथ जोश बढ़ता गया। लोग सचिवालय तक पहुंच गए। तिरंगा लेकर बढ़ते लगे। इसके बाद जो हुआ वह आजादी के इतिहास का सबसे चमकदार सुनहरा पन्ना है। दिन के करीब 11 बज रहे थे। बौखलाए हुए जिलाधिकारी डब्ल्यू जी ऑर्थर ने गोली चलाने का आदेश दे दिया।

मिलर हाई स्कूल के नौवीं के छात्र देवीपद चौधरी तिरंगा लिए आगे बढ़ रहे थे। धोती पहने हुए मात्र 14 साल का किशोर। देवीपद सिलहट के जमालपुर गांव के रहने वाले थे, जो अब बंग्लादेश में है। अचानक सीने में गोली लगी और वे गिर गए।

तिरंगा गिरता, इससे पहले ही पुनपुन हाई स्कूल के छात्र रायगोविंद सिंह ने थाम लिया। रायगोविंद पटना के ही दसरथा गांव के थे। कदम जैसे बढ़ाया कि उन्हें भी गोली मार दी। अब तिरंगा राममोहन राय सेमिनरी के छात्र रामानंद सिंह के हाथों में था। रामानंद पटना के ही शहादत नगर गांव के थे। अंग्रेजों को चुनौती देते तिरंगा थामे वे बढ़ चले कि अगली गोली से वे भी वीरगति को प्राप्त हो गए।

तब तक तिरंगा को पटना हाई स्कूल गर्दनीबाग के राजेंद्र सिंह लेकर आगे बढ़े लगे। राजेंद्र सारण के बनवारी चक गांव के रहने वाले थे। उनकी शादी हो चुकी थी। गोलियां लगातार चल रही थीं। उन्हें भी गोली लगी और भारत माता की जय कहते हुए सदा के लिए भारत माता की गोद में सो गए।

साम्राज्यवाद की क्रूरता को आजादी का दीवानापन चुनौती देता आगे बढ़ रहा था। राजेंद्र को गिरने तक तिरंगा बीएन कॉलेज के छात्र जगपति कुमार थामकर आगे बढ़े लगे। जगपति औरंगाबाद के खरांटी गांव के रहने वाले थे। लक्ष्य बस कुछ ही कदमों पर था। जगपति तेजी से आगे बढ़े। उन्हें एक साथ तीन गोलियां लगीं। एक गोली हाथ में, दूसरी छाती में और तीसरी जांघ में।

जगपति के शहीद होते ही पटना कॉलेजिएट के छात्र सतीश प्रसाद झा ने तिरंगा थाम लिया। सतीश भागलपुर के खडहरा के रहने वाले थे। उन्हें भी गोली मार दी गई। तिरंगा अब राममोहन राय सेमिनरी के 15 साल के छात्र उमाकांत सिंह के हाथों में था। लक्ष्य सामने था। गोली चली, उमाकांत गिर पड़े, लेकिन तिरंगा तब तक सचिवालय पर लहराने लगा था।

पटना के सात शहीद :- भारत छोड़ो आंदोलन के नायक

ये सभी छात्र थे और 1942 में अगस्त क्रांति के दौरान 11 अगस्त को दो बजे दिन में पटना के सचिवालय पर झंडा फहराने निकले थे। पटना के उस समय के जिलाधिकारी डब्ल्यू जी आर्थर के आदेश पर पुलिस ने गोलियां चलाई थीं। इसमें लगभग 13 से 14 राउंड गोलियों की बौछार हुई थी। ये सात सपूत थे उमाकांत प्रसाद सिंह, रामानंद सिंह, सतीश प्रसाद झा, जगपति कुमार, देवीपद चौधरी, राजेन्द्र सिंह और राम गोविंद सिंह।

इस अभियान का नेतृत्व कर रहे थे देवीपद चौधरी। देवी पद चौधरी की उम्र 14 साल की थी। वे सिलहट (वर्तमान में बांग्लादेश) के जमालपुर गांव के रहने वाले थे। वे जब सचिवालय की ओर अपने छह साथियों के साथ बढ़ रहे थे तो पुलिस ने उन्हें रोकना चाहा पर वे रुकने वाले कहां थे। देवीपद तिरंगा थामे आगे बढ़ रहे थे कि पुलस ने उन्हें गोली मार दी। देवीपद को गिरते देख पटना जिले के दशरथा गांव के रामगोविंद सिंह आगे बढ़े और हाथ में तिरंगा ले लिया। देवकी सिंह के पुत्र रामगोविंद सिंह उस समय पुनपुन के हाईस्कूल में दसवीं कक्षा में पढ़ रहे थे।

रामगोविंद सिंह आगे बढ़े पुलिस ने उन्हें भी गोली मारी दी। तिरंगा रामानंद सिन्हा ने थामा और उसे गिरने नहीं दिया। पटना जिले के रहने वाले रामानंद सिंह 10वीं कक्षा के छात्र थे। उनकी शादी हो चुकी थी। रामानंद को गिरता देख सारण जिले के दिघवारा के निवासी राजेन्द्र सिंह ने तिरंगा थामा। राजेन्द्र सिंह आगे बढ़े। गर्दनीबाग उच्च विद्यालय में पढ़ाई कर रहे थे। उनका भी विवाह हो चुका था। राजेन्द्र सिंह के पिता का शिवनारायण सिंह थे। राजेन्द्र सिंह से तिरंगे को गिरता देख जगपति कुमार ने संभाला। जगपति कुमार औरंगाबाद जिले के रहने वाले थे।

जगपति कुमार को एक गोली हाथ में लगी दूसरी गोली छाती मे धंसी और तीसरी गोली जांघ में लगी फिर भी तिरंगा नहीं झुका। अब आगे आये भागलपुर जिले (बांका) के बरापुरा ग्राम के श्री मथुरा प्रसाद का सुपुत्र सतीश झा। वे पटना कालेज में पढ़ते थे। तिरंगा फहराने की कोशिश में इन्हें भी गोली मार दी गई। सतीश भी शहीद हो गए पर झण्डा नहीं गिरने दिया।

उसे आगे बढ़कर उठा लिया उमाकान्त सिंह ने जो मात्र 15 वर्ष के थे। वे पटना के बी.एन.कॉलेज के द्वितीय वर्ष के छात्र थे। पुलिस दल ने उन्हें भी गोली का निशाना बनाया, पर उन्होंने गोली लगने पर भी आखिरकार सचिवालय के गुम्बद पर तिरंगा फहरा ही दिया। इसके बाद वे शहीद हो गए। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद इस स्थान पर शहीद स्मारक का निर्माण हुआ। इसका शिलान्यास स्वतन्त्रता दिवस को बिहार के प्रथम राज्यपाल जयराम दौलत राय के हाथों हुआ। औपचारिक अनावरण देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 1956 में किया।

शहीद सात महान बिहारी सपूत

1. उमाकान्त प्रसाद सिंह- राम मोहन राय सेमीनरी स्कूल के 12 वीं कक्षा के छात्र थे। इनके पिता राजकुमार सिंह थे। वह सारण जिले के नरेन्द्रपुर ग्राम के निवासी थे।

2 रामानन्द सिंह- ये राम मोहन राय सेमीनरी स्कूल पटना के 11 वीं कक्षा के छात्र थे। इनका जन्म पटना जिले के ग्राम शहादत नगर में हुआ था। इनके पिता लक्ष्मण सिंह थे ।

3. सतीश प्रसाद झा-सतीश प्रसाद का जन्म भागलपुर जिले के खडहरा में हुआ था। इनके पिता जगदीश प्रसाद झा थे। वह पटना कालेजियत स्कूल के 11वीं कक्षा के छात्र थे।

4. जगपति कुमार- इस महान सपूत का जन्म गया जिले (वर्तमान में औरंगाबाद) के खराठी गांव में हुआ था।

5. देवीपद चौधरी- इस महान सपूत का जन्म सिलहर जिले के अन्तर्गत जमालपुर गांव में हुआ था। वे मीलर हाईस्कूल के 9वीं कक्षा के छात्र थे।

6. राजेन्द्र सिंह- इस महान सपूत का जन्म सारण जिले के बनवारी चक ग्राम में हुआ था। वह पटना हाईस्कूल के 11वीं के छात्र थे।

7. राय गोविन्द सिंह- इस महान सपूत का जन्म पटना जिले के दशरथ ग्राम में हुआ। वह पुनपुन हाईस्कूल में 11वीं के छात्र थे।

आजादी के दीवानों के सम्मान में बनी प्रतिमा

पटना के छात्रों ने अपने खून से जो इबारत लिखी, वह युगों तक युवाओं को प्रेरित करता रहेगा। स्वतंत्रता के बाद आजादी के इन सात दीवानों की याद में प्रतिमा बनाना तय किया गया। प्रतिमा स्थापित करने के लिए वही जगह चुनी गई, जहां वे शहीद हुए थे। बिहार के प्रथम राज्यपाल जयरामदास दौलतराम ने शिलान्यास किया।

प्रसिद्ध मूर्तिकार देवी प्रसाद राय चौधरी को मूर्ति बनाने का काम सौंपा गया। चौधरी का जन्म रंगपुर में, जो अब बांग्लादेश में है, हुआ था। उन्होंने इटली में सात शहीद मूर्ति तैयार की, जिसे लाकर यहां स्थापित किया गया। प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 1956 में मूर्ति का अनावरण किया। मूर्तिकार देवी प्रसाद को 1958 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

“ इस अभियान का नेतृत्व कर रहे थे देवीपद चौधरी। देवी पद चौधरी की उम्र 14 साल की थी। वे सिलहट (वर्तमान में बांग्लादेश) के जमालपुर गांव के रहने वाले थे। वे जब सचिवालय की ओर अपने छह साथियों के साथ बढ़ रहे थे तो पुलिस ने उन्हें रोकना चाहा पर वे रुकने वाले कहां थे। देवीपद तिरंगा थामे आगे बढ़ रहे थे कि पुलस ने उन्हें गोली मार दी।

उत्पादकता का बिहार बनाना है बिहार बढ़ेगा तभी देश बढ़ेगा

बिहार टॉप 1 से 5 में था और अभी भी है, भारत विश्व गुरु तभी बनेगा जब बिहार देश गुरु बनेगा: समीर महासेठ, उद्योग मंत्री, बिहार

बिहार के उद्योग मंत्री समीर महासेठ से उभरता बिहार समाचार संपादक की खास बातचीत

बिहार सरकार के तरफ से ये एक आधिकारिक दौरा था। अमेरिका जाने के बाद मैं सान फ्रांसिस्को, लॉस एंजेलिस गया और वहां रहने वाले बिहार के लोगो को बुलाया और उन्हें बिहार में निवेश करने के लिए प्रेरित भी किया। वहां रहने वाले लोगों में देश प्रेम है, बिहार प्रेम है, बस उनमें निवेश के लिए प्रेम जगाने की जरूरत पड़ेगी। लोगो के मन में ये जरूर है कि बिहार के लोग सबसे बुद्धिमान और मेहनती है। इसलिए हम कहना चाहते है कि मेरा अमेरिका का आधिकारिक दौरा सकारात्मक रहा और हमे उम्मीद है कि वहां रहने वाले लोग बिहार में निवेश जरूर करेंगे।

सवाल: जब आप उद्योग मंत्री बने तब कहा जा रहा था की अब बिहार में निवेशक नही आयेंगे?

जवाबः अगर कोई बिहार में उद्योग खोलना चाहते हैं तो हम उनका स्वागत करेंगे। उनके लिए जो व्यवस्था होगी राज्य सरकार करेगी। जैसे माहौल की बात बीजेपी के लोग बिहार को लेकर कर रहे हैं, वो ठीक नहीं है। उन्हे भी ये सोचना चाहिए कि अपने राज्य को लेकर ये कहना उचित नहीं है। बिहार के उद्योगपति जो बाहर हैं वो भी वापस आना चाहते हैं।

सवाल: एक साल के कार्यकाल में बिहार की औद्योगिक क्षेत्र में स्थिति क्या है?

जवाबः बिहार अब मजदूर से मालिक बनने की राह पर हैं। बिहारी रोजगार मांगने वाले नहीं बल्कि रोजगार देने वाला बनना चाहते हैं। खुद का उद्योग लगाकर उद्योगपति बनना चाहते हैं। ऐसे लोगों की हमें मदद करनी है। ऐसे लोग ही बिहार को उपभोक्ता राज्य से उत्पादक राज्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। बिहार में औद्योगिक क्रांति लाने के लिए छोटे-छोटे उद्योग स्थापित किए जाएंगे और टेक्सटाइल, खादी एवं लेदर उद्योग को बढ़ावा दिया जाएगा।

सवाल: मुख्यमंत्री उद्यमी योजना से बिहार के लोग लाभान्वित हो रहे हैं या नही?

जवाबः मुख्यमंत्री उद्यमी योजना से राज्य में गांव-पंचायत स्तर पर औद्योगिक क्रांति की शुरूआत हो चुकी है और इससे लोगों को रोजगार मिलने एवं आत्मनिर्भर बनने में सहायता मिल रही है।

बिहार को औद्योगिक रूप से विकसित करने के लिए मुख्यमंत्री उद्यमी योजना ऐसी योजना है जिससे बेरोजगारों का न केवल राज्य से पलायन रुकेगा बल्कि इससे राज्य में आर्थिक समृद्धि भी आएगी। मुख्यमंत्री उद्यमी योजना के तहत लगभग 29000 उद्यमियों को पंद्रह सौ करोड़ रुपए से अधिक की राशि वितरित की गई है। 10- 10 लाख रुपए की सहायता पाकर बिहार के युवा न सिर्फ अपने लिए रोजगार का इंतजाम कर रहे हैं बल्कि दर्जनों दूसरे लोगों को भी रोजगार दे रहे हैं। मुख्यमंत्री उद्यमी योजना के तहत हर जिले में 400 से 500 नए रोजगार का सृजन हो रहा है। बिहार के बाहर से युवा रोजगार छोड़कर यहां पर उद्योग लगा रहे हैं। बिहार में पिछले 4 महीनों में 1500 से अधिक नए उद्योग खुल चुके हैं। 14000 उद्योग लगाए जाने की प्रक्रिया में हैं। हर उद्योग में 5 से 10 लोगों को रोजगार मिला है। हम चाहते हैं कि बिहार के युवा बिहार में ही काम करें। बिहार में ही उद्योग लगाएं और अपने गांव समाज के दूसरे लोगों को भी रोजगार दें। उद्योग विभाग की हर योजना का लक्ष्य है कि ज्यादा से ज्यादा नए उद्योग स्थापित हों। बेरोजगारों को उद्योग-व्यवसाय से जुड़ने की जरूरत है और ऐसी महत्वपूर्ण योजना का लाभ उठाना चाहिए।

सवाल: बिहार ने कल कारखानों की संख्या बहुत हीं कम है इसके लिए क्या करेंगे आप?

जवाबः बिहार में कई कारखाने खुल चुके हैं और जल्द ही बिहार में कई उद्योग खुलेंगे। इथेनॉल और खाद प्रसंस्करण में कई कारखाने की शुरूआत की जा चुकी है और कई नए कारखानों का उद्घाटन किया जाएगा। मुख्यमंत्री उद्यमी योजना, बिहार स्टार्टअप नीति, बिहार टेक्सटाइल और लेदर नीति के माध्यम से उद्यमिता वातावरण के निर्माण के लिए हमारा प्रयास लगातार जारी है। स्टार्टअप को को-वर्किंग स्पेस देने की पहल शुरू की जा रही है। पटना, मुज्जफरपुर, भागलपुर और मधुबनी सहित सभी औद्योगिक क्षेत्रों में आधारभूत ढांचे को मजबूत बनाने के लिए के लिए और बिहार में औद्योगिक वातावरण के लिए लगातार काम चल रहा है। हमारी कोशिश है कि बिहार में निर्यात आधारित उद्योग अधिक लगे जिससे बिहार के लोगो को फायदा हो और जब ऐसा होगा तब निवेशक बिहार में उद्योग लगाने में संकोच नहीं करेंगे। हम उत्पादकता का बिहार बनाना चाहते है और उत्पादकता का बिहार बनायेंगे

सवाल: बिहार के बुद्धिमान और मेहनती युवा वर्ग भाषा की दीवार की वजह से बाहर जाने में रुचि कम रखते है, इसके लिए क्या करेंगे?

जवाबः भाषाओं की समस्या को दूर करने और आपसी सौहार्द बढ़ाने के लिए पटना आईआईटी में 17 अगस्त से जापानी भाषा की पढ़ाई शुर्भो जाएगी। यह पहली बार हो रहा है कि किसी तकनीकी शिक्षण संस्थान में विदेशी भाषा की पढ़ाई हो रही है और यह बिहार और जापान के बीच इनोवेशन, तकनीक, व्यापार-कारोबार, कृषि उद्यम, शिक्षा के बीच की दूरी को कम करेगा। हम चाहते है की बिहार के लोग जापानी भाषा को सीखे जिससे उन्हें सीधे जापान में रोजगार मिले।

सवाल: बिहार में फूड प्रोसेसिंग में लोग निवेश कर रहें हैं या नही?

जवाबः बिहार के मुज्जफरपुर के मोतीपुर स्थित मेगा फूड पार्क में यूनिट लगाने को लेकर दूसरे राज्य के लोगो में रुझान तेजी से बढ़ रहा है। फूड प्रोसेसिंग से जुड़े अब तक कई निवेशकों को जमीन आवंटन कर दिया गया है और जल्द ही और निवेशकों को जमीन आवंटित किया जायेगा। मेगा फोड पार्क में सभी यूनिट फायर प्रोसेसिंग से जुड़ी है। वही बियाडा की ओर से फूड पार्क में निवेश को लेकर प्रमोट किया जा रहा है। इस साल मोटे अनाज का साल चल रहा है लेकिन अगले साल मखाना का साल चलेगा और बिहार मिथिलांचल पूरे विश्व को मखाना का सप्लाई करेगा और मखाना को बहुत बड़ा उद्योग भी बना देगा।

बिहार बढ़ेगा तभी देश बढ़ेगा
बिहार टॉप 1 से 5 में था और अभी भी है।
भारत विश्व गुरु तभी बनेगा जब बिहार देश गुरु बनेगा।

मार्कण्डेय महादेव: दर्शन मात्र से टल जाता है अकाल मृत्यु का खतरा

जी हां, ये देवों के देव महादेव का वो मंदिर है जहां भगवान से पहले भक्त का नाम आता है। कहते है भक्त मार्कण्डेय के तप के आगे यमराज को भी झुकना पड़ा। नहीं कर सके भक्त के प्राण का हरण, क्योंकि भक्त के साथ थे महादेव। कहते है महामृत्युंजय मंत्र की उत्पत्ति भी यही से हुई है। मान्यता है कि मार्कण्डेय महादेव मंदिर वह दिव्य व मनोरम स्थल है जहां भक्तों के दर्शन मात्र से ही दूर हो जाते है सभी कष्ट और पाप। गंगा-गोमती संगम में स्नान कर महादेव की परिक्रमा व विधि-विधान से पूजन-हवन कर लेने मात्र से भक्तों की हो जाती है हर प्रकार के सुखों की अनुभूति व पूरी होती है मनचाहा मुरादें। शत्रु तो परास्त होते ही है, मिलता है संतान प्राप्ति का वरदान। मान्यता यह भी है कि मार्कंडेय महादेव की पूजा से व्यक्ति की अकाल मृत्यु का खतरा टल जाता है और शिव की कृपा से उसे लंबी उम्र का वरदान मिलता है. इतना ही नहीं यहां प्रेमी-प्रेमिकाएं सात फेरे लेकर प्राप्त करते है सात जन्मों तक साथ-साथ रहने का फल। विवाह के उपरांत मंदिर के पुजारी देते है विवाह का भी सर्टिफिकेट, जिसे डीएम भी नहीं करते इंकार। अज्ञातवास के दौरान पांडवों ने न सिर्फ अपने कुछ माह यहां बिताएं थे, बल्कि अग्निष्टमों यज्ञ कर प्राप्त किया था विजय का वरदान

सुरेश गांधी

फिरहाल, भगवान भोलेनाथ एकमात्र ऐसे देवता है, जिनके एक-दो नहीं, हजारों-लाखों रुप है। धरती पर बसने वाले हर प्राणियों की आस्था के केन्द्र होने के साथ ही किसी न किसी रुप में हर गली-मुहल्लों में विराजमान है भगवान भोलेनाथ। उन्हीं में से एक रुप है मारकण्डेय महादेव का, जिन तक भक्त पहुंचाते है उनतक अपनी फरियाद। कहते है यहां से किसी भी भक्त को अपने दरबार से खाली हाथ नहीं भेजते भगवान भोलेनाथ। यहां आने से हर बिगड़े काम तो

> “ धरती पर बसने वाले हर प्राणियों की आस्था के केन्द्र होने के साथ ही किसी न किसी रुप में हर गली-मुहल्लों में विराजमान है भगवान भोलेनाथ। उन्हीं में से एक रुप है मारकण्डेय महादेव का, जिन तक भक्त पहुंचाते है उनतक अपनी फरियाद। कहते है यहां से किसी भी भक्त को अपने दरबार से खाली हाथ नहीं भेजते भगवान भोलेनाथ।

बन ही जाते हैं, सफलता की राह में आ रही बाधाएं भी पल भर में हो जाती है दूर। मुश्किलों को हरने वाले मारकंडे महादेव के शरण में आने वाला राजा हो या रंक सभी पर बरसती है एकसमान कृपा और उनकी कृपा से हो जाते है भक्तों के असंभव कार्य भी पूरे। कहा जाता है अज्ञातवास के दौरान पांडवों ने न सिर्फ अपने कुछ माह बिताएं थे, बल्कि प्राप्त किया था विजय का आशीर्वाद। कहते है इसी स्थान पर राजा दशरथ को पुत्र प्राप्ति के लिए श्रृंगी ऋषि ने पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था. चमत्कार के इन्हीं ढेरों कहानियां समेटे मारकंडे महादेव मंदिर धर्म की नगरी वाराणसी (काशी) से लगभग 30 किमी दूर वाराणसी-गाजीपुर मार्ग के चैबेपुर के कैथी नामक गांव में स्थित है। जहां पूर्वांचल समेत यूपी ही नहीं देश के कोने-कोने से श्रद्धालुओं का दर्शन को तो आना होता ही है, सावन में विशाल मेला लगता है। लाखों की संख्या में कांवड़िया काशी एवं गंगा-गोमती संगम से जल लाकर करते है महादेव पर जलाभिषेक। दोनों पक्षों के त्रयोदशी के साथ ही कार्तिक त्रयोदशी के मौके पर विशेष श्रृंगार का भी आयोजन होता है।

पुराणों में भी मारकंडे महादेव कैथी धाम की महत्ता द्वादश ज्योतिर्लिंग के बराबर बताई गयी है। मंदिर के पुजारी सुदर्शन महराज ने बताया कि मारकंडे महादेव का वर्णन मारकंडेय पुराण समेत कई धार्मिक ग्रंथों में भी देखने को मिलता हैं। मारकंडेस्य राजेन्द्रतीर्थमासाध्य दुलर्भम् गोमती गंगयोस्यचैव संगमेव लोक विश्वमयते, अग्निष्टमोवाचैव समुद्रे यानी महाभारत के पवपर्वतें के 84 अध्याय में मारकंडे जी का उल्लेख है, जिसमें नारद जी युधिष्ठिर को समझा रहे है कि यह स्थान अत्यंत दुलर्भ क्षेत्र है और गंगा-गामती के संगम पर स्थित है। ऐसा संगमस्थल कहीं नहीं है। जो लोग संगम में स्थान कर मारकंडे महादेव को एक लोटा जल चढ़ाते है उन्हें अंतयेष्टि यज्ञ का फल प्राप्त हो जाता है। भगवान नारद के कहने पर ही पांडवों ने यहां गंगा-गोमती संगम में स्नान कर महादेव को जलाभिषेक किया और अग्निष्टोम यज्ञ कर मारकंडे महादेव से प्राप्त किया था जन्म जन्मांतर यशस्वी होने का वरदान। इसके बाद पांचों पांडवों को सिद्धि मिली। भक्त मारकंडे को अमरत्व प्राप्त होने की व्याख्या करते हुए सुदर्शन महराज ने बताया कि अश्वस्थामा बर्लिव्यासु हनुमानश्च विभिषणम् कृपा परशुरामश्च सप्तैतः चीरजीवनम्, सप्तैत ईश्वरनृत्यम् मारकंडे मथाष्टतम्। इन आठों ऋषियों में मारकंडे को भी अमरत्व का आशीर्वाद प्राप्त है। इसीलिए भगवान महादेव के नाम के आगे भक्त मारकंडे का नाम जुड़ा है और भगवान शंकर के नाम से इस तीर्थस्थल का नाम मारकंडे महादेव पड़ा है। इस स्थान को मारकंडेश्वर भी कहा जाता है।

यहीं हुई थी महामृत्यंजय मंत्र की उत्पत्ति

कहते है यही वह स्थान है जहां मृत्यु पर विजय पाने के उपरांत भक्त मार्कण्डेय ने महामृत्युंजय मंत्र - ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उवार्रुकमिव बन्धनान्मृ त्योर्मुक्षीय मामृतात ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ मंत्र की रचना की थी। इसका उल्लेख हरवंश पुराण, पद्यपुराण, मारकंडेय पुराण, रामचरीत मानस और महाभारत के वन पर्व में भी किया गया है। मंदिर प्रांगण में मुख्य मंदिर के चारों ओर विभिन्न देवी देवताओं के मंदिरों का समूह है। मुख्य मंदिर के गर्भगृह में पहुंचने पर अंतर्ज्योति और ध्यान के प्रती मृत्यु, विध्वंस और विनाश के देवता कहे जाने वाले नीलकंठ भगवान शिव के दर्जन होते हैं। मंदिर में प्रतिष्ठापित शिवलिंग कब प्रकाश में आया कुछ ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। लेकिन, इतना जरूर कहा जाता है कि इसकी स्थापना मारकंडेय ऋषि ने युगों पूर्व की थी। कैथीवासियों की माने तो वर्षों पूर्व यह शिवलिंग इसी गांव के जमींदार के खेत में हल चलाते समय मिला था। स्वप्न में मिले आदेश पर इस शिवलिंग को उसी स्थान पर प्रतिष्ठित करवा दिया गया। शिवलिंग पर बने निशान को कुछ लोग हल का फाल लगा मानते हैं तो कुछ इसे यमराज द्वरा मारकंडेय के गले में फेंगे गए पाश की निशानी। कालांतर में होलकर वंश के महाराजा बड़ोदरा नरेश ने इस मंदिर का जिर्णोद्धार काशी नरेश के सहयोग से करवाया था। इस मंदिर का ट्रस्टी और मुख्य अध्यक्ष वाराणसी का जिलाधिकारी होता है। गंगा और गोमती के किनारे वाले इस मंदिर के शिखर पर फहरा रही धर्म ध्वजा सहसा यह अहसास कराती है कि देखो इस युग में भी हमारी मान्यता कम नहीं हुई है। कहा जाता है कि यह स्थान 1884 के आसपास अस्तित्व में आया है। जो लोग इस स्थान पर महामृत्युंजय का पाठ व नौ दिन तक जमीन पर सोकर भागवत पुराण का पाठ कर लें तो उसे निश्चय ही पुत्र रत्न का प्राप्ति होती है।

जब महाकाल के आगे काल को लौटना पड़ा

कथानुसार, भृगुपुत्र मृकण्डु नैमिसारण में पत्नी अरुंधति के साथ तपस्या करते

> कहते है यही वह स्थान है जहां मृत्यु पर विजय पाने के उपरांत भक्त मार्कण्डेय ने महामृत्युंजय मंत्र - ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उवार्रुकमिव बन्धनान्मृ त्योर्मुक्षीय मामृतात ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ मंत्र की रचना की थी। इसका उल्लेख हरवंश पुराण, पद्यपुराण, मारकंडेय पुराण, रामचरीत मानस और महाभारत के वन पर्व में भी किया गया है।

थे। उनके भाग्य में संतान सुख नहीं था। भगवान शिव की कृपा से लंबे समय बाद उन्हें सर्वगुणसंपन्न एक पुत्र पैदा हुआ। लेकिन भगवान शिव ने साथ में यह भी कहा कि उनका पुत्र सिर्फ 12 साल तक ही जीवित रहेगा. इसके बाद उनके यहां मार्कंडेय नाम से संतान हुई. कुछ साल बीतने के बाद बालक पांच वर्ष का हो गया। मारकंडेय नाम का यह बालक एक दिन कुटिया के बाहर खेल रहा था, उसी समय किसी महामुनि की दृष्टि उस बच्चे पर पड़ी। उन्होंने उस बच्चे के मुखमंडल से निकलती हुई आभा को काफी देर तक देखते रहे। सहसा मृकण्डु ने अपने बालक की आयु और गुण के बारे में ऋषि से पुछ लिया कि मेरे पुत्र की आयु कितनी है। उस ज्ञानी ने कहा मुनिवर, विधाता ने तुम्हारे पुत्र की जो आयु निश्चित की है उसमें अब महज छह माह शेष बचे हैं। ज्ञानी पुरुष की बात सुन कर उन्होंने अपने पुत्र का यज्ञोपवित संस्कार कर दिया और कहा- बेटा, तुम जिस किसी को भी देखो उसका सतवन प्रणाम करो। पिता की आज्ञा मान पुत्र मारकंडेय ने ऐसा ही करना शुरू कर दिया।

जीवन के मात्र पांच दिन ही शेष बचे थे धीरे-धीरे पांच माह 25 दिन बीत गए। इसी बीच एक दिन अचानक सप्तऋषि उसी रास्ते पधारे। स्वभाव के अनुसार बालक मारकंडेय ने उन्हें भी प्रणाम किया। सप्तऋषियों ने उस बालक को आयुष्मान भव पुत्र कह कर दीघार्यु होने का आशीर्वाद दे दिया। जब उन ऋषियों ने उस बालक के आयु के बारे में विचार किया तो उसके जीवन के मात्र पांच दिन ही शेष बचे थे। तत्काल ही सप्तऋषियों ने उसे साथ ले परमपिता ब्रह्मा के पास गए। बच्चे ने उनका भी नमन किया। ब्रह्मा ने भी उसे चीरआयु होने का आशीर्वाद दे दिया। उनका यह आशीर्वाद सुनकर उन ऋषियों को बड़ी प्रसन्नता हुई। जब ब्रह्मा ने उन ऋषियों के आने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि यह बच्चा मृकण्डु का पुत्र मारकंडेय है, जिसके जीवन के कुछ ही दिन शेष रह गए हैं। हमलोग तीर्थयात्रा के लिए उधर से निकल रहे थे कि सबको प्रणाम करने के स्वभाव के कारण उसने हम लोगों को भी प्रणाम किया। इसपर हम लोगों ने उसे लंबी आयु का आशीर्वाद दे दिया। अतः पितामह हमलोग आपके साथ वचन के झूठे क्यों बनें। इसपर ब्रह्मा ने कहा कि यह आयु में मेरे समान होगा।

यह बालक क्लप के आदि और अंत में मुनियों से घिरा हुआ हमेशा जीवित रहेगा, लेकिन इसके लिए इसे जीवन के शेष बचे दिनों में महादेव की तपस्या गंगा और गोमती के तट पर कर करनी होगी। ऐसा उल्लेख मारकंडेय पुराण में मिलता है कि वे अपने पिता की आज्ञा ले काशी के निकट गंगा-आदिगंगा (गोमती) के संगम पर स्थित कैंथ के जंगलों में मिट्टी का पारद शिलिंग बनाकर तपस्या करने लगे। नियम समय पर यमदूत आए, लेकिन तपस्या में लीन उस बालक के तेज के आगे वे उसके पास न जा पाए। अतः उन्हें लौटना पड़ा। फिर यमराज स्वयं उसके प्राण लेने आए। इनसबसे बेखबर शिव आराधना में तंलीन बालक -रत्नसान सरासन, रचतादिसिंग निकेतनम् ...16 पदों का श्लोक पढ़ रहा था। आत्मविभोर हो यमराज उस बालक को अपलक देखते रहे। जैसे ही श्लोक समाप्त हुआ, उन्होंने बालक के प्राण लेने के लिए उसके गले में पाश फेंका और खिंचने लगे। वेलपत्रों से पूजित शिवलिंग पकड़ कर बालक प्राण रक्षा हेतु देवाधिदेव महादेव को कातर स्वर में पुकारने लगा।

बालक की करुण पुकार सुनकर भष्मभूत महादेव वैसे ही दौड़े आए जैसे बालक अपनी मां को न पाकर व्याकुल हो उसे पुकारता है। और उसकी व्याकुलता को देख पास आ जाती है और उसे गले लगा कर पुचकारती है। पीठ थपथपा कर सीने से लगा लेती है। नीलकंठ ठीक उसी तरह यमराज पर क्रोधित हो अस्त्र उठा लिए जिस तरह महाभारत युद्ध में अर्जुन की रक्षा के लिए श्रीकृष्ण ने सुदर्शनचक्र उठा कर अपनी प्रतिज्ञा भंग कर ली थी। भगवान शिव के क्रोध से डरे यमराज ने कहा- हे महाकाल जो इस घरती पर जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है। फिर यह बाल जिसकी आयु पुरी हो चुकी है भला वह जीवित कैसे रह सकता है। इसपर उन्होंने कहा कि इसका जन्म जब विधाता के विधान में है ही नहीं तो फिर मृत्यु कैसी।

आगे चलकर मारकंडेय ने पुष्कर में आपना आश्रम बनाया। इसी पुष्कर में पिता के श्राद्ध के लिए त्रेतायुग में भगवान श्री राम भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता सहित पधारे थे। युगों बाद भी कायम रही आस्था काल के अंतराल में सबकुछ बदल गया लेकिन नहीं बदली तो आस्था, मान्यता। जो इस मंदिर के प्रति लोगों में सदियों से चली आ रही है। इसी मान्यता के चलते आज भी लोग दूर-दूर से आकर मृत्यु पर विजय दिलाने वाले महामृत्युंजय भगवान मारकंडेय महादेव के आगे अपनी झोली फैलते हैं।

गंगा-गोमती संगम

गंगा-गोमती संगम के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए पुजारी सुदर्शन महराज ने बताया कि इंद्र भगवान को गौतम ऋषि के श्राप से मुक्ति दिलाने के लिए गोमती नदी का जन्म हुआ। गोमती का उद्गम स्थल पीलीभीत के माधौटांडा कसबे के पास (गोमत ताल) फुलहर झील है। पीलीभीत से चलकर आदिगंगा के नाम से मशहूर गोमती शाहजहांपुर, लखीमपुर, हरदोई, सीतापुर, मिश्रिख, लखनऊ, बाराबंकी, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, जौनपुर, गाजीपुर, वाराणसी के बीच तकरीबन 1000 किमी का सफर तय कर काशी के कैथी स्थित मारकंडेय महादेव के पास मां गंगा की गोद में विश्राम लेती हैं। मान्यता है कि इंद्र ने एक बार गौतम ऋषि का रूप धर कर उनकी पत्नी अहिल्या से छल किया था। कुपित गौतम ऋषि ने इंद्र और अहिल्या कौ श्राप दे दिया था। काफी अनुनय-विनय करने पर गौतम ऋषि ने श्राप मुक्ति के लिए इंद्र को पतित पावनी गोमती नदी के तटों पर 1000 स्थानों पर शिवलिंग स्थापित कर तपस्या करने को कहा। इंद्र ने ऐसा करते हुए गंगा-गोमती संगम में आकर तप किया, तब कहीं जाकर उनको ऋषि के श्राप से मुक्ति मिल सकी।

विवाहितों को मिलता है सर्टिफिकेट

यहां हर दिन दो-चार सादियां यहां के पुरोहितों द्वारा संपंन कराया जाता है। विवाह के बाद मंदिर के पुजारी द्वारा सर्टिफिकेट भी दिया जाता है, जिसे लोग कोर्ट मैरिज में इस्तेमाल करते है। मारकण्डेय महादेव मंदिर के शिवलिंग पर जो बेल पत्र चढ़ाया जाता है, उस पर चन्दन से श्रीराम का नाम लिखा जाता है जो कि मंदिर के द्वार पर पंडितों द्वारा प्राप्त होता है।

“ यह बालक क्लप के आदि और अंत में मुनियों से घिरा हुआ हमेशा जीवित रहेगा, लेकिन इसके लिए इसे जीवन के शेष बचे दिनों में महादेव की तपस्या गंगा और गोमती के तट पर कर करनी होगी। ऐसा उल्लेख मारकंडेय पुराण में मिलता है कि वे अपने पिता की आज्ञा ले काशी के निकट गंगा-आदिगंगा (गोमती) के संगम पर स्थित कैंथ के जंगलों में मिट्टी का पारद शिलिंग बनाकर तपस्या करने लगे।

राजगीर में मलमास मेला का आगाज

फलाहारी बाबा ने किया ध्वजारोहण

रौशनी से जगमगाया राजगीर

कुमुद रंजन सिंह

मलमास मेला की शुरूआत ध्वजारोहण के साथ ही शुरू हो गई है। 18 जुलाई से 16 अगस्त तक चलने वाले पुरुषोत्तम मास मेला की शुरूआत हो गई है। करपात्री अग्निहोत्री परमहंस स्वामी चिदात्मन जी महाराज फलाहारी बाबा द्वारा ध्वजारोहण का कार्य किया गया। इसके पूर्व ब्रह्मकुंड परिसर स्तिथ सप्तधारा में पूरे विधि विधान से संत महात्माओं एवं भक्तजनों के द्वारा पूजा अर्चना की गई। एवं 33 कोटि देवी देवताओं का आह्वान किया गया।

तीर्थ पूजन कार्यक्रम मंगलवार की सुबह ही शुरू हो गई थी। जो करीब 3 घंटे तक चली, इसके बाद ध्वजारोहण का कार्यक्रम हुआ और मौके पर आए श्रद्धालुओं के बीच प्रसाद का वितरण किया गया। इस मौके पर पंडा समिति के

> “ मलमास मेला की शुरूआत ध्वजारोहण के साथ ही शुरू हो गई है। 18 जुलाई से 16 अगस्त तक चलने वाले पुरुषोत्तम मास मेला की शुरूआत हो गई है। करपात्री अग्निहोत्री परमहंस स्वामी चिदात्मन जी महाराज फलाहारी बाबा द्वारा ध्वजारोहण का कार्य किया गया। इसके पूर्व ब्रह्मकुंड परिसर स्तिथ सप्तधारा में पूरे विधि विधान से संत महात्माओं एवं भक्तजनों के द्वारा पूजा अर्चना की गई।

अध्यक्ष नीरज उपाध्याय, सचिव विकास उपाध्याय, कोषाध्यक्ष ओमकार नाथ उपाध्याय समेत पंडा समिति के अन्य सदस्य मौजूद रहे।

मेला में विधि व्यवस्था को चुस्त दुरुस्त बनाने के लिए चप्पे-चप्पे पर दण्डाधिकारी और पुलिस पदाधिकारी के साथ पुलिस बल की प्रतिनियुक्ति की गई है। चार नियंत्रण कक्ष सहित केन्द्रीय नियंत्रण कक्ष काम करना आरंभ कर दिया है। मेला क्षेत्र में 25 वॉकी टॉकी और 10 जगहों पर वायरलेस सिस्टम लगाया गया है।

आज से मलमास मेले की शुरूआत

6 हजार श्रद्धालुओं के रहने की व्यवस्था, खाने के लिए सस्ती रोटी के स्टाल भी रहेंगे उपलब्ध। राजकीय राजगीर मलमास मेला 18 जुलाई से शुरू हो गया। इसे लेकर बिहार सरकार काफी गंभीर है। मेले के सफल आयोजन को लेकर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार स्वयं इसकी दो बार निरीक्षण कर चुके हैं। यही वजह है कि इस बार मेला कई मायनों में खास होगा। बरसात के मौसम को देखते हुए राजगीर में टेंट सिटी का निर्माण कराया गया है, जहां एक दिन में 6000 से ज्यादा श्रद्धालु रह सकते हैं। इसके साथ ही शौचालय, पेयजल आदि की समुचित व्यवस्था की गई है।

राजगीर के ऐतिहासिक कुंड और धाराओं को आकर्षक रूप दिया गया है। प्रत्येक 3 वर्ष के अंतराल पर लगने वाले मलमास मेला में 1 माह तक सनातन धर्म के 33 कोटी देवी-देवता राजगीर में ही प्रवास करते हैं। ब्रह्म कुंड परिसर, सरस्वती नदी, वैतरणी घाट, सूर्यकुंड, भरतकुंड, दुखरनी कुंड, शालिग्राम कुंड समेत सभी 22 कुंडों का जीर्णोद्धार और सौंदर्यीकरण किया गया है।

10 जगहों पर रहने की है व्यवस्था

स्टेट गेस्ट हाउस, ब्रह्म कुंड, वैतरणी घाट, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन,धुनिवर, झुनुकियां बाबा,मेला थाना एवं सूर्यकुंड के पास रहने के लिए करीब 6 हजार से अधिक श्रद्धालुओं के लिए व्यवस्था की गई है। टेंट हाउस एवं यात्री शेड का निर्माण कराया गया है। सबसे खास बात यह है कि प्रत्येक आवासन वाले जगह पर सहायता केंद्र, चिकित्सक कक्ष और पुलिस सहायता केंद्र भी बनाया गया है। ताकि आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की कोई परेशानी हो तो उन्हें इधर-उधर भटकना न पड़े।

100 चेंजिंग रूम का भी निर्माण किया गया

इसके अलावा महिलाओं की सुरक्षा एवं प्राइवेसी को ध्यान में रखते हुए 100 चेंजिंग रूम का भी निर्माण किया गया है। साथ ही 734 अस्थाई शौचालय बनाए गए हैं और 100 से ज्यादा अस्थाई शौचालय का निर्माण किया गया है। आम लोगों से लेकर खास लोगों तक का ख्याल मलमास मेले में रखा गया। इसलिए वीवीआईपी लोगों के लिए राजगीर के स्टेट गेस्ट हाउस में टेंट सिटी का निर्माण कराया गया है। जहां 25 वातानुकूलित कमरे बनाए गए हैं। ये सारी सुविधाएं श्रद्धालुओं को निशुल्क उपलब्ध होंगे। जबकि राजगीर में 100 से अधिक छोटे-बड़े होटल मौजूद हैं, जहां 500 से लेकर 5000 तक के कमरे उपलब्ध हैं, जहां भी श्रद्धालु आकर रह सकते हैं।

275 सीसीटीवी से रखी जाएगी नजर

मलमास मेले पर नजर बनाए रखने को लेकर 275 सीसीटीवी कैमरा लगाया गया है। श्रद्धालुओं को सुरक्षा सुनिश्चित कराने के लिए 48 अस्थाई पुलिस थाना एवं 19 वॉच टावर बनाया गए हैं। इनके माध्यम से संपूर्ण मलमास मेला में नजर रखी जाएगी। इसके अलावा संपूर्ण मेला क्षेत्र को विभिन्न सेक्टर/जोन में बांटकर 534 दंडाअधिकारियों की भी प्रतिनियुक्ति की गई।

सस्ती रोटी की खुली दुकान

आने वाले श्रद्धालुओं को सस्ते दर पर खाना उपलब्ध कराने के लिए 15 सस्ती रोटी के स्टाल लगाए गए हैं। जहां 30 रुपए से लेकर 40 रुपए तक सादा भोजन उपलब्ध रहेगा। जबकि राजगीर में स्थित होटलों में सादे खाने की कीमत 70 रुपए से लेकर 100 रुपए तक के करीब है। वहीं जिला प्रशासन के द्वारा संपूर्ण मेला क्षेत्र में खाद सामग्री/भोजन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए खाद निरीक्षकों की टीम भी लगाई गई है। जो घूम घूम कर मेला क्षेत्र में लगाए गए। खाने-पीने की सामग्री की गुणवत्ता की जांच करेंगे।

पीने के लिए मिलेगा गंगाजल

श्रद्धालुओं को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के लिए संपूर्ण मलमास मेला क्षेत्र में 20 पेयजल स्टॉल बनाए गए हैं, 100 स्टैंड पोस्ट लगाया गए हैं, 25 नए चापाकल भी लगाई गई है। वहीं 5 स्थलों पर शुद्ध गंगाजल की व्यवस्था की गई है। पानी की गुणवत्ता जांच के लिए अभियंताओं की टीम भी लगाई गई है। जो प्रतिदिन पेयजल की गुणवत्ता की जांच करेंगे।

कैसे पहुंचे मलमास मेला

मलमास मेला में आने के लिए श्रद्धालु बस,ट्रेन, निजी वाहन या किराए के वाहन से राजगीर पहुंच सकते हैं। पटना से सीधे बिहार राज्य परिवहन की बस राजगीर के लिए खुलती है। इसके अलावा प्राइवेट बसें पटना से बिहार शरीफ तक आती है, जहाँ से राजगीर के लिए लोकल सवारियों का सहारा ले सकते हैं। इसके अलावा कई दिनों का परिचालन पटना से राजगीर के बीच होती है। पैसेंजर, इंटरसिटी एवं एक्सप्रेस ट्रेन पकड़ कर राजगीर पहुंच सकते हैं। बस का किराया जहाँ 125 रुपए से 150 के बीच है तो वहीं ट्रेन का किराया 50 रुपये है।

> “ बाणासुर की एक पुत्री उषा थी। उषा से विवाह के लिए कई राजा आये किन्तु बाणासुर सब को अपमानित कर भगा देता था। एक दिन उषा ने स्वप्न में एक सुन्दर राजकुमार देखा और मन-ही-मन उस से प्रेम करने लगी। यह बात सखी चित्रलेखा को बतायी। चित्रलेखा मायावी थी जो सुन्दर कलाकृति बनाती थी। उस ने माया से उषा की आँखों में झाँका और स्वप्न-दृश्यों को देखकर उस राजकुमार का चित्र बना दिया।

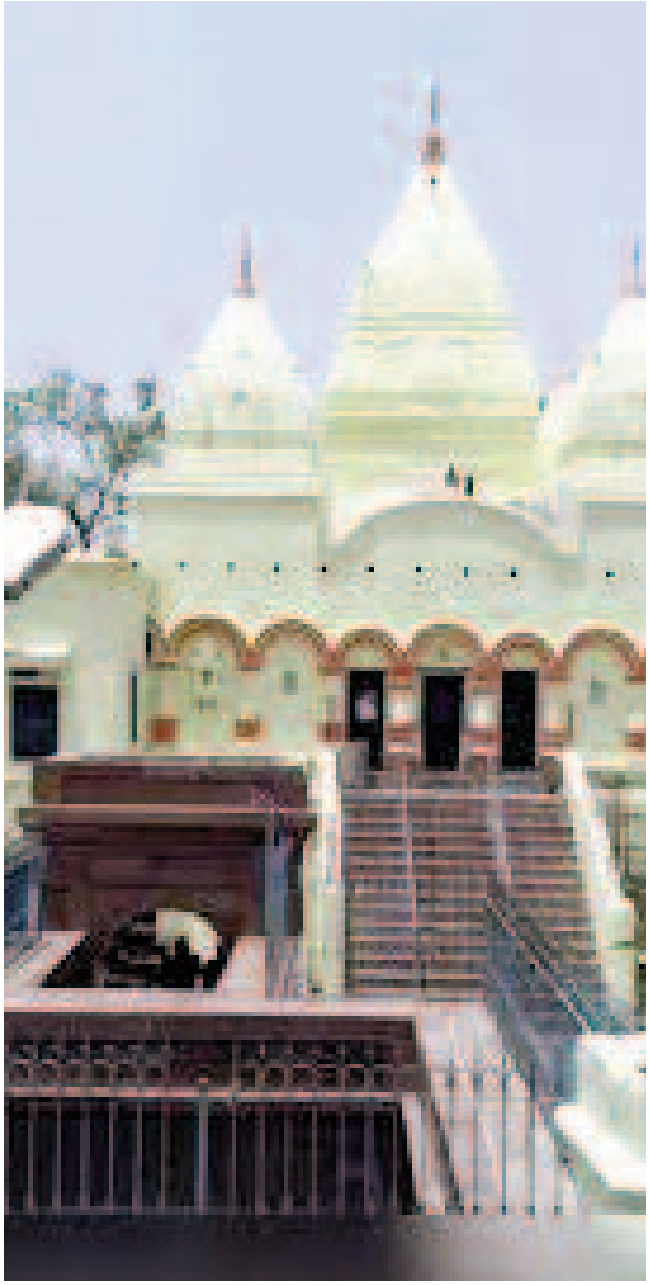

मलमास मेला डॉट इन पर ले सकते हैं जानकारी

श्रद्धालुओं के ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन के लिए पोर्टल की व्यवस्था की गई है। डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट मलमास मेला डॉट इन पर जानकारी ले सकते हैं। इसके जरिए लोग टेंट सिटी की बुकिंग करा सकेंगे। साथ ही सर्किट हाउस की बुकिंग हो सकेगी। सर्विस पैनल में जाकर पुलिसिंग एंड ट्रांसपोर्ट एंड ट्रेफिक हेल्थ एंड मेडिकल आर्ट्स एंड कल्चर की जानकारियां हासिल कर सकेंगे। इसके अलावा मेला के लिए हेल्पलाइन नंबर जारी किया गया है। इसका नंबर 703 26 1112 है।

“ सरकार द्वारा दस्तावेजों को डिजिटल करने के तहत सन 2015 में इसे आनलाइन किया गया। जबकि इसके शोध और प्रकाशन के लिए उस समय 6000 रुपये सरकार की ओर से प्रति गजेटियर रकम उपलब्ध कराई गई थी। वाराणसी गजेटियर में लगभग 20 अलग अलग विषय शामिल हैं। काशी को आनंदवन एंव वाराणसी नाम से भी जाना जाता है। इसकी महिमा का आख्यान स्वयं भगवान विश्वनाथ ने एक बार भगवती पार्वती जी से किया था।

डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल का सपना था 'हिन्दू राष्ट्र'

श्रद्धेय डॉ काशी प्रसाद जायसवाल जी विलक्षण, प्रतिभायुक्त, विश्व प्रसिद्ध साहित्यकार, इतिहासकार, कानूनविद्, मुद्राशास्त्री, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, पुरातत्व के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान, राष्ट्र धरोहर, प्राचीन लिपि मर्मज्ञ, क्रांतिकारी व बहुभाषी विद्वान थे। यही वजह है कि कोहिनूर के हीरे की तरह चमकने वाले डा. काशी प्रसाद जायसवाल भारतीय इतिहास के ज्योतिर्धर थे। भारत के प्रख्यात इतिहासकारों मे उनकी गणना होती है। उन्होंने इतिहास लेखन के माध्यम से सामाजिक जीवन में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। उन्होंने हिन्दू पालिसी, इम्पीरियल हिस्ट्री ऑफ इंडिया, अंधकार युगीन भारतीय इतिहास, नेपाल का विवरणात्मक इतिहास आदि अनेक विश्व विख्यात ग्रन्थों की रचना की। अचार्य रामचंद्र शुक्ल के समकालीन रहे काशीप्रसाद जायसवाल को 1909 में चीनी भाषा सीखने के लिए आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से छात्रवृत्ति भी मिली। उनका पूरा जीवन मानवता के लिए समर्पित था। देश व साहित्य के उत्थान के लिए उन्होंने जो किया, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनकी निगाह में राष्ट्र से बढ़कर कुछ नहीं था। उनके दृष्टिकोण में असली भारतीय सांस्कृतिक रूप हिन्दुत्व ही था। भारत की सभी खूबियां देशी मूल की थी। इस तरह की ऐतिहासिक व्याख्या जिसे हिन्दू राष्ट्रवाद से प्रेरित कहना ही सबसे उपयुक्त होगा। उनके ऐतिहासिक लेखन में हिन्दुत्व का प्रभावशाली धारा देखने को मिलता है। उन्होंने कभी सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। उन्होंने देश का नाम विश्व पटल पर रोशन किया। डॉ. काशी जायसवाल जैसी विभूति देश को समय समय पर प्राप्त होती रहे, इसके लिए जरुरी है कि हम उनके विचारों व सिद्धांतों से नयी पीढ़ी को आत्मसात कराते रहे

सुरेश गांधी

काशी प्रसाद कई भाषाओं के जानकार थे। वह संस्कृत, हिंदी, इंग्लिश, चीनी, फ्रेंच, जर्मन और बांग्ला भाषा पर पूरी पकड़ रखते थे। लेकिन वे हिंदी और अंग्रेजी में ही लिखते थे। स्वर्गीय राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद के सहयोग से उन्होंने इतिहास परिषद् की स्थापना की। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना से पहले ही जायसवाल प्राचीन भारत की हिंदूवादी व्याख्या कर रहे थे। उनकी बहुचर्चित हिन्दू पॉलिटी राष्ट्रवादियों के आन्दोलन के लिए गीता समझी जाती थी। उनकी विद्वता से प्रभावित होकर अंग्रेजी हुकूमत के समय ही पटना विश्वविद्यालय ने 1936 में उन्हें पीएचडी की मानक उपाधि प्रदान की थी।

कहते है भारतीय इतिहास में 1905 से आगे का काल उग्रपंथी राजनीति का काल था। बंगाल और महाराष्ट्र में क्रांतिकारी संस्थाओं का जाल बिछा हुआ था। इस आन्दोलन पर हिन्दू पुनरुत्थानवाद का रंग चढ़ा हुआ था। उसी दौरान बंगाल की सरकार ने उन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर विभाग में अपने पद

> "स्वर्गीय राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद के सहयोग से उन्होंने इतिहास परिषद् की स्थापना की। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना से पहले ही जायसवाल प्राचीन भारत की हिंदूवादी व्याख्या कर रहे थे। उनकी बहुचर्चित हिन्दू पॉलिटी राष्ट्रवादियों के आन्दोलन के लिए गीता समझी जाती थी। उनकी विद्वता से प्रभावित होकर अंग्रेजी हुकूमत के समय ही पटना विश्वविद्यालय ने 1936 में उन्हें पीएचडी की मानक उपाधि प्रदान की थी।

खास यह है कि जब ब्रतानियां हुकूमत के आगे किसी की जुबान खोलने की साहस नहीं था, तब लंदन के काफी हाउस में विनायक दामोदर सावरकर के साथ डॉ काशी प्रसाद जायसवाल भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने का ताना-बाना बुन रहे थे। उनका मानना था जातियों में बटे हिन्दुओं को एकजुट करके ही ब्रतानियां हुकूमत को मात दी जा सकती है। क्योंकि हिन्दुत्व को एक सजातीय, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक पहचान है। आसिन्धुसिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका:। पितृभूपुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरितिस्मृत:।। डॉ काशी प्रसाद का हिन्दुत्व का मतलब था देश धर्म के संविधान से चले, तभी रामराज्य की कल्पना साकार हो सकती है। ह्लहिन्दू राष्ट्रह्ल का मतलब था भारतीय उपमहाद्वीप में फैले ह्लअखण्ड भारतह्ल एकसूत्र में बंधा रहे। देवी-देवताओं की इस जन्मभूमि पर हिमालय पर्वत, गंगा, यमुना, नर्मदा, कावेरी, ब्रह्मपुत्रादिक अनेकानेक नदी-नद की पहचान हो। ये बोध इंडिया शब्द से नहीं होता। हिमालय का प्रथम अक्षर हि तथा इन्दू सरोवर के नाम से न्दू अक्षर को ग्रहण करके अर्थात हि-न्दू = हिन्दू नाम ही उचित है। ब्रतानियों से पहले मुगल शासक इस देश को हिन्दुस्तान ही बोलते थे। तो ब्रतानियों द्वारा इसका नाम इंडिया क्यों रखा। काशी प्रसाद जायसवाल जैसे विद्वान की सोच थी कि जनमानस को राष्ट्रवादी बनाकर ही अंग्रेजों के जुर्म से भारत को आजादी दिलायी जा सकती है।

से त्यागपत्र देने को बाध्य कर दिया था। लेकिन गर्व है प्राचीन भारतीय राज्यव्यवस्था पर रची गई महानतम कृति हिंदू पालीटी के लिए भारत-विद्या (इंडोलाजी) स्वर्गीय काशी प्रसाद जायसवाल की ऋणी है। भारतीय इतिहास लेखन के प्रवृत्तियों के दृष्टिकोण से 1920-1930 वाले दशक में लिखने वाले इतिहासकारों पर राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव था, जो उनके ऐतिहासिक चिंतन में प्रतिबिंबित हुआ।

खास यह है कि जब ब्रतानियां हुकूमत के आगे किसी की जुबान खोलने की साहस नहीं था, तब लंदन के काफी हाउस में विनायक दामोदर सावरकर के साथ डॉ काशी प्रसाद जायसवाल भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने का ताना-बाना बुन रहे थे। उनका मानना था जातियों में बटे हिन्दुओं को एकजुट करके ही ब्रतानियां हुकूमत को मात दी जा सकती है। क्योंकि हिन्दुत्व को एक सजातीय, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक पहचान है। आसिन्धुसिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिकाः। पितृभूपुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरितिस्मृतः।। डॉ काशी प्रसाद का हिन्दुत्व का मतलब था देश धर्म के संविधान से चले, तभी रामराज्य की कल्पना साकार हो सकती है। ह्लहिन्दू राष्ट्रह्ल का मतलब था भारतीय उपमहाद्वीप में फैले ह्लअखण्ड भारतह्ल एकसूत्र में बंधा रहे। देवी-देवताओं की इस जन्मभूमि पर हिमालय पर्वत, गंगा, यमुना, नर्मदा, कावेरी, ब्रह्मपुत्रादिक अनेकानेक नदी-नद की पहचान हो। ये बोध इंडिया शब्द से नहीं होता। हिमालय का प्रथम अक्षर हि तथा इन्दू सरोवर के नाम से न्दू अक्षर को ग्रहण करके अर्थात हि-न्दू = हिन्दू नाम ही उचित है। ब्रतानियों से पहले मुगल शासक इस देश को हिन्दुस्तान ही बोलते थे। तो ब्रतानियों द्वारा इसका नाम इंडिया क्यों रखा। काशी प्रसाद जायसवाल जैसे विद्वान की सोच थी कि जनमानस को राष्ट्रवादी बनाकर ही अंग्रेजों के जुर्म से भारत को आजादी दिलायी जा सकती है। 1930 में गायकवाड़ स्वर्ण-जयन्ती व्याख्याता सम्माननीय पद से सम्मानित किये गये थे। उनसे पहले केवल रवीन्द्रनाथ ठाकुर को ही यह गौरव प्राप्त हुआ था, और विज्ञानाचार्य रमन तीसरे व्यक्ति थे, जिन्होंने इस सम्मान को पाया। इसी साल वे ओरियन्टल कान्फरेन्स, पटना के स्वागताध्यक्ष हुए थे। 1931 में वे पटना-म्यूजियम के प्रेसिडेन्ट बने और अन्त तक रहे। 1933 में वे बिहार-प्रान्तीय साहित्य सम्मेलन के भागलपुर अधिवेशन के सभापति हुए थे। उस वक्त उन्होंने चैरासी सिद्धों की हिन्दी कविता पर एक सुन्दर भाषण दिया और डा. ग्रियर्सन ने सिद्धों की कविता (800 ई0) का होना स्वीकार कर लिया। सन् 1934 एवं 1936 में वे दो बार भारतीय मुद्रा-समिति के सभापति हुए। वे पहले भारतीय थे, जिनका व्याख्यान लन्दन की रायल एशियाटिक सोसाइटी ने अक्टूबर, 1935 में मौर्य सिक्का विषय पर कराया था।

अफसोस है कि ऐसे महान विभूति, अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान व जायसवाल समाज के गौरव डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल को मरणोपरान्त भारत का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न देने की मांग तो एक अरसे से हो रही है। लेकिन अभी तक किसी राजनेता या उसके दल ने पहल नहीं की है। यह अलग बात है जायसवाल क्लब एवं उससे जुड़े अनुसांगिक संगठनें लगातार उन्हें भारत रत्न देने की मांग समय-समय पर करते रहे है। यह देश के लिए गौरव की बात है कि देर से ही सही लोग उनकी वैभव, महत्ता व कार्यक्षमता को समझने लगे है। हकीकत तो यही है कि इतिहास से लेकर साहित्य व स्वतंत्रता आंदोलन के माध्यम से भारत की आजादी में अतुलनीय योगदान दिया है, उन्हें बहुत पहले ही भारतरत्न मिल जाना चाहिए था। लेकिन सरकारों ने अन्य महान विभूतियों की तरह काशी प्रसाद जायसवाल के इतिहास को लोगों के बीच आने ही नहीं दिया। जायसवाल क्लब के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोज जायसवाल व पं दीन दयाल नगर के विधायक रमेश जायसवाल 27 जुलाई को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से उनके कालीदास मार्ग के आवास पर मिलकर डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल के बारे में चर्चा कर उन्हें मरणोपरान्त भारत का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न, उनके नाम पर टिकट जारी करने व उनके नाम पर बोर्ड के गठन के साथ ही उनकी जयंति 27 नवंबर को इतिहास दिवस के रुप में मनाने की मांग किया तो मुख्यमंत्री ने कहा, मैं डॉ काशी प्रसाद जायसवाल के इतिहास, उनकी विद्वता व लेखनी से भलीभांति परिचित व पढ़ा हूं, जरुर कुछ न कुछ पहल करने का न्रयास करेंगे। ऐसे में यूपी सहित भारत के विभिन्न हिस्सों में रह रहे 20 करोड़ से अधिक काशी प्रसाद के अनुयायियों, शुभचिंतकों एवं चाहने वालों में उम्मींद की किरण जगी है। दावा है कि अगर मुख्यमंत्री ने मांगे पूरी की तो देश का इतिहास भी स्वर्णिम अक्षरों से लिखा जायेगा। खासकर उस विद्वान के लिए जिन्होंने ब्रिटिशकाल के डार्कनेस हिस्ट्री आफ इंडिया या अंधकार युग के इतिहास को तमाम पाबंदियों के बावजूद अपनी पुस्तकों में उजागर किया है। भारतीय दर्शन, इतिहास, भाषा-साहित्य, सभ्यता-संस्कृति व धर्म के गौरवशाली अतीत को काशीप्रसाद ने जिस प्रखरता से उभारा है, उस तरह की प्रखरता अभी तक कोई दूसरा साहित्यकार या इतिहासकार नहीं उजागर कर पाया है। टाइम्स आफ इंडिया के 31 अगस्त, 1960 के अंक में प्रकाशित एक समाचार से यह भी पता चलता है कि भारत सरकार ने सन् 1961 में कुछ विशिष्ट महापुरूषों के सम्मान में विशेष डाक टिकटों को जारी करने का निर्णय लिया है। उन महापुरूषों में एक नाम प्रसिद्ध इतिहासकार डा. काशी प्रसाद जायसवाल का भी था।

सफरनामा

आपका जन्म 27 नवंबर, 1881 को उप्र की पावन माटी मिजार्पुर में बाबू महादेव प्रसाद जायसवाल के परिवार में हुआ। उनका देहावसान 4 अगस्त, 1937 को हुआ। आपके पिता लाह और चिवड़े के विख्यात व्यापारी थे। आपके पिता का व्यापार बिहार राज्य में भी फैला हुआ था। डॉ. काशी प्रसाद की प्रारम्भिक शिक्षा एक निजी शिक्षक की देख-रेख में घर पर ही हुई। उन्होने मिजार्पुर के लंदन मिशन स्कूल से एंट्रेंस की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। प्राथमिक शिक्षा के बाद वे वाराणसी के क्वींस कालेज में पढ़ने के बाद उच्च शिक्षा के लिए लंदन

अफसोस है कि ऐसे महान विभूति, अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान व जायसवाल समाज के गौरव डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल को मरणोपरान्त भारत का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न देने की मांग तो एक अरसे से हो रही है। लेकिन अभी तक किसी राजनेता या उसके दल ने पहल नहीं की है। यह अलग बात है जायसवाल क्लब एवं उससे जुड़े अनुसांगिक संगठनें लगातार उन्हें भारत रत्न देने की मांग समय-समय पर करते रहे है।

गए। 1906 में डॉ. जायसवाल जी मात्र 25 वर्ष की अवस्था में वह इंग्लैण्ड रवाना हुए और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में दाखिला पाया। वहां से उन्होंने इतिहास से एमए करते हुए डेबिस स्कॉलर के रूप में चीनी भाषा का अध्ययन किया। उन्होने बार के लिये परीक्षा में भी सफलता प्राप्त की। वहां अध्ययन के साथ भारत की आजादी के लिए लाल हरदयाल व वीर सावरकर के संपर्क में आएं। भारत लौटने पर उन्होने कोलकाता विश्वविद्यालय में प्रवक्ता (लेक्चरर) बनने की कोशिश की किन्तु राजनैतिक आन्दोलन में भाग लेने के कारण उन्हें नियुक्ति नहीं मिली। अन्ततः उन्होने वकालत करने का निश्चय किया। 1911 में कोलकाता में वकालत आरम्भ की। कुछ समय बाद 1914 में वे पटना उच्च न्यायालय में आ गये। पटना म्यूजियम की स्थापना भी आपकी ही प्रेरणा से हुई। 1935 में रायल एशियाटिक सोसाइटी ने लंदन में भारतीय मुद्रा पर व्याख्यान देने के लिये आपको आमंत्रित किया। आप इंडियन ओरिएंटल कांफ्रेंस (छठा अधिवेशन, बड़ौदा), हिंदी साहित्य सम्मेलन, इतिहास परिषद् (इंदौर अधिवेशन), बिहार प्रांतीय हिंदी साहित्य संमेलन (भागलपुर अधिवेशन) के सभापति रहे। कलवार की जगह जायसवाल टाइटिल काशी प्रसाद ने दी।

हिन्दू पालिटी सहित दर्जनों पुस्तकें उनकी उपज रही

1899 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा के उपमंत्री बने। उनके शोधपरक लेख कौशाम्बी, लॉर्ड कर्जन की वक्तृता और बक्सर आदि लेख नागरी प्रचारिणी पत्रिका में छपे। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के सरस्वती का सम्पादक बनते ही 1903 में काशीप्रसाद जायसवाल के चार लेख, एक कविता और उपन्यास नाम से एक सचित्र व्यंग्य सरस्वती में छपे। काशी प्रसाद आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के समकालीन थे। आपकी प्रकाशित पुस्तकों के नाम हिंदू पालिसी, ऐन इंपीरियल हिस्ट्री ऑव इंडिया, ए क्रॉनॉलजी ऐंड हिस्ट्री ऑव नेपाल हैं। हिंदू पॉलिटी का हिंदी अनुवाद (श्री रामचंद्र वर्मा) हिंदू राज्यतंत्र के नाम से नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी से प्रकाशित हुआ। 20वीं सदी में जिन भारतीय विद्वानों ने विमर्श की दिशा को प्रभावित करने में अग्रणी भूमिका निभाई, उनमें काशी प्रसाद जायसवाल (1881-1937) अग्रणी हैं। उनके जीवन के कई आयाम हैं और कई क्षेत्रों में उनका असर रहा है। उनकी लेखनी की व्यापकता को देख कर कोई यह नहीं कह सकता कि उनका कौन सा रूप प्रमुख है। राष्ट्रवादी इतिहासकार, साहित्यकार, पुरातत्वविद, भाषाविद, वकील या पत्रकार। कभी-कभी विवादास्पद और व्यंग्यात्मक सामग्री लिखते समय जायसवाल महाब्राह्मण और बाबा अग्निगिरी का छद्म नाम भी प्रयोग करते थे।

उनके व्यक्तित्व की व्याख्या महाबीर प्रसाद द्विवेदी जैसे कवियों ने की

उनके व्यक्तित्व की व्याख्या उनके संबंधियों, मित्रों, विरोधियों और विद्वानों ने तरह-तरह से की है। घमंडाचार्य और बैरिस्टर साहब (महावीरप्रसाद द्विवेदी), कोटाधीश (रामचंद्र शुक्ल), सोशल रिफॉर्मर (डॉ. राजेन्द्र प्रसाद), डेंजरस रेवोलूशनरी और तत्कालीन भारत का सबसे क्लेवरेस्ट इंडियन (अंग्रेज शासक), जायसवाल द इंटरनेशनल (पी.सी. मानुक) विद्यामाहोदधि (मोहनलाल महतो वियोगी) और पुण्यश्लोक (रामधारी सिंह दिनकर) आदि में भी डॉ काशी प्रसाद जायसवाल के भारतीय योगदान को सराहा गया है। राइन पुस्तकों में बताया गया है कि गिरफ़्तारी की आशंका को देखते हुए, डॉ जायसवाल जल-थल-रेल मार्ग से यात्रा करते हुए 1910 में भारत लौटे और यात्रा-वृतांत तथा संस्मरण सरस्वती और मॉडर्न रिव्यू में अपने विचारों को प्रकाशित किया। इन पुस्तकों में उल्लेख है कि किस तरह डॉ काशी प्रसाद लंदन के काफी हाउस में बीर सावरकर, सुभाष चंद्र बोस जैसे क्रांतिकारियों के बीच आजादी की मंत्रणा करते थे। उनके इसी मंत्रणा से खिायिएं अग्रेज शासक उन्हें पकड़ने के लिए जाल बिछा रखा था। उन्होंने पटना उच्च न्यायालय में आजीवन वकालत की. वे इनकम-टैक्स के प्रसिद्ध वकील माने जाते थे। दरभंगा और हथुआ महाराज जैसे लोग उनके मुवक्किल थे। बड़े-बड़े मुकदमों में जायसवाल प्रिवी-कौंसिल में बहस करने इंग्लैंड भी जाया करते थे। उन्होंने मिजार्पुर से प्रकाशित कलवार गजट (मासिक, 1906) और पटना से प्रकाशित पाटलिपुत्र (1914-15) पत्रिका का संपादन भी किया और जर्नल ऑफ बिहार एंड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी के आजीवन संपादक भी रहे। इसके अलावा अपने जीवन काल में कई महत्वपूर्ण व्याख्यान दिए जिनमें टैगोर लेक्चर सीरीज (कलकत्ता, 1919), ओरिएण्टल कॉन्फ्रेंस (पटना/बड़ोदा,1930/1933), रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन (1936, पहले भारतीय, जिन्हें यह अवसर मिला), अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मलेन, इंदौर (1935) इत्यादि महत्वपूर्ण हैं। काशी प्रसाद जायसवाल ने प्राचीन भारत का चित्रण अपेक्षाकृत अपरिवर्तनशील समाज के रूप में किया। यद्यपि उन्होंने जमीन में निजी स्वामित्व की बात कर एशियाई उत्पादन प्रणाली को खंडित भी किया। उनकी दृष्टि में स्थिरता का आधार प्राचीन आर्य संस्कृति थी। इसलिए साहित्यिक स्रोतों के काल को यथासंभव अधिक से अधिक पीछे ले जाने की कोशिश की और यह दिखलाया कि भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल और सार्थक पक्ष पूर्णतः देशी मूल के थे। भारतीय संस्कृति को आध्यात्मिक रूप में विश्लेषण किया गया और कहा गया कि यह भौतिकवादी पाश्चात्य सभ्यता के विपरीत थी, इस आधार पर निष्कर्ष निकाला कि भारतीय संस्कृति पश्चिम संस्कृति से श्रेष्ठ थी। राष्ट्रवाद से प्रभावित डॉ जायसवाल ने इसकी ऐतिहासिक व्याख्या की। उनके लेखन में अतिप्राचीन काल से ही देश की राजनीतिक एकता पर जोर देने की प्रवृत्ति थी। उन्होंने ही प्राचीन भारत में गणतंत्र एवं मंत्रीपरिषद आदि की अस्तित्व की बात की प्रासंगिकता पर बल दिया, जिससे राष्ट्रीयता की विचारधारा को बल मिला। इनके इतिहास लेखन में प्राचीन काल को भरपूर समृद्धि एवं सामान्य संतुष्टि का काल मानने की प्रवृत्ति हावी थी जिस पर हर भारतीय का गर्व करना उचित था। लेकिन औपनिवेशिक काल-विभाजन पर कोई विशेष आपत्ति उठाए बिना स्वीकार कर लिया गया और हिन्दू, प्राचीन तथा मुस्लिम, मध्यकाल के बीच तीव्र भेद की दीवार खड़ी कर दी गई। उनके दृष्टिकोण में असली भारतीय सांस्कृतिक रूप ही हिन्दुत्व था। भारत की सभी खूबियां देशी मूल की थी। इस तरह की ऐतिहासिक व्याख्या जिसे हिन्दू राष्ट्रवाद से प्रेरित कहना ही सबसे उपयुक्त होगा, आज के ऐतिहासिक लेखन में भी प्रभावशाली धारा के रूप में विद्यमान है। पद्मभूषण से सम्मानित राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने अपने संस्मरण और श्रद्धां- जलियां नामक पुस्तक में लिखा है कि सूर्य, चंद्र, वरुण, कुबेर, वृहस्पति भी डॉक्टर काशी प्रसाद जायसवाल जी की बराबरी नहीं कर सकते। कुछ ऐसा ही पद्मभूषण से विभूषित प्रख्यात साहित्यकार डॉ अमृतलाल नागर ने भी कहा है, अगर उन्हें चंद घड़ी के लिए हिंदुस्तान का बादशाहत मिल जाए तो वे हिंन्दुस्तान की तकदीर और तकदीर बदल सकते हैं।

हिन्दी साहित्य इतिहास को 250 वर्ष पीछे बढ़ाया

श्रद्धेय काशी प्रसाद ने विलायत-यात्रा का विवरण सरस्वती में लिखा था। सरस्वती में उनकी हिन्दी कविता भी निकली थी। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने इन निबन्धों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की थी। हिन्दी साहित्य की उनकी सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने हिन्दी साहित्य के इतिहास को लगभग 250 वर्ष पीछे बढ़ाया है। इतिहास के पंडित मानते थे कि हिन्दी साहित्य का आरंभ लगभग 1000 के आसपास है। प्रथम बार उन्होंने अपनी खोज और अनुसंधान द्वारा यह प्रमाणित किया कि हिन्दी का आरंभ 750 से माना जा सकता है। एक बार जार्ज ग्रियर्सन ने उन्हें लिखा था कि पूर्वी भारत पर, जिसका संबंध बिहार से है, कोई ग्रंथ नहीं मिलता। इसके जवाब में उन्होंने खोज कर पुरानी पूर्वी हिन्दी का अविच्छिन्न इतिहास और उदाहरण 750 से प्रस्तुत कर दिया। उनकी ही प्रेरणा से महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने अतिप्राचीन हिन्दी साहित्य का शोध किया। राहुल जी ने यह स्वीकार किया है कि उनका शोध जायसवाल जी के सहयोग के बिना कभी भी पूरा नहीं होता। भारतीय विद्वतमंडली उनका सम्मान करती थी, और पश्चिमी विद्वान भी उनकी खोजों का लोहा मानते थे।

> भारतीय संस्कृति को आध्यात्मिक रूप में विश्लेषण किया गया और कहा गया कि यह भौतिकवादी पाश्चात्य सभ्यता के विपरीत थी, इस आधार पर निष्कर्ष निकाला कि भारतीय संस्कृति पश्चिम संस्कृति से श्रेष्ठ थी। राष्ट्रवाद से प्रभावित डॉ जायसवाल ने इसकी ऐतिहासिक व्याख्या की। उनके लेखन में अतिप्राचीन काल से ही देश की राजनीतिक एकता पर जोर देने की प्रवृत्ति थी। उन्होंने ही प्राचीन भारत में गणतंत्र एवं मंत्रीपरिषद आदि की अस्तित्व की बात की प्रासंगिकता पर बल दिया(

चमकता युवा व्यक्तित्व भवानी सिंह

कुमुद रंजन सिंह

समाजसेवी भवानी सिंह नालंदा में युवाओं के खासे चर्चित समाजसेवियों में गिने जाते रहे हैं। वही राजपूत समाज के उभरते चेहरे के रूप में पहचान रखते हैं, जमीनी स्तर पर अपने कार्यकुशलता मधुर स्वभाव व जात पात व सभी धर्म समाज के साथ चलने के कारण पूर्व में जनता दल यूनाइटेड के स्वर्ण प्रकोष्ठ जिला उपाध्यक्ष रहे, उसके बाद नगर जदयू बिहार शरीफ के उपाध्यक्ष एवं वर्तमान में जिला जदयू महासचिव के पद पर रहते हुए अपने दल को मजबूती प्रदान करने एवं माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी के हाथों को मजबूत करने में जी जान से लगे हुए हैं।

दल के प्रति इनका समर्पण इनके पिता स्वर्गीय ठाकुर श्याम नंदन सिंह से मिली है जो पूर्व में बिहार के सबसे बड़े आंदोलन, जेपी आंदोलन के सिपाही रहे थे,ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया था। उन्होंने रहुई पैक्स में तीसरी बार अध्यक्ष के साथ ही कई संगठनों में अपना योगदान दिया एवं संरक्षक रहे।जेपी आंदोलन का प्रभाव स्व श्यामू बाबू पर जीवन भर रहा और बाद में सामाजिक संगठन नालंदा समाज कल्याण प्रतिष्ठान की स्थापना की ।

माननीय मुख्यमंत्री के राजनीतिक सफर में इनका अहम सहयोग रहा है। इसी कड़ी में 29 दिसंबर 2020 को इनके (स्व श्याम नन्दन सिंह) नहीं रहने पर मुख्यमंत्री ने ना केवल उनके आवास पर आकर श्रद्धांजलि अर्पित किया। बल्कि परिवार के साथ बिताए पलों को भी याद किया ।

ठा श्याम नंदन सिंह जैसे व्यक्तिव का चला जाना आज भी उनके व्यक्तित्व व कृतित्व को याद करने पर नई ऊर्जा प्रदान करता है।

व्यवहार से बनाया अलबेला ने अपना मुकाम

कुमुद रंजन सिंह

नालंदा जिले के रहुई नगर पंचायत के नगर अध्यक्ष अलबेला यादव अपने व्यक्तित्व व सौम्य स्वभाव के कारण आज एक उभरते कर्मठ नेता के रूप में पहचाने जाते है। इनके लगन व मधुर व्यवहार,जात जमात से ऊपर उठकर कार्य करने के कारण इन्होंने रहुई नगर पंचायत के प्रथम नगर अध्यक्ष के रूप में जीत हासिल की। उनका कहना है कि जात और जमात से ऊपर उठकर सबों के लिए हमेशा सर्व सुलभ रहने की प्रवृत्ति के कारण इनका जीत सुनिश्चित हुआ है। वे बताते हैं रहुई स्टैंड के पास घर रहने के कारण लोगों का आना जाना एवं समस्याओं से रूबरू होने का मौका मिलता रहा।

सभी के सहयोग से समस्याओं का हल निकालने का प्रयास जारी रहा। 2016 में मुखिया के उम्मीदवार रह चुके अलबेला यादव बताते हैं। जनता का भरपूर सहयोग इस बार मिल पाया, जबकि पिछले बार मामूली वोट से मुखिया में पीछे रह गए थे। वही इस बार जनता ने भरपूर सहयोग के साथ नगर पंचायत रहुई का ताज पहनाने का काम किया। इस बार मलमास मेले में नगर पंचायत रहुई के तरफ से भी पानी के टैंकर की व्यवस्था इन्होंने की है। इनका लगाव युवाओं से हमेशा रहा है। इस कारण युवाओं को खेल के प्रति प्रोत्साहित करना इनका उद्देश्य है। यह बताते हैं कि प्रखंड जदयू उपाध्यक्ष रहने के दौरान राजनीतिक क्षेत्र में गांव गांव तक पहचान बनी और लोगों के समस्याओं से अवगत होते हुए उन समस्याओं पर निदान के लिए पहल करना एवं लोगों से जुड़ाव का अवसर मिलता गया। लोगों के प्रेम समर्पण एवं अपनत्व के कारण मैं आज इस मुकाम तक पहुंचा हूं । मेरी कोशिश है, नगर पंचायत को विकसित एवं सुंदर बनाना।

18वीं पुण्यतिथि पर याद किये गए समाजिक जगत के प्रेरणास्रोत स्व.अशोक कुमार सिंह

बिहारशरीफ 24 जुलाई को समाजिक जगत के प्रेरणास्रोत स्व. अशोक कुमार सिंह की 18 वीं पुण्यतिथि बिहारशरीफ गड़पर मोहल्ले में स्व.अशोक कुमार सिंह की चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए से संपन्न किया गया।

स्व. अशोक कुमार सिंह की मृत्यु 24 जुलाई 2005 को हुआ था, तब से उनके परिवार और समाजिक कार्यकताओं द्वारा लगातार उनका स्मृति दिवस एक यादगार के रूप में मनाया जाता है । मौके पर उपस्थित राष्ट्रीय राजपूत महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा करते हुए कहां कि अशोक कुमार सिंह सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर रुचि लेते थे। उन्होंने खासकर समाज के हाशिए पर रह रहे लोगों को नई जीवन जीने की प्रेरणा दी। वे स्वयंसेवी संगठन के लोगों को उचित मार्गदर्शन करते थे।

समाजिक कार्यकर्ता व स्नेही इंटर नेशनल के सचिव स्वतंत्र कुमार ने कहा कि उनका जाना एनजीओ जगत के साथ ही सामाजिक क्षेत्र में अपूरणीय क्षति है।वही इस मौके पर उपस्थित समाजसेवी दीपक कुमार ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्व.अशोक कुमार सिंह सामाजिक कार्य करने वाले को प्रोत्साहन देते थे और सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की प्रेरणा देते थे।

अधिवक्ता संजीव कुमार ने स्व.सिंह को एक महान व्यक्तित्व बताया। स्व.अशोक सिंह के स्मृति दिवस पर नालंदा जिले के विभिन्न गांव में चल रहे वृक्षारोपण,बाल शिक्षा, पर्यावरण जागरूकता आदि कार्यक्रम का समापन स्व. अशोक कुमार सिंह के स्मृति दिवस पर किया गया ।ज्ञात हो कि जागरूकता

“ स्व. अशोक कुमार सिंह की मृत्यु 24 जुलाई 2005 को हुआ था, तब से उनके परिवार और समाजिक कार्यकताओं द्वारा लगातार उनका स्मृति दिवस एक यादगार के रूप में मनाया जाता है । मौके पर उपस्थित राष्ट्रीय राजपूत महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा करते हुए कहां कि अशोक कुमार सिंह सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर रुचि लेते थे।

कार्यक्रम के तहत हरनौत के तिरा,अरौत , नालंदा के सारिलचक, वेन के उमराव बीघा,बहादुर बीघा सहित गावो में वृक्षारोपण, कर जन जागरूकता कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम में मौसम चक्र एवं बाढ़ सुखाड़ की समस्याओं पर चर्चा करते हुए किसानों के समस्याओं को वृक्ष लगाकर कम करने एवं सरकारी योजनाओं में किसानों की भागीदारी सुनिश्चित करने की बात की गई।मगध समाज कल्याण प्रतिष्ठान के द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के तहत ऋषभ राज, निरंजन पासवान, विजय प्रसाद, संध्या कुमारी, पंकज कुमार वर्मा, सुजीत कुमार ने बताया कि, लगभग डेढ़ महीने तक चलने वाले ग्रीष्मकालीन इस कार्यक्रम में विभिन्न स्कूलों में जाकर बच्चों के शिक्षा की गुणवत्ता के साथ ही शिक्षा के नए-नए तरीके, बच्चों के अधिकार, खेल खेल में पढ़ाई पर स्कूलों में जागरूकता का कार्य किया गया।

पुण्यतिथि के मौके पर मगध समाज कल्याण प्रतिष्ठान के सचिव कुमुद रंजन सिंह ने कहा कि स्व. अशोक कुमार सिंह विभिन्न स्वैच्छिक एवं गैर सरकारी संस्थाओं के जनक रहे हैं। जिन्हें पूरे देश में संस्था एवं संघ जगत के लोग बड़े आदर के साथ याद करते है ।उन्होंने कहा कि मगध समाज कल्याण प्रतिष्ठान,सन 1971 से स्थापित होकर पूरे देश में विभिन्न मुद्दों पर कार्य करती रही है, और युवाओं को जुड़ने का मौका प्रदान करती रही है।

निःसंदेह संदेह नाश और नित्यता एवं प्रकृति के दो विशिष्ट भौतिक गुण होते हैं। भौतिक पिंडो का धड़ तिरोहित हो जाता है लेकिन सत्कर्म की शाखा सदा सर्वदा लहलहाती रहती है। बताते चलें कि स्व.अशोक कुमार सिंह ऐसे ही व्यक्तित्व का नाम है। जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन सामाज के विकास में समर्पित कर दिया। इसलिए वे आज भी श्रद्धा पूर्वक याद किए जाते हैं।वे "मगध समाज कल्याण प्रतिष्ठान" के संस्थापक तथा मगध शिशु राष्ट्रीय उच्च मध्य विद्यालय राजगीर के फाउंडर सचिव थे ।उन्होंने अपने त्याग एवं मेघा की बदौलत जिला ,राज्य एवं देश में विशिष्ट पहचान बनाई थी। इसी कारण देश के विभिन्न हिस्सों में उनकी पुण्य तिथि लोग श्रद्धापूर्वक मनाते हैं। स्मृति दिवस कार्यक्रम के मौके पर उपस्थित लोग नीलम सिंह, कुमुद रंजन सिंह, रवि रंजन सिंह, कल्याणी सिंह, जितेंद्र सिंह, अशोक कुमार, वीरेंद्र कुमार, तरुण कुमार,सरिता कुमारी सहित कई अन्य लोग उपस्थित थे ।

बच्चों को कुपोषण मुक्त बनता आंगनबाड़ी केंद्र

आजादी के बाद स्वास्थ्य के क्षेत्र में देश जिन चुनौतियों का सामना कर रहा था उनमें बच्चों में कुपोषण की समस्या भी एक थी. देश के ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों में कुपोषण बहुत ज्यादा थी. गरीबी और आर्थिक पिछड़ेपन के कारण गर्भवती महिलाओं को पौष्टिक आहार उपलब्ध नहीं हो पाता था. जिसका असर बच्चों में देखने को मिलता था. इस समस्या से निजात पाने के लिए भारत सरकार द्वारा हर गांव में आंगनबाड़ी केंद्र खोला गया. जहां महिला एवं बाल विकास विभाग तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा मिलकर महिलाओं और बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण किया जाता है. गर्भवती महिलाएं व बच्चों का पंजीकरण और टीकाकरण किया जाता है. आगे चलकर इसमें गांव की किशोरी बालिकाओं के लिए पैड्स भी उपलब्ध करवाई जाने लगी.

आंगनबाड़ी कार्यक्रम को भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में 3 से 6 वर्ष के बच्चों को और उनकी मां को कुपोषित होने से बचाने के लिए भारत सरकार व बाल विकास सेवा कार्यक्रम के द्वारा शुरू किया गया था. इसके अंतर्गत 6 वर्ष की आयु के 8 करोड़ बच्चों को सम्मिलित किया गया है. इस योजना का शुभारंभ केंद्र सरकार द्वारा 1985 में किया गया था. वर्ष 2010 के बाद राज्य सरकारें भी इसमें सहयोग देन लगी हैं. याद रहे कि लगभग 400 से अधिक जनसंख्या वाले स्थान पर एक आंगनबाड़ी केंद्र की स्थापना का प्रावधान है. जनसंख्या के आधार पर किसी ग्राम पंचायत में एक से अधिक आंगनबाड़ी खोला जा सकता है. आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ता और सहायिका इस केंद्र को संचालित करती हैं तथा शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास और अन्य संबंधित विभागों के समन्वय से इसे मूर्त रूप दिया जाता है. जिसे आईसीडीएस कहा जाता है. इसके सफल संचालन के लिए प्रत्येक 25 आंगनबाड़ी कार्यकताओं के लिए एक आंगनबाड़ी पर्यवेक्षक नियुक्त किया जाता है. जिसे मुख्य सेविका कहा जाता है. यह आंगनबाड़ी कार्यकताओं और सहायिकाओं को कार्य से जुड़े मामलों में उनका मार्गदर्शन करती हैं. लेकिन सरकार के सभी प्रयासों के बावजूद देश के कई ऐसे ग्रामीण क्षेत्र हैं जहां आंगनबाड़ी केंद्र आज भी अपने उद्देश्य और लक्ष्य से पीछे नजर आता है. जहां जागरूकता की कमी के कारण अभिभावक बच्चों को केंद्र तक नहीं पहुंचाते हैं और इसका लाभ उठाने से वंचित रह जाते हैं. ऐसा ही कुछ राजस्थान के जिला बीकानेर स्थित लूणकरणसर ब्लॉक के ढाणी भोपालाराम गांव में देखने को मिला है. जहां माता पिता अपने बच्चों को आंगनबाड़ी केंद्र तक भेजने के इच्छुक नजर नहीं आते हैं. इस केंद्र की आंगनबाड़ी सहायिका नरेश का कहना है कि ह्यहमें बच्चों के माता पिता कहते हैं कि हमारे बच्चो को घर से आंगनबाड़ी लेकर आप खुद जाओ, और फिर बाद में उनको घर भी आप ही छोड़कर जाओगे. वह बताती हैं कि ज्यादा गर्मी होने के कारण आंगनबाड़ी में ज्यादा बच्चे नहीं आते हैं क्योंकि केंद्र में पंखे की व्यवस्था नही है. यहां पर खेलने का मैदान हैं पर उसी जगह कांटेदार झाड़ियां और कंकड़ पत्थर हैं, जिस वजह से बच्चो को खेलने में दिक्कत आती है. यह भी बच्चों का केंद्र तक नहीं आने का एक बहुत बड़ा कारण है. नरेश के अनुसार इस केंद्र पर 21 बच्चों का नामांकन है, परंतु केवल 6 बच्चे ही केंद्र पर आते हैं. वह बताती हैं कि हमारी आमदनी 7000 प्रति माह है. उन्होंने बताया कि इस केंद्र पर हम 3 वर्कर काम करती हैं. जिन्हें कार्यकर्ता, साथिन और आंगनबाड़ी आशा दीदी कहते हैं. आशा को सहयोगिनी भी कहते हैं. वह गर्भवती महिलाओं की देखभाल और उनका टीकाकरण करना तथा कुपोषण का ध्यान रखती हैं. हम बच्चों को खेलकूद के माध्यम से बैठना, बोलना और पढ़ना सिखाते हैं. उन्हें अक्षर ज्ञान के साथ साथ चीजों की पहचान करना भी सिखाते हैं. उन्हें इस प्रकार का वातावरण दिया जाता है कि जब बच्चा पहली बार स्कूल जाए तो उसे डर न लगे और वह स्कूली वातावरण में आसानी से घुल मिल जाए. इसके अतिरिक्त आंगनबाड़ी केंद्र पर सरकार की ओर से 15 से 18 साल की किशोरियों के लिए आयरन की गोलियां और सेन्ट्री पैड वितरित करने भी प्रावधान है.

फिर से जीवंत हो उठा 1971 का भारत-पाक युद्ध

1971 भारत-पाक युद्ध के स्वर्णिम वर्ष के उपरांत वीर नारियों का सम्मान समारोह

। सम्मान स्वरूप वीर नारी सम्मान मेडल, अंगवस्त्रम के साथ 51000 का चेक

बिहार झारखंड की 18 वीर नारियों का सम्मान

सम्मान स्वरूप वीर नारी मेडल के साथ 51000 हजार का चेक

वीर नारियां हमारी वीर माताएं : राज्यपाल

अद्भुत और ऐतिहासिक कार्यक्रम है वीर नारी सम्मान समारोह

क्लारीपट्टू का प्रदर्शन ने लोगों का मन मोहा

गुलमोहर मैत्री संस्था द्वारा बापू सभागार, पटना में 1971 भारत पाक युद्ध के शहीद सैनिकों के परिवारों के सम्मान में "वीर नारी सम्मान समारोह का सफल आयोजन किया गया। आयोजन की 1971 भारत पाक युद्ध के स्वर्णिम वर्ष के उपरांत आयोजित की गई । कार्यक्रम में 1971 के बिहार झारखंड के शहीद सैनिकों के बलिदान को याद करते हुए उनकी वीर नारियों को सम्मानित किया गया

> कार्यक्रम में 1971 के बिहार झारखंड के शहीद सैनिकों के बलिदान को याद करते हुए उनकी वीर नारियों को सम्मानित किया गया । सम्मान स्वरूप वीर नारी सम्मान मेडल, अंगवस्त्रम के साथ 51000 का चेक सौंपा गया। कुल बिहार झारखंड से 19 वीर नारियां अपने परिवार के सदस्यों के साथ पहुंची थी। कार्यक्रम का उद्घाटन बिहार के महामहिम राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया।

सौंपा गया। कुल बिहार झारखंड से 19 वीर नारियां अपने परिवार के सदस्यों के साथ पहुंची थी।

कार्यक्रम का उद्घाटन बिहार के महामहिम राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। कार्यक्रम में बिहार विधान परिषद के सभापति देवेश चंद्र ठाकुर , चीफ ऑफ स्टाफ, हेड क्वार्टर -दक्षिण भारत मेजर जनरल एम इंद्र बालन के अलावा संस्था की ब्रांड एंबेसडर विधानसभा सदस्या सुश्री श्रेयसी सिंह संस्था के अध्यक्ष डॉक्टर सहजानंद प्रसाद सिंह सचिव मंजू सिन्हा आदि मौजूद रहे।

समारोह द्वारा 1971 के ऐतिहासिक युद्ध की घटनाओं, स्मृतियों और स्थितियों को विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से 1971 युद्ध का जीवंत और अभिनव मंचन किया गया और तात्कालिक परिस्थितियों को पुनः जीवित करने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम के सबसे अद्भुत और रोमांचकारी दुनिया के प्राचीनतम वैज्ञानिक युद्ध कला "क्लारीपट्टू" की प्रस्तुति ने लोगों का मन मोह लिया । यह प्रस्तुति सेना के जवानों द्वारा की गई थी। राजधानीवासियों को पहली बार आयोजित इस तरह के कार्यक्रम ने राष्ट्रभक्ति की भावना से ओतप्रोत किया । बिहार रेजीमेंट दानापुर की आर्मी बैंड की देशभक्ति गायन की प्रस्तुति भी शानदार रही।

अपने अभिभाषण में मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर ने कहा की ङ्क बिहार में पदभार ग्रहण करने के बाद कई सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिला परंतु यह अपने आप में अनोखा अद्भुत और ऐतिहासिक कार्यक्रम है। वीर नारियां हमारी वीर माताएं हैं आज हम अपनी माता का सम्मान नहीं कर रहे थे आज खुद को सम्मानित महसूस कर रहे थे आज मेरे नयन ने भी उस भावुक पल को समझा। जब सेना के जवान नींद का सुख छोड़ देते हैं तब हम नींद का सुख लेते हैं। ऐसे कार्यक्रम केवल वीर शहीदों को याद नहीं दिलाता बल्कि अपनी युवा पीढ़ी को राष्ट्रवाद की भावना में बांधने का भी कार्य करता है। राज्यपाल की अपील रही की रक्षाबंधन त्योहार पर अपने पास के सैनिक को राखी और मिठाई भेजना ना भूले यह भाव सब में जागृत करने की जरूरत है।

यह आयोजन सिर्फ कृतज्ञता दिखाने का मौका नहीं है, बल्कि यह भारतीय इतिहास के महान विजयों, रण कौशल और स्मृतियों से नई पीढ़ी को परिचय कराने का अवसर है। राष्ट्रभक्ति मन में होने की आवश्यकता है और उसे हर रोज जगाने की आवश्यकता है । हम ऐसे कार्यक्रम की प्रशंसा करते हैं।

बिहार विधान परिषद के सभापति श्री देवेश चंद्र ठाकुर ने वीर नारी सम्मान समारोह कि महत्ता को विवेचित करते हुए कहा कि

विगत दो वर्षों से इस कार्यक्रम की परिकल्पना चल रही थी आज यह मूर्त रूप में हम सबके सामने है । बीते महीने मैंने देखा था की वीर नारी गौरव यात्रा के दौरान युवा वर्ग की सहभागिता ने कार्यक्रम की सफलता की नींव रखी थी।

जमुई की विधायिका और गुलमोहर मैत्री कि ब्रांड एम्बेसडर सुश्री श्रेयसी सिंह ने अपने संबोधन में कहा इस तरह के आयोजन अपने इतिहास को याद करने का मौका देता है।

गुलमोहर मैत्री के सचिव, मंजू सिन्हा ने वीर नारियों के सम्मान का महत्व बताते हुए कहा की , " अपने विजयों का उत्सव मनाने से एकता और गर्व का भाव उत्पन्न होता है, जो सभी नागरिकों के मन में देशभक्ति की भावना को मजबूत करता है।"

समारोह द्वारा 1971 के ऐतिहासिक युद्ध की घटनाओं, स्मृतियों और स्थितियों को विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से 1971 युद्ध का जीवंत और अभिनव मंचन किया गया और तात्कालिक परिस्थितियों को पुनः जीवित करने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम के सबसे अद्भुत और रोमांचकारी दुनिया के प्राचीनतम वैज्ञानिक युद्ध कला क्लारीपट्टू की प्रस्तुति ने लोगों का मन मोह लिया ।

गुलमोहर मैत्री के अध्यक्ष डॉ सहजानंद सिंह जी ने कहां की

गुलमोहर मैत्री नई पीढ़ी में गर्व, शौर्य और देशभक्ति को प्रतिस्थापित करने और महान सामरिक कौशल, अदम्य साहस और सर्वोच्च बलिदान की प्रतीक इस विरासत को नई पीढ़ी को समर्पित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

वीर नारी सम्मान समारोह में बिहार और झारखंड के शहीद सैनिकों के परिवारों के साथ-साथ, पत्रकार, डॉक्टर और स्वयंसेवी जिन्होंने 1971 के युद्ध में किसी भी तरीके से योगदान दिया था, को भी सम्मानित किया गया।

सम्मानित होने वाली वीर नारियां

1. भोजपुर - सिपाही रामनाथ राय , वीर नारी रुकमणीया देवी
2. भोजपुर के सिपाही छठ्ठु प्रसाद , वीर नारी शांति देवी
3. भोजपुर से सिपाही राम सिंहासन प्रसाद , वीर नारी अलोधन देवी
4. भोजपुर से सिपाही श्रीमन नारायण सिंह , वीर नारी गंगजला देवी
5. भोजपुर के सिपाही ,सिपाही राम वीर नारी शकुंतला देवी
6. औरंगाबाद से सिपाही अर्जुन सिंह वीरनारी जीरामति देवी
7. बक्सर से लांस नायक विश्वनाथ सिंह वीरनारी छठिया देवी
8. पटना से सिपाही कपिल शर्मा, वीर नारी फूला देवी
9. भोजपुर से सिपाही फकीर चंद्र, वीर नारी शांति देवी
10. पटना से सिपाही शब्बीर वीर नारी भगवती देवी
11. पटना से कैप्टन वीके सिंह वीर नारी नीलम सिंह
12. भोजपुर से नायब सूबेदार शिवआधार तिवारी ,वीर नारी प्रभावती देवी
13. रांची से हवलदार डेविड तिग्गा , वीर नारी हेलेन तिग्गा
14. भोजपुर के हवलदार वेलहम मिंज , वीर नारी सुर्बादणी मिंज
15. भोजपुर के सिपाही शमानंद शर्मा , वीर नारी ललिता देवी
16. भोजपुर के सिपाही जादू सिंह, वीर नारी बतसिया देवी
17. सारण से सिपाही सिताब लाल राय ,वीर नारी बासमती देवी
18. रांची से लांसनायक अल्बर्ट एक्का - वीर नारी बालमदीना(मरणोपरांत)

> बिहार विधान परिषद के सभापति श्री देवेश चंद्र ठाकुर ने वीर नारी सम्मान समारोह कि महत्ता को विवेचित करते हुए कहा कि विगत दो वर्षों से इस कार्यक्रम की परिकल्पना चल रही थी आज यह मूर्त रूप में हम सबके सामने है । बीते महीने मैंने देखा था की वीर नारी गौरव यात्रा के दौरान युवा वर्ग की सहभागिता ने कार्यक्रम की सफलता की नींव रखी थी।

बिहार में फिर शुरू हुआ जातीय गणना

जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

पटना हाईकोर्ट द्वारा जाति आधारित जनगणना की वैधता को चुनौती देनेवाली सभी याचिकाओं को खारिज कर दिया गया है। याचिका खारिज होने के बाद बिहार सरकार ने फिर से जातीय जनगणना शुरू कर दिया है। बिहार में जातीय जनगणना 07 जनवरी 2023 को शुरू हुआ था। इस जनगणना को चुनौती देने के लिए सर्वोच्च न्यायालय में

21 अप्रैल 2023 याचिका दाखिल किया गया था। सर्वोच्च न्यायालय ने याचिका पर सुनवाई करते हुए 27 अप्रैल 2023 को कहा कि पहले उच्च न्यायालय जाय। पटना उच्च न्यायालय ने इस मामले पर सुनवाई करते हुए 04 मई 2023 अंतरिम रोक लगा दी।

पटना उच्च न्यायालय में मामले की जल्द सुनवाई के लिए अनुरोध करने पर पटना उच्च न्यायालय ने 09 मई 2023 जल्द सुनवाई के अनुरोध को खारिज कर दिया। राज्य सरकार ने 11 मई 2023 को सर्वोच्च न्यायालय गई। 18 मई 2023 को फिर सर्वोच्च न्यायालय ने पहले उच्च न्यायालय जाने को कहा। पटना उच्च न्यायालय ने 03 जुलाई 2023 से सुनवाई शुरू की और 07 जुलाई 2023 को सभी बिन्दुओं पर सुनवाई पूरी की और फैसला सुरक्षित रखा। 01 अगस्त को पटना उच्च न्यायालय ने सभी याचिका को खारिज कर दिया और इस प्रकार बिहार सरकार जातीय जनगणना को पूरा करने की कारवाई शुरू की।

बिहार सरकार का मानना है कि जाति आधारित सर्वे से प्रामाणिक, विश्वसनीय और वैज्ञानिक आंकड़े प्राप्त होंगे। इससे अतिपिछड़े, पिछड़े और सभी वर्गों के गरीबों को लाभ मिलेगा। सरकार को भी सरकारी योजना बनाने में यह मददगार साबित होगा।

पटना उच्च न्यायालय ने कहा है कि राज्य सरकार योजनाएं तैयार करने के लिए सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति को ध्यान में रखकर करा सकती है। बिहार सरकार ने जातिगत पहचान पर आधारित राज्य के मूल निवासियों के व्यक्तिगत समूह जो पिछड़े है उनकी गणना विवरण एकत्र करने के लिए एक सर्वेक्षण शुरू करने का निर्णय लिया था। इसे विधान सभा और विधान परिषद से अनुमति मिली थी और राज्यपाल के भाषण में भी इसका उल्लेख किया गया था। उसके बाद राज्य सरकार ने अधिसूचना जारी कर इसे बिहार गजट में प्रकाशित भी किया था।

बिहार सरकार के मुख्य सचिव ने जातीय गणना कार्य को अंतिम रूप देने का आदेश दिया है। बिहार सरकार ने लगभग 80 प्रतिशत जातीय जनगणना पूरा कर लिया था और शेष बचे काम को पुनः शुरू कर दिया है।

देखा जाय तो बिहार सरकार के बाद देश के अन्य राज्यों में भी जातीय जनगणना कराने की मांग उठेगी और वहां की सरकारों के लिए बाध्यकारी स्थिति पैदा हो जायेगी।

ध्यातव्य है कि बिहार में जाति आधारित जनगणना (जातिगत सर्वेक्षण) कराने का फैसला जून, 2022 में लिया गया था। राज्य सरकार ने पहले राज्य में मकान सर्वे की प्रक्रिया की शुरूआत 7 जनवरी से शुरू की थी। इस सर्वे में सबसे पहले मकानों की गिनती। सभी मकानों को एक यूनिट नंबर देना। एक मकान में यदि दो परिवार रहते हैं तो उनका अलग-अलग नंबर देना। एक अपार्टमेंट के सभी फ्लैट का अलग-अलग नंबर देना। जाति गणना फार्म पर परिवार के मुखिया का हस्ताक्षर अनिवार्य रूप से लेना। राज्य के बाहर नौकरी करने गए परिवार के सदस्यों की भी जानकारी लेना। जाति गणना में उपजाति की गिनती नहीं करना। परिवारों की आर्थिक स्थिति की भी जानकारी लेना। प्रखंड में उपलब्ध सुविधाओं की भी

> “ पटना उच्च न्यायालय में मामले की जल्द सुनवाई के लिए अनुरोध करने पर पटना उच्च न्यायालय ने 09 मई 2023 जल्द सुनवाई के अनुरोध को खारिज कर दिया। राज्य सरकार ने 11 मई 2023 को सर्वोच्च न्यायालय गई। 18 मई 2023 को फिर सर्वोच्च न्यायालय ने पहले उच्च न्यायालय जाने को कहा। पटना उच्च न्यायालय ने 03 जुलाई 2023 से सुनवाई शुरू की और 07 जुलाई 2023 को सभी बिन्दुओं पर सुनवाई पूरी की और फैसला सुरक्षित रखा।

जानकारी लेना जैसे झ्र रेललाइन, तालाब, विद्यालय, डिस्पेंसरी आदि। जनगणना कार्य में लगाए गए कर्मियों को आई कार्ड लगाना, जिस पर बिहार जाति आधारित जनगणना झ्र2022 लिखा होना, निर्धारित कर काम शुरू किया था। लेकिन बिहार में किए जा रहे जातिगत सर्वे को चुनौती देने के लिए सुप्रीम कोर्ट में एक

जनहित याचिका दायर की गई थी जिस पर 20 जनवरी को सुनवाई हुई थी। इस जनहित याचिका में बिहार में किए जा रहे जातिगत सर्वेक्षण को रद्द करने की मांग की गई थी। सर्वोच्च न्यायालय ने बिहार में चल रहे जातिगत सर्वे को चुनौती देने वाली किसी भी याचिका पर विचार करने से इनकार करते हुए कहा है कि याचिकाकर्ता को पटना उच्च न्यायालय में अपनी अपील दाखिल करनी चाहिए। याचिकाकर्ता ने पटना उच्य न्यायालय में याचिका दायर की थी जिस पर पटना उच्च न्यायालय से तत्काल प्रभाव से जातीय जनगणना पर रोक लगा दी थी।

न्यायालय का फैसला तो सर्वोपरी होता है, इस पर किसी तरह का प्रश्न नही उठाया जा सकता है और न ही मैं कोई प्रश्न उठा रहा हूं। लेकिन यह सच है कि इस जाति आधारित जनगणना में कई तरह की व्यवहारिक, तकनीकी और योजना निष्पादन में कठिनाई है। इस संदर्भ में विश्वेशरैया भवन (सचिवालय) के ठीक पीछे रहने वाले मुकेश कुमार सिन्हा का कहना है कि उनके मकान को जाति आधारित जनगणना के लिए चिन्हित नहीं किया गया है, वहीं अनिसावाद के सुंदरी इंकलेब में रहने वालों का कहना है कि उनके किसी भी फ्लैट को चिन्हित नहीं किया गया है। आशियाना-दीघा रोड के कई अपार्टमेंट के लोगों का कहना है कि हमारे यहां भी फ्लैट को चिन्हित नहीं किया गया है। यह तो एक अलग समस्या है। उसी तरह इसके अतरिक्त जातीय कोड निर्धारण में भी हो रहे विवाद को दुरुस्त नहीं किया गया है।

जैसे लोहार जाति, निषाद जाति, कायस्थ जाति.... शामिल हैं। हालांकि सरकार खामियों को सुधार लेने का आश्वासन देती रही है, किन्तु सुधार के बजाय उलझन बढती गयी और विवाद गहराता गया। इसमें कोई संदेह नही कि सरकर अगर तत्परता से सुधार के साथ सम्पूर्ण गणना प्रक्रिया को मूर्तरूप दे पाती तो आने वाले समय में यह एक उपयोगी दस्तावेज सिद्ध हो सकती है।

सरकार ने जाति आधारित जनगणना सर्वेक्षण को दो चरणों में पूरा करने का लक्ष्य रखा था। पहला चरण 7 जनवरी, 2023 से शुरू हुआ जिसमें आवासीय मकानों पर नंबर डाले गए। यह काम 15 दिन चला। सर्वेक्षण के दूसरे चरण की शुरूआत 15 अप्रैल से शुरू गया है। इस चरण में जिनके घरों को पहली चरण में चिन्हित किया गया है उस घरों में रहने वाले लोगों की जाति, उपजाति, सामाजिक-आर्थिक स्थिति आदि की सूचना एकत्र किया जा रहा था। इस सर्वेक्षण को पूरा करने का लक्ष्य 31 मई, 2023 तक रखा गया था। इस सर्वेक्षण में जाति की गिनती समेत 26 प्रकार की जानकारियां लोगों से ली जा रही थी।

बिहार सरकार ने जातीय गणना के लिए जाति क्रमांक (कोड) बनाया है। पहली जाति गणना के लिए 216 कोड तैयार किया था, जिसपर विवाद होने पर उसे संशोधित कर 215 किया है, जिस पर जाति आधारित जनगणना (सर्वेक्षण) चल रहा था। इस सर्वेक्षण में 22 जनवरी 2023 से लेकर दूसरे चरण की समाप्ति तक जन्म लिए नवजात बच्चों की गणना नहीं करने का प्रावधान किया गया है।

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने 15 अप्रैल 2023 को बख्तियारपुर स्थित अपने पैतृक घर से जाति आधारित सर्वेक्षण के दूसरे चरण का शुभारंभ किया था। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बताया था कि डाटा का यह काम पूरा होने के बाद, जाति आधारित सर्वे की रिपोर्ट, बिहार विधानसभा और बिहार विधान परिषद के पटल पर रखी जाएगी। उसके बाद रिपोर्ट सार्वजनिक की जाएगी। जाति आधारित जनगणना का कार्य लक्ष्य से पहले 10 मई तक पूरा होने की संभावना थी। जनगणना पूरा होने के बाद पाँच दिन तक छूटे हुए परिवार या उसमें त्रुटि सुधार का कम किया जाना था।

दूसरे चरण में जिन अनिवार्य 17 प्रश्नों को पूछा जा रहा था उसमें, परिवार के सदस्य का पूरा नाम, पिता/पति का नाम, परिवार के प्रधान से संबंध, आयु (वर्ष में), लिंग, वैवाहिक स्थिति, धर्म, जाति का नाम, शैक्षणिक योग्यता (प्री-प्राइमरी से पोस्ट मास्टर डिग्री), कार्यकलाप [संगठित या असंगठित क्षेत्र में सरकारी से लेकर निजी नौकरी, स्वरोजगार, किसान (कृषि भूमि के मालिक), कृषि मजदूर, निर्माण मजदूर, अन्य मजदूर, कुशल मजदूर, भिखारी, चीर-फाड़ करने वाले, छात्र, गृहिणी से लेकर जिनके पास कोई नहीं है काम], आवासीय स्थिति (पक्का/फूस का घर, झोपड़ी या बेघर), अस्थायी प्रवासीय स्थिति (कार्य या अध्ययन का स्थान, चाहे राज्य के भीतर या बाहर, देश या विदेश में), कंप्यूटर / लैपटॉप (इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ या उसके बिना), मोटरयान (दोपहिया, तिपहिया, चौपहिया, छह पहिया या अधिक, ट्रैक्टर), कृषि भूमि (0-50 डिसमिल से 5 एकड़ और उससे अधिक का क्षेत्र), आवासीय भूमि (5 डिसमिल से 20 डिसमिल और उससे अधिक भूमि का क्षेत्रफल; एक बहुमंजिला अपार्टमेंट में फ्लैट का मालिक), सभी श्रोतों से मासिक आय (न्यूनतम 0- 6,000 से लेकर अधिकतम 50,000 और अधिक) शामिल था।सरकार ने एप में ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित की थी कि अगर कोई व्यक्ति दो बार नाम लिखाने का प्रयास करेगा तो एप ऐसे लोगों को चिन्हित कर लेगा।

> **“ सरकार ने जाति आधारित जनगणना सर्वेक्षण को दो चरणों में पूरा करने का लक्ष्य रखा था। पहला चरण 7 जनवरी, 2023 से शुरू हुआ जिसमें आवासीय मकानों पर नंबर डाले गए। यह काम 15 दिन चला। सर्वेक्षण के दूसरे चरण की शुरूआत 15 अप्रैल से शुरू गया है। इस चरण में जिनके घरों को पहली चरण में चिन्हित किया गया है।**

रक्षाबंधन बंधन 31 अगस्त को मनाया जायेगा

आभा सिन्हा, पटना,

ग्रह-गोचर ने बिगाड़ी भाई- बहन का रक्षाबंधन। इस वर्ष लोगों के बीच यह संशय व्याप्त है कि रक्षाबंधन 30 अगस्त को होगी या 31 अगस्त को। ब्राह्मणों की माने तो कोई 30 और कोई 31 बता रहे है। सर्वविदित है कि रक्षाबंधन श्रावणी पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है और इस वर्ष पूर्णिमा 30 अगस्त को सुबह 10.58 बजे से शुरू होकर 31 अगस्त को प्रातः 7.05 बजे तक रहेगा। विशेषज्ञों का माने तो समय में थोड़ा आगे पीछे हो सकता है, क्योंकि हर पञ्चांग में थोड़ा बहुत अंतर रहता है। लेकिन 30 अगस्त को रात 9.01 बजे तक भद्रा रहेगा। भद्रा काल में रक्षाबंधन और होलिका दहन वर्जित है। इसे शुभ नहीं माना जाता है। मान्यता है कि भद्रा का असर स्वर्ग लोक में शुभ, पाताल लोक में धन और पृथ्वी लोक में मृत्यु होता है। इसलिए भद्रा काल में शुभ काम वर्जित होता है। इसलिए उदयातिथि को ध्यान में रखते हुए रक्षाबंधन इस वर्ष 31 अगस्त को मनाया जाना श्रेयस्कर और पुण्यकारी होगा। ज्योतिषाचार्य के अनुसार इस वर्ष रक्षाबंधन 31 अगस्त को शतभिषा नकछत्र तथा बुद्धदित्य योग में मनाया जायेगा। यह योग और नकछत्र शुभ कहलाता है। रक्षाबंधन भाई का बहन के प्रति प्यार का प्रतीक है। इस दिन बहन अपने भाइयों की कलाई में राखी बांध कर उनकी दीघार्यु रहने के लिए भगवान से प्रार्थना करती हैं, ताकि विपत्ति आने के दौरान वे उनकी (अपनी बहन की) रक्षा कर सकें। राखी बांधने के बदले में भाई, अपनी बहन की हर प्रकार के अहित से रक्षा करने का वचन देते हुए पारम्परिक उपहार देते हैं। रक्षाबंधन मुख्यतः उत्तर भारत में मनाया जाता है।भारत के अतिरिक्त दूसरे देशों में जैसे- नेपाल में भी भाई बहन के प्यार का प्रतीक मानकर खूब हर्षोल्लास से मनाया जाता है। रक्षाबंधन का इतिहास पौराणिक कथाओं के अनुसार, शिशुपाल का वध करते समय श्रीकृष्ण की तर्जनी में चोट आ गई, तो द्रौपदी ने लहू रोकने के लिए अपनी साड़ी फाड़कर उनकी उंगली पर बांध दी थी, इस दिन श्रावण मास की पूर्णिमा का दिन था और श्रीकृष्ण ने उनकी रक्षा करने का वचन दिया था, जिसे श्रीकृष्ण ने महाभारत में पांडवों की पत्नी द्रौपदी की चीरहरण के समय उनकी लाज बचाकर यह कर्ज चुकाया था। इस प्रकार भाई-बहन का बंधन विकसित हुआ था। उसी समय से राखी बांधने का परम्परा शुरू हुआ।

इतिहासकारों के अनुसार रक्षाबंधन की शुरूआत लगभग 6 हजार साल पहले बताई गई है। इसके कई साक्ष्य भी दर्ज हैं। रक्षाबंधन की शुरूआत की जिसमें सबसे पहला साक्ष्य रानी कर्णावती व सम्राट हुमायूँ की है। मध्यकालीन युग में राजपूत व मुस्लिमों के बीच संघर्ष चल रहा था। उस समय चित्तौड़ के राजा की विधवा रानी कर्णावती ने गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह से अपनी और अपनी प्रजा की सुरक्षा का कोई रास्ता न निकलता देख हुमायूं को राखी भेजी थी, तब हुमायूं ने उनकी रक्षा कर उन्हें बहन का दर्जा दिया था।

वर्तमान में रक्षाबंधन जीवन की प्रगति और मैत्री की ओर ले जाने वाली एकता का एक बड़ा पवित्र पर्व माना जाता है। रक्षा का अर्थ है बचाव, और मध्यकालीन भारत में जहां कुछ स्थानों पर, महिलाएं असुरक्षित महसूस करती थी, तो वे पुरूषों को अपना भाई मानते हुए उनकी कलाई पर राखी बांधती थी। इस प्रकार राखी भाई और बहन के बीच प्यार के बंधन को मजबूत बनाती है और भावनात्मक बंधन को पुनर्जीवित करती है। धार्मिक स्तर पर रक्षाबंधन के दिन ब्राह्मण अपने पवित्र जनेऊ को बदलते हैं और एक बार पुनः धर्म ग्रंथों के अध्ययन के प्रति स्वयं को समर्पित करते हैं।

> ज्योतिषाचार्य के अनुसार इस वर्ष रक्षाबंधन 31 अगस्त को शतभिषा नकछत्र तथा बुद्धदित्य योग में मनाया जायेगा। यह योग और नकछत्र शुभ कहलाता है। रक्षाबंधन भाई का बहन के प्रति प्यार का प्रतीक है। इस दिन बहन अपने भाइयों की कलाई में राखी बांध कर उनकी दीघार्यु रहने के लिए भगवान से प्रार्थना करती हैं, ताकि विपत्ति आने के दौरान वे उनकी (अपनी बहन की) रक्षा कर सकें।

ग्राम केन्द्रित अर्थव्यवस्था के विकास के लिए प्रयास करे ग्राम संसद : राज्यपाल

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने होटल मौर्या, पटना में आयोजित ग्राम संसद -बिहार चैप्टर कॉन्क्लेव के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि ग्राम संसद को ग्राम केन्द्रित अर्थव्यवस्था के विकास के लिए प्रयास करना चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि गाँवों में उपलब्ध संसाधनों को विकसित कर ग्रामवासियों को रोजगार उपलब्ध कराया जाना चाहिए। ग्राम संसद का लक्ष्य होना चाहिए कि ग्रामीणों को रोजगार के लिए बाहर नहीं जाना पड़ें। उन्होंने कहा कि किसानों को प्राकृतिक खेती, बहुफसली कृषि तथा वनौषधियों की खेती के लिए प्रेरित करने के साथ-साथ उन्हें इसके लिए उचित मार्गदर्शन किया जाना चाहिए ताकि खेतों की उर्वरा शक्ति बनी रहे तथा किसानों की आय में भी वृद्धि हो सके। गाँवों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग आदि की सुविधायें उपलब्ध होने चाहिए। ग्राम संसद को ग्राम केंद्रित अर्थव्यवथा के विकास के लिए प्रयास करना चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि हरेक गाँव का अपना वेबसाईट होना चाहिए जिसमें उस गाँव की विशेषताओं से संबंधित जानकारियाँ उपलब्ध हो। इससे उस गाँव की पहचान पूरी दुनियाँ में हो सकेगी। उन्होंने कहा कि गाँव हमारा प्राण है। गाँधीजी के रामराज्य की परिकल्पना ग्राम राज्य की ही थी। हम सबका कत्र्तव्य है कि गाँवों के समुचित विकास के लिए प्रयत्न करें तभी सही अर्थों में गाँवों में बसनेवाले भारत का विकास हो सकेगा। इस अवसर पर राज्यपाल ने उत्कृष्ट कार्य करनेवाले विभिन्न पंचायतों के मुखियागण को सम्मानित भी किया। कार्यक्रम को बिहार के माननीय पंचायती राज मंत्री श्री मुरारी प्रसाद गौतम तथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ॰ सी॰पी॰ ठाकुर ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर ग्राम संसद के संरक्षक माननीय विधान पार्षद डॉ॰ संजय मयूख, ग्राम संसद के सह-संस्थापक श्री ब्रजेश शर्मा एवं श्री दीपक ठाकुर, योग संस्कृति न्यास के संस्थापक आचार्य श्री धर्मवीर तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

“ राज्यपाल ने कहा कि हरेक गाँव का अपना वेबसाईट होना चाहिए जिसमें उस गाँव की विशेषताओं से संबंधित जानकारियाँ उपलब्ध हो। इससे उस गाँव की पहचान पूरी दुनियाँ में हो सकेगी। उन्होंने कहा कि गाँव हमारा प्राण है। गाँधीजी के रामराज्य की परिकल्पना ग्राम राज्य की ही थी। हम सबका कत्र्तव्य है कि गाँवों के समुचित विकास के लिए प्रयत्न करें तभी सही अर्थों में गाँवों में बसनेवाले भारत का विकास हो सकेगा।

राज्यपाल से भारतीय प्रशासनिक सेवा के 10 प्रशिक्षु पदाधिकारियों ने मुलाकात की

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर से भारतीय प्रशासनिक सेवा के 2021 बैच के बिहार संवर्ग के 10 प्रशिक्षु पदाधिकारियों ने राजभवन आकर मुलाकात की।

इस अवसर पर राज्यपाल ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा कि वे युवा, ऊजार्वान और सक्षम पदाधिकारी हैं तथा समाज और आमजन को उनसे काफी उम्मीदें हैं। अतः वे सकारात्मक सोच और व्यापक दृष्टिकोण के साथ आम जन की बेहतरी के लिए कार्य करें। राज्यपाल ने उनसे कहा कि वे लोगों से मिलें और उनसे जुड़े तथा उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनें। इससे लोगों की समस्याओं के बारे में उन्हें वास्तविक जानकारी मिल सकेगी और वे उनका समाधान कर सकेंगे।

राज्यपाल ने कहा कि बिहार न केवल सांस्कृतिक बल्कि पारिस्थितिक रूप से भी समृद्ध है। यहाँ की अनेक चीजों को वैश्विक पहचान दिलाने की

आवश्यकता है। बिहार में पर्यटन के क्षेत्र में भी विकास की काफी संभावनाएँ हैं। उन्होंने प्रशिक्षु पदाधिकारियों से कहा कि वे बिहार के विकास के लिए अपनी पूरी क्षमता के साथ कार्य करें।

प्रशिक्षु पदाधिकारियों ने भी जिला एवं प्रखंड में प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त अपने अनुभवों को राज्यपाल के साथ साझा किया।

> इस अवसर पर राज्यपाल ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा कि वे युवा, ऊजार्वान और सक्षम पदाधिकारी हैं तथा समाज और आमजन को उनसे काफी उम्मीदें हैं। अतः वे सकारात्मक सोच और व्यापक दृष्टिकोण के साथ आम जन की बेहतरी के लिए कार्य करें। राज्यपाल ने उनसे कहा कि वे लोगों से मिलें और उनसे जुड़े तथा उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनें। इससे लोगों की समस्याओं के बारे में उन्हें वास्तविक जानकारी मिल सकेगी ।

भारत की शक्ति आध्यात्मिकता में निहित है : राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर

भारत की शक्ति आध्यात्मिकता में निहित है और यह जितनी सुदृढ़ होगी, विश्व में हमारी साख उतनी की बढ़ती जाएगी। यह बातें महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने अन्तर्राष्ट्रीय चिन्मय मिशन के 71वें स्थापना दिवस के अवसर पर आशियाना-रामनगरी रोड स्थित एक होटल में आयोजित कार्यक्रम में कही। उन्होंने कहा कि केरल राज्य ने सैकडों वर्ष पूर्व हमें आदिशंकराचार्य और इस शताब्दी में स्वामी चिन्मयानंद जी को दिया। इन दोनों महापुरूषों के विचारों में समानता थी। शंकराचार्य अद्वैतदर्शन के मुख्य प्रवर्तक थे। उन्होंने भारत में चार पीठों की स्थापना की। स्वामी चिन्मयानंद जी ने भी सनातन परम्परा के रक्षार्थ अपने जीवन के एक-एक क्षण को समर्पित कर दिया। उन्होंने श्रीमद्भगवतगीता को जीवन का आधार बनाकर देश के विभिन्न राज्यों में इसका प्रचार किया तथा वह गीता ज्ञान यज्ञ की निरंतरता के लिए लगातार प्रयत्नशील रहे। स्वामी चिन्मयानंद जी एक सच्चे कर्मयोगी थे और आज भी वह हमारे विचारों में हैं।

कार्यक्रम को पटना उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री शिवाजी पाण्डेय तथा विश्व हिन्दू परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ॰ आर॰एन॰ सिंह ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर चिन्मय मिशन, पटना के महासचिव श्री सुभाष चन्द्र एवं सदस्य डॉ॰ बसंत कुमार सिन्हा, भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ॰ विजय किशोरपुरिया, माँ वैष्णो देवी सेवा समिति के अध्यक्ष श्री जगजीवन सिंह एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

> राज्यपाल ने कहा कि हरेक गाँव का अपना वेबसाईट होना चाहिए जिसमें उस गाँव की विशेषताओं से संबंधित जानकारियाँ उपलब्ध हो। इससे उस गाँव की पहचान पूरी दुनियाँ में हो सकेगी। उन्होंने कहा कि गाँव हमारा प्राण है। गाँधीजी के रामराज्य की परिकल्पना ग्राम राज्य की ही थी। हम सबका कत्र्तव्य है कि गाँवों के समुचित विकास के लिए प्रयत्न करें तभी सही अर्थों में गाँवों में बसनेवाले भारत का विकास हो सकेगा।

सौर व पवन ऊर्जा में भारत के कदम बेहतरी की ओर

आज भारत समेत संपूर्ण विश्व की जनसंख्या लगातार बढ़ती चली जा रही है और बढ़ती हुई जनसंख्या के बीच आज के इस आधुनिक समाज की अधिकांश गतिविधियों के लिये ऊर्जा अत्यंत आवश्यक है। इसके पीछे कारण यह है कि ऊर्जा के उपयोग या उपभोग को सामान्यतः जीवन स्तर के सूचकांक के रूप में लिया जाता है। हम ऊर्जा को जलावन की लकड़ी, जीवाश्म ईंधन, एवं विद्युत के रूप में उपयोग करते हैं जिससे हमारा जीवन आरामदायक और सुविधाजनक व सरल बनता है। ऊर्जा के दो प्रकार के स्त्रोत हैं जिनमें नवीकरणीय ऊर्जा और अनवीकरणीय ऊर्जा प्रमुख है। नवीकरणीय ऊर्जा के अंतर्गत क्रमशः सौर ऊर्जा, बायोमास, बायोडीजल, जलशक्ति (हाइड्रोपावर), पवन ऊर्जा, तरंग ऊर्जा (वेव एनर्जी), महासागरीय तापीय ऊर्जा रूपांतरण, भूतापीय ऊर्जा तथा ईंधन कोष्ठिका तकनीक(फ्यूल सैल टेक्नोलॉजी जो हाइड्रोजन को विद्युत में बदलती है) तथा अनवीकरणीय ऊर्जा के अंतर्गत क्रमशः तेल(पेट्रोलियम), प्राकृतिक गैस, कोयला, न्यूक्लियर एनर्जी आदि आते हैं। वास्तव में नवीकरणीय ऊर्जा का मतलब ऐसी ऊर्जा से है जो ऐसे स्त्रोतों से आती है जिनकी आपूर्ति कभी भी खत्म नहीं होती है और इन्हें बार-बार उत्पन्न किया जा सकता है। नवीकरणीय स्त्रोतों को कुछ ही समय के भीतर फिर से तैयार किया जा सकता है। वहीं दूसरी ओर अनवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों का भंडार सीमित मात्रा में उपलब्ध है। इनके पुनरुत्पादन की दर, खपत की अपेक्षा नगण्य(न के बराबर)है अर्थात अनवीकरणीय ऊर्जा जिसका हम इस्तेमाल कर रहे हैं, थोड़े समय में ही पुनरुत्पादित नहीं की जा सकती है या कम से कम हमारे जीवन काल में तो उसे फिर से नहीं बनाया जा सकता है। बहरहाल, आज हमारा देश भारत क्लीन और ग्रीन एनर्जी की ओर लगातार अपने कदम बढ़ा रहा है। सच तो यह है कि आज हमारा देश भारत पवन और सौर ऊर्जा में एक नेतृत्वकर्ता देश के रूप में इस विश्व पटल पर उभरता चला जा रहा है और भारत में पवन और सौर ऊर्जा की असीम संभावनाएं मौजूद हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो आज के समय में हम सौर और पवन ऊर्जा में वैश्विक नेतृत्वकर्ता की भूमिका में हैं। जानकारी देना चाहूंगा कि हाल ही में 22 जुलाई 2023 को गोवा में आयोजित जी-20 ऊर्जा मंत्रियों की बैठक को संबोधित करते हुए(विडियो संदेश के माध्यम से)भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यह बात कही है कि आज भारत दुनिया में सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है और दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था है, लेकिन फिर भी वह अपनी जलवायु संबंधी प्रतिबद्धताओं की दिशा में मजबूती से आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री ने यह बात कही है कि भारत ने गैर-जीवाश्म स्थापित विद्युत क्षमता के अपने लक्ष्य को निर्धारित समय से नौ साल पहले ही प्राप्त कर लिया है और उसने अपने लिए एक ऊंचा लक्ष्य निर्धारित किया है।उन्होंने इस बात का उल्लेख किया है कि देश 2030 तक 50 प्रतिशत गैर-जीवाश्म स्थापित क्षमता हासिल करने की योजना बना रहा है। आज भारत लगातार समावेशी, सुदृढ़, न्यायसंगत और स्थायी ऊर्जा की दिशा में काम कर रहा है। भारत एक कृषि प्रधान देश है और यह बहुत ही सुखद है कि आज कृषि पंपों में सौर ऊर्जा का प्रयोग किया जा रहा है। कुसुम योजना एक ऐसी ही योजना है। सच तो यह है कि कुसुम योजना किसानों की बिजली सम्बन्धी सभी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम है, जिसका उद्देश्य भारत के किसानों को सोलर पंप लगाकर उनकी कृषि को बेहतर बनाना है, कुसुम योजना में किसान सोलर पंप के कुल लागत का मात्र 10% प्रतिशत भुगतान कर अपनी आवयश्कता के अनुसार सोलर प्लांट लगा सकते हैं। जानकारी मिलती है कि किसानों को सोलर पंप लगवाने के लिए इस योजना के तहत 90% तक सब्सिडी दी जाती है।इसमें केंद्र और राज्य सरकारें 30-30% सब्सिडी और देती हैं और बाकी 30% बैंकों द्वारा लोन लिया जा सकता है। कहना गलत नहीं होगा कि भारत ने कृषि पंपों में सौर ऊर्जा के प्रयोग से जुड़ी दुनिया की

सबसे बड़ी पहल शुरू की है। इतना ही नहीं,यह बहुत ही काबिलेतारिफ है कि इस साल भारत द्वारा 20% इथेनॉल-मिश्रित पेट्रोल का रोलआउट शुरू किया गया है, और सरकार का लक्ष्य 2025 तक पूरे देश को कवर करना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यह बात कही है कि आज हमें प्रौद्योगिकी अंतराल को पाटने, ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ावा देने और आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने के तरीकों को खोजने की जरूरत है। यहां कहना गलत नहीं होगा कि वर्तमान में रूस यूक्रेन युद्ध का संपूर्ण विश्व पर बहुत ही बुरा असर पड़ा है। युद्ध से अर्थव्यवस्थाओं पर बहुत गहरा और बुरा असर पड़ा है। इससे विकास कहीं न कहीं पर बाधित हुआ है।मुद्रास्फीति की दर में अभूतपूर्व बढ़ोत्तरी देखने को मिली है, आपूर्ति श्रृंखलाएं बाधित हुई हैं। यहां तक कि युद्ध से ऊर्जा और खाद्य असुरक्षा बढ़ी है, और वित्तीय स्थिरता का जोखिम तो बढ़ा ही है। बहरहाल, आज भारत सौर ऊर्जा के सर्वोत्तम दोहन की राह पर चल रहा है और हमारे देश की सौर नीति घरेलू स्तर पर स्वच्छ ऊर्जा पैदा करने पर केंद्रित है। आज धीरे-धीरे जीवाश्म ईंधन के बेरोकटोक इस्तेमाल को चरणबद्ध तरीके से कम किया जा रहा है और इस दिशा में कदम उठाए जा रहे हैं। आज गैर परंपरागत ऊर्जा के स्त्रोतों जैसे कि सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, बायोगैस और परमाणु ऊर्जा पर लगातार ध्यान केंद्रित किया जा रहा है और परम्परागत ऊर्जा के स्त्रोतों जैसे कि जलावन,उपले, कोयला, पेट्रोलियम का उपयोग कम किए जाने की ओर ध्यान दिया जा रहा है ताकि प्रकृति का भी संरक्षण हो सके।

> “ बहरहाल, आज हमारा देश भारत क्लीन और ग्रीन एनर्जी की ओर लगातार अपने कदम बढ़ा रहा है। सच तो यह है कि आज हमारा देश भारत पवन और सौर ऊर्जा में एक नेतृत्वकर्ता देश के रूप में इस विश्व पटल पर उभरता चला जा रहा है और भारत में पवन और सौर ऊर्जा की असीम संभावनाएं मौजूद हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो आज के समय में हम सौर और पवन ऊर्जा में वैश्विक नेतृत्वकर्ता की भूमिका में हैं।

संसद में चिराग ने विपक्ष पर साधा निशाना, उठाए कई सवाल कहा- मणिपुर जाने वाले दरभंगा-मुजफ्फरपुर क्यों नहीं गए

राकेश कुमार

उभरता बिहार न्यूज संपादक

लोकसभा में गुरुवार को जुमई सांसद और लोजपा (रा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने कहा यह अनोखा अविश्वास प्रस्ताव है। यह अविश्वास सरकार के प्रति कम और विश्वास बढ़ाने के लिए अपने नए गठबंधन के अधिक दिख रहा है। चिराग ने बिहार के सीएम नीतीश कुमार पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार को बिहार की जनता रिजेक्ट कर चुकी है।

चिराग पासवान ने कहा कि कुछ दिनों पहले विपक्ष के सांसद मणिपुर गए थे। जो लोग मणिपुर गए थे, वह लोग बिहार के दरभंगा क्यों नहीं गए? क्यों नहीं अरवल गए? क्यों नहीं ये लोग मुजफ्फरपुर गए? अभी बच्छवाड़ा में 10 साल की बच्ची के साथ रेप किया गया और उसको तेजाब से जलाकर मार दिया गया। उसके शरीर को घर के अंदर 10 फीट गड् ढे.में दफना दिया गया। मुजफ्फरपुर में दलित महिला के साथ दुष्कर्म किया गया और उसके शरीर को दो टुकड़ा कर खेत में फेंक दिया गया।

चिराग ने कहा ये देश एक है। आप इसे टुकड़ों में देख रहे हैं। यही कारण है कि देश की जनता का विश्वास प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर है। इससे हर चुनाव के विश्वास बढ़ता जा रहा है। वो दिन दूर नहीं 2024 में 2014 और 2019 से भी बड़ा जनादेश मिलेगा। चिराग ने दावा करते हुए कहा कि लोकसभा चुनाव में ठउअ गठबंधन को बिहार के सभी 40 सीटों पर जीत दर्ज करेगी। इसमें कहीं कोई शंका नहीं है। नीतीश कुमार को जनता कर चुकी है रिजेक्टःसंसद में चिराग ने विपक्ष पर उठाए सवाल, कहा- मणिपुर जाने वाले दरभंगा-मुजफ्फरपुर क्यों नहीं गए

पटनाएक दिन पहले

सदन में अपनी बात रखते जमुई सांसद चिराग पासवान।

सदन में अपनी बात रखते जमुई सांसद चिराग पासवान।

लोकसभा में गुरुवार को जुमई सांसद और लोजपा (रा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने कहा यह अनोखा अविश्वास प्रस्ताव है। यह अविश्वास सरकार के प्रति कम और विश्वास बढ़ाने के लिए अपने नए गठबंधन के अधिक दिख रहा है। चिराग ने बिहार के सीएम नीतीश कुमार पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार को बिहार की जनता रिजेक्ट कर चुकी है।

चिराग पासवान ने कहा कि कुछ दिनों पहले विपक्ष के सांसद मणिपुर गए थे। जो लोग मणिपुर गए थे, वह लोग बिहार के दरभंगा क्यों नहीं गए? क्यों नहीं अरवल गए? क्यों नहीं ये लोग मुजफ्फरपुर गए? अभी बच्छवाड़ा में 10 साल की बच्ची के साथ रेप किया गया और उसको तेजाब से जलाकर मार दिया गया। उसके शरीर को घर के अंदर 10 फीट गड् ढे.में दफना दिया गया। मुजफ्फरपुर में दलित महिला के साथ दुष्कर्म किया गया और उसके शरीर को दो टुकड़ा कर खेत में फेंक दिया गया।

40 सीटों पर जीत कर किया दावा

चिराग ने कहा ये देश एक है। आप इसे टुकड़ों में देख रहे हैं। यही कारण है कि देश की जनता का विश्वास प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर है। इससे हर चुनाव के विश्वास बढ़ता जा रहा है। वो दिन दूर नहीं 2024 में 2014 और 2019 से भी बड़ा जनादेश मिलेगा। चिराग ने दावा करते हुए कहा कि लोकसभा चुनाव में ठउअ गठबंधन को बिहार के सभी 40 सीटों पर जीत दर्ज करेगी। इसमें कहीं कोई शंका नहीं है।

कैसे अपनाएगी देश की जनता?

चिराग ने कहा कि मैं जमुई से प्रतिनिधित्व करता हूं। मेरे नेता और पिता राम

> चिराग पासवान ने कहा कि कुछ दिनों पहले विपक्ष के सांसद मणिपुर गए थे। जो लोग मणिपुर गए थे, वह लोग बिहार के दरभंगा क्यों नहीं गए? क्यों नहीं अरवल गए? क्यों नहीं ये लोग मुजफ्फरपुर गए? अभी बच्छवाड़ा में 10 साल की बच्ची के साथ रेप किया गया और उसको तेजाब से जलाकर मार दिया गया। उसके शरीर को घर के अंदर 10 फीट गड्ढे.में दफना दिया गया। मुजफ्फरपुर में दलित महिला के साथ दुष्कर्म किया गया और उसके शरीर को दो टुकड़ा कर खेत में फेंक दिया गया।

विलास पासवान की कर्मभूमि हाजीपुर रही है। हर एक जिले में घूमा हूं। वो मेरे विश्वास को बढ़ाता है। बिहार और देश भर के युवा भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था बनते हुए देखना चाहते हैं। 2047 में हमारे देश को एक विकसित देश बनते हुए देखना चाहते हैं। इस सपने को कोई पूरा कर सकता है तो वो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं।

चिराग जब सदन में बोल रहे थे तो एक सांसद ने कहा कि नीतीश कुमार को भी हराएंगे। तब चिराग ने कहा कि बिल्कुल हराएंगे। चिराग ने कहा कि वैसे भी नीतीश कुमार को बिहार की जनता पूरी तरह से नकार चुकी है। जिस मुख्यमंत्री को बिहार की जनता ने रिजेक्ट कर दिया है, जिसे देश की जनता कैसे अपनाएगी? अपनी बातों को रखते हुए जमुई सांसद ने कहा कि 1990 के दशक में भी मणिपुर में इसी तरह की परिस्थितियां थी। उस वक्त किसकी सरकार थी? क्या उस वक्त की सरकार ने मौजूदा सरकार को कोई इनपुट दिया? उस वक्त सरकार में बैठे लोगों ने कितनी बार सदन में इस पर चर्चा की? किन लोगों ने चर्चा में हुए सवालों का जवाब दिया? ये लोग मणिपुर गए थे। बहुत अच्छी बात है। जाना भी चाहिए, पर ये कलेक्टिव रिस्पांसिबिलिटी होनी चाहिए, सेलेक्टिव रिस्पांसबिलिटी नहीं। हकीकत है कि देश के किसी भी कोने में किसी भी मां-बेटी के साथ ऐसी घटना हो रही है तो वो अक्षम्य है। वो निंदनीय है। उसको कोई बर्दाश्त नहीं कर सकता। पूरे सदन को इस पर एकजुट होना होगा। केंद्रीय गृह मंत्री ने जिस तरह से अपील की, उस पर सभी को एकजुट होना होगा। इसमें आप आइसोलेट रह कर नहीं देख सकते कि जहां आपकी सरकार है, वहां की घटनाओं को आप छीपाएंगे और जहां दूसरों की सरकार है वहां की घटनाओं को आप उठाएंगे। आपको चर्चा करनी होगी बंगाल पर, चर्चा करनी होगी बिहार, राजस्थान और कर्नाटक पर।

> चिराग ने कहा कि मैं जमुई से प्रतिनिधित्व करता हूं। मेरे नेता और पिता राम विलास पासवान की कर्मभूमि हाजीपुर रही है। हर एक जिले में घूमा हूं। वो मेरे विश्वास को बढ़ाता है। बिहार और देश भर के युवा भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था बनते हुए देखना चाहते हैं। 2047 में हमारे देश को एक विकसित देश बनते हुए देखना चाहते हैं। इस सपने को कोई पूरा कर सकता है तो वो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं।

नयी विश्व संरचना में युवकों की भागीदारी हो

युवा किसी भी देश का वर्तमान और भविष्य हैं। वो देश की नींव हैं, जिस पर देश की प्रगति और विकास निर्भर करता है। लेकिन आज भी बहुत से ऐसे विकसित और विकासशील राष्ट्र हैं, जहाँ नौजवान ऊर्जा व्यर्थ हो रही है। दुनिया में युवा शक्ति को रचनात्मक एवं सृजनात्मक दिशाओं में नियोजित करके ही नयी विश्व-संरचना बना सकते हैं, क्योंकि युवा क्रांति का प्रतीक है, ऊर्जा का स्रोत है, इस क्रांति एवं ऊर्जा का समुचित उपयोग हो, इसी ध्येय से सारी दुनिया प्रतिवर्ष 12 अगस्त को अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस मनाती है। सन 2000 में अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन आरम्भ किया गया था। यह दिवस मनाने का मतलब है कि युवाशक्ति का उपयोग विध्वंस में न होकर निर्माण में हो। पूरी दुनिया की सरकारें युवा के मुद्दों और उनकी बातों पर ध्यान आकर्षित करे। न केवल सरकारें बल्कि आम-जनजीवन में भी युवकों की स्थिति, उनके सपने, उनका जीवन लक्ष्य आदि पर चचाएं हो। युवाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्तर पर भागीदारी सुनिश्चित की जाए। इन्हीं मूलभूत बातों को लेकर यह दिवस मनाया जाता है। युवा दिवस मनाने का मतलब है-एक दिन युवकों के नाम। इस दिन पूरे विश्व में युवापीढ़ी के संदर्भ में चर्चा होगी, उसके ह्रास और विकास पर चिंतन होगा, उसकी समस्याओं पर विचार होगा और ऐसे रास्ते खोजे जायेंगे, जो इस पीढ़ी को एक सुंदर भविष्य दे सकें। इसका सबसे पहला लाभ तो यही है कि संसार भर में एक वातावरण बन रहा है युवापीढ़ी को अधिक सक्षम और तेजस्वी बनाने के लिए। युवकों से संबंधित संस्थाओं को सचेत और सावधान करना होगा और कोई ऐसा सकारात्मक कार्यक्रम हाथ में लेना होगा, जिसमें निर्माण की प्रक्रिया अपनी गति से चलती रहे। विशेषतः राजनीति में युवकों की सकारात्मक एवं सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित करना होगा।

स्वामी विवेकानन्द ने भारत के नवनिर्माण के लिये मात्र सौ युवकों की अपेक्षा की थी। क्योंकि वे जानते थे कि युवा विजनरी होते हैं और उनका विजन दूरगामी एवं बुनियादी होता है। उनमें नव निर्माण करने की क्षमता होती है। नया भारत निर्मित करते हुए नरेन्द्र मोदी को भी युवाशक्ति को आगे लाना होगा। वर्तमान में कई देशों में शिक्षा के लिए जरूरी आधारभूत संरचना की कमी है तो कहीं प्रछन्न बेरोजगारी जैसे हालात हैं। इन स्थितियों के बावजूद युवाओं को एक उन्नत एवं आदर्श जीवन की ओर अग्रसर करना वर्तमान की सबसे बड़ी जरूरत है। युवा सपनों को आकार देने का अर्थ है सम्पूर्ण मानव जाति के उन्नत भविष्य का निर्माण। यह सच है कि हर दिन के साथ जीवन का एक नया लिफाफा खुलता है, नए अस्तित्व के साथ, नए अर्थ की शुरूआत के साथ, नयी जीवन दिशाओं के साथ। हर नई आंख देखती है इस संसार को अपनी ताजगी भरी नजरों से। इनमें जो सपने उगते हैं इन्हीं में नये समाज की, नयी आदमी की नींव रखी जाती है।

गांधीजी से एक बार पूछा गया कि उनके मन की आश्वस्ति और निराशा का आधार क्या है? गांधीजी बोले- इस देश की मिट्टी में अध्यात्म के कण हैं, यह मेरे लिये सबसे बड़ा आश्वासन है। पर इस देश की युवापीढ़ी के मन में करुणा का

> “ सन 2000 में अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन आरम्भ किया गया था। यह दिवस मनाने का मतलब है कि युवाशक्ति का उपयोग विध्वंस में न होकर निर्माण में हो। पूरी दुनिया की सरकारें युवा के मुद्दों और उनकी बातों पर ध्यान आकर्षित करे। न केवल सरकारें बल्कि आम-जनजीवन में भी युवकों की स्थिति, उनके सपने, उनका जीवन लक्ष्य आदि पर चचाएं हो। युवाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्तर पर भागीदारी सुनिश्चित की जाए। इन्हीं मूलभूत बातों को लेकर यह दिवस मनाया जाता है।

स्रोत सूख रहा है, यह सबसे बड़ी चिन्ता का विषय है। गांधीजी की यह चिन्ता सार्थक थी। क्योंकि किसी भी देश का भविष्य उसकी युवापीढ़ी होती है। यह जितनी जागरूक, तेजस्वी, प्रकाशवान, चरित्रनिष्ठ और सक्षम होगी, भविष्य उतना ही समुज्ज्वल और गतिशील होगा। युवापीढ़ी के सामने दो रास्ते हैं- एक रास्ता है निर्माण का दूसरा रास्ता है ध्वंस का। जहां तक ध्वंस का प्रश्न है, उसे सिखाने की जरूरत नहीं है। अनपढ़, अशिक्षित और अक्षम युवा भी ध्वंस कर सकता है। वास्तव में देखा जाए तो ध्वंस क्रिया नहीं, प्रतिक्रिया है। उपेक्षित, आहत, प्रताड़ित और महत्वाकांक्षी व्यक्ति खुले रूप में ध्वंस के मैदान में उतर जाता है। उसके लिए न योजना बनाने की जरूरत है और न सामग्री जुटाने की। योजनाबद्ध रूप में भी ध्वंस किया जाता है, पर वह ध्वंस के लिए अपरिहार्यता नहीं है। युवापीढ़ी से समाज और देश को बहुत अपेक्षाएं हैं। शरीर पर जितने रोम होते हैं, उनसे भी अधिक उम्मीदें इस पीढ़ी से की जा सकती हैं। उन्हें पूरा करने के लिए युवकों की इच्छाशक्ति संकल्पशक्ति का जागरण करना होगा। घनीभूत इच्छाशक्ति एवं मजबूत संकल्पशक्ति से रास्ते के सारे अवरोध दूर हो जाते हैं और व्यक्ति अपनी मंजिल तक पहुंच जाता है।

मूल प्रश्न है कि क्या हमारे आज के नौजवान भारत को एक सक्षम देश बनाने का स्वप्न देखते हैं? या कि हमारी वर्तमान युवा पीढ़ी केवल उपभोक्तावादी संस्कृति से जन्मी आत्मकेन्द्रित पीढ़ी है? दोनों में से सच क्या है? दरअसल हमारी युवा पीढ़ी महज स्वप्नजीवी पीढ़ी नहीं है, वह रोज यथार्थ से जूझती है, उसके सामने भ्रष्टाचार, आरक्षण का बिगड़ता स्वरूप, महंगी होती जाती शिक्षा, कैरियर की चुनौती और उनकी नैसर्गिक प्रतिभा को कुचलने की राजनीति विसंगतियां जैसी तमाम विषमताओं और अवरोधों की ढेरों समस्याएं भी हैं। उनके पास कोरे स्वप्न ही नहीं, बल्कि आंखों में किरकिराता सच भी है। इन जटिल स्थितियों से लौहा लेने की ताकत युवक में ही हैं। क्योंकि युवक शब्द क्रांति का प्रतीक है।

यौवन को प्राप्त करना जीवन का सौभाग्य है। जीने की तीन अवस्थाएं बचपन, यौवन एवं बुढ़ापा हैं, सभी युवावस्था के दौर से गुजरते हैं, लेकिन जिनमें युवकत्व नहीं होता, उनका यौवन व्यर्थ है। उनके निस्तेज चेहरे, चेतना-शून्य उच्छ्वास एवं निराश सोच मात्र ही उस यौवन की साक्षी बनते हैं, जिसके कारण न तो वे अपने लिये कुछ कर पाते हैं और न समाज एवं राष्ट्र को ही कुछ दे पाते हैं। वे इतना सतही जीवन जीते हैं कि व्यक्तिगत स्पद्धाओं एवं महत्वाकांक्षाओं में उलझकर अपने ध्येय को विस्मृत कर देते हैं। उनका यौवन कार्यकारी तो होता ही नहीं, खतरनाक प्रमाणित हो जाता है। युवाशक्ति जितनी विराट् और उपयोगी है, उतनी ही खतरनाक भी है। इस परिप्रेक्ष्य में युवाशक्ति का रचनात्मक एवं सृजनात्मक उपयोग करने की जरूरत है।

विचारों के नभ पर कल्पना के इन्द्रधनुष टांगने मात्र से कुछ होने वाला नहीं है, बेहतर जिंदगी जीने के लिए मनुष्य को संघर्ष आमंत्रित करना होगा। वह संघर्ष होगा विश्व के सार्वभौम मूल्यों और मानदंडों को बदलने के लिए। सत्ता, संपदा, धर्म और जाति के आधार पर मनुष्य का जो मूल्यांकन हो रहा है मानव जाति के हित में नहीं है। दूसरा भी तो कोई पैमाना होगा, मनुष्य के अंकन का, पर उसे काम में नहीं लिया जा रहा है। क्योंकि उसमें अहं को पोषण देने की सुविधा नहीं है। क्योंकि वह रास्ता जोखिम भरा है। क्योंकि उस रास्तें में व्यक्तिगत स्वार्थ और व्यामोह की सुरक्षा नहीं है। युवापीढ़ी पर यह दायित्व है कि संघर्ष को आमंत्रित करे, मूल्यांकन का पैमाना बदले, अहं को तोड़े, जोखिम का स्वागत करे, स्वार्थ और व्यामोह से ऊपर उठे।

अर्नाल्ड टायनबी ने अपनी पुस्तक सरवाइविंग द फ्यूचर में नवजवानों को सलाह देते हुए लिखा है मरते दम तक जवानी के जोश को कायम रखना। उनको यह इसलिये कहना पड़ा क्योंकि जो जोश उनमें भरा जाता है, यौवन के परिपक्व होते ही उन चीजों को भावुकता या जवानी का जोश कहकर भूलने लगते हैं। वे नीति विरोधी काम करने लगते है, गलत और विध्वंसकारी दिशाओं की ओर अग्रसर हो जाते हैं। इसलिये युवकों के लिये जरूरी है कि वे जोश के साथ होश कायम रखे। वे अगर ऐसा कर सके तो भविष्य उनके हाथों संवर सकता है। इसीलिये सुकरात को भी नवयुवकों पर पूरा भरोसा था। वे जानते थे कि नवयुवकों का दिमाग उपजाऊ जमीन की तरह होता है। उन्नत विचारों का जो बीज बो दें तो वही उग आता है। एथेंस के शासकों को सुकरात का इसलिए भय था कि वह नवयुवकों के दिमाग में अच्छे विचारों के बीज बोने की क्षमता रखता था। आज की युवापीढ़ी में उर्वर दिमागों की कमी नहीं है मगर उनके दिलो दिमाग में विचारों के बीज पल्लवित कराने वाले स्वामी विवेकानन्द और सुकरात जैसे लोग दिनोंदिन घटते जा रहे हैं। कला, संगीत और साहित्य के क्षेत्र में भी ऐसे कितने लोग हैं, जो नई प्रतिभाओं को उभारने के लिए ईमानदारी से प्रयास करते हैं? हेनरी मिलर ने एक बार कहा था- मैं जमीन से उगने वाले हर तिनके को नमन करता हूं। इसी प्रकार मुझे हर नवयुवक में वट वृक्ष बनने की क्षमता नजर आती है। महादेवी वर्मा ने भी कहा है बलवान राष्ट्र वही होता है जिसकी तरुणाई सबल होती है। इसीलिये युवापीढ़ी पर यह दायित्व है कि वह युवा दिवस पर कोई ऐसी क्रांति घटित करे, जिससे युवकों की जीवनशैली में रचनात्मक परिवर्तन आ सके, हिंसा-आतंक-विध्वंस की राह को छोड़कर वे निर्माण की नयी पगडंडियों पर अग्रसर हो सके।

“ यौवन को प्राप्त करना जीवन का सौभाग्य है। जीने की तीन अवस्थाएं बचपन, यौवन एवं बुढ़ापा हैं, सभी युवावस्था के दौर से गुजरते हैं, लेकिन जिनमें युवकत्व नहीं होता, उनका यौवन व्यर्थ है। उनके निस्तेज चेहरे, चेतना-शून्य उच्छ्वास एवं निराश सोच मात्र ही उस यौवन की साक्षी बनते हैं, जिसके कारण न तो वे अपने लिये कुछ कर पाते हैं और न समाज एवं राष्ट्र को ही कुछ दे पाते हैं। वे इतना सतही जीवन जीते हैं कि व्यक्तिगत स्पद्धाओं एवं महत्वाकांक्षाओं में उलझकर अपने ध्येय को विस्मृत कर देते हैं।

अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में लोहा मनवा रहा इसरो !

हाल ही में 14 जुलाई का दिन इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गया। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने चंद्रयान-3 को सफलतापूर्वक लांच कर दिया। इसरो के सभी वैज्ञानिकों को इसके लिए सर्वप्रथम हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। 14 जुलाई 2023 को 2 बजकर 35 मिनट पर आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन सेंटर से इस मिशन के तहत चंद्रयान -3 को लांच कर दिया गया। भारत ऐसा देश है जिसने बहुत कम लागत और बहुत कम समय में यह कर दिखाया है कि उसके अंतरिक्ष कार्यक्रम किसी भी विकसित देश से कतई कमतर नहीं हैं। वास्तव में, दुनिया के जिन भी देशों ने अब तक चंद्रमा पर जो भी अन्वेषण कार्य किया है, वे अब तक उस तरह की उपलब्धि हासिल नहीं कर पाए हैं जो चंद्रयान अभियानों के दौरान भारत ने अर्जित की है। यह हमें गौरवान्वित करता है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि इस अंतरिक्ष अभियान के तहत यानी 41 दिन की अपनी यात्रा में चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र पर एक बार फिर इसरो मिशन के तहत चांद पर सॉफ्ट लैंडिंग का प्रयास करेगा ,जहां अभी तक दुनिया का कोई भी देश नहीं पहुंच पाया है। यहां पाठकों को यह जानना बहुत ही महत्वपूर्ण और जरूरी है कि भारत ऐसा देश रहा है जिसने अपने अंतरिक्ष कार्यक्रमों की शुरूआत साईकिल जैसी छोटी चीज का इस्तेमाल करते हुए अपनी अंतरिक्ष यात्रा अन्य देशों की तुलना में बहुत बाद में शुरू की थी, लेकिन बावजूद इसके भारत ने दुनिया को यह दिखा दिया है कि अंतरिक्ष कार्यक्रमों के मामलों में उसका कोई सानी और प्रतिस्पर्धी नहीं है। भारत ने बहुत ही कम समय में उन लक्ष्यों और उद्देश्यों को हासिल करने में सफलता पाई है जो दुनिया के विकसित देशों के लिए एक टेढ़ी खीर है। दुनिया के बड़े और विकसित देशों अमेरिका,रूस, जर्मनी, फ्रांस, जापान,चीन ने भी अब तक चांद के मामले में वे उपलब्धियां हासिल नहीं की हैं जो भारत ने हासिल की हैं। जानकारी देना चाहूंगा कि चंद्रयान -2 मिशन एक अत्यधिक जटिल मिशन था,

> “ भारत ने बहुत ही कम समय में उन लक्ष्यों और उद्देश्यों को हासिल करने में सफलता पाई है जो दुनिया के विकसित देशों के लिए एक टेढ़ी खीर है। दुनिया के बड़े और विकसित देशों अमेरिका,रूस, जर्मनी, फ्रांस, जापान,चीन ने भी अब तक चांद के मामले में वे उपलब्धियां हासिल नहीं की हैं जो भारत ने हासिल की हैं। जानकारी देना चाहूंगा कि चंद्रयान -2 मिशन एक अत्यधिक जटिल मिशन था, जिसने इसरो के अंतरिक्ष क्षेत्र में पिछले मिशनों की तुलना में एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण तकनीकी छलांग का प्रतिनिधित्व किया।

जिसने इसरो के अंतरिक्ष क्षेत्र में पिछले मिशनों की तुलना में एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण तकनीकी छलांग का प्रतिनिधित्व किया। इसमें चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव का पता लगाने के लिए एक ऑर्बिटर, लैंडर और रोवर शामिल थे। मिशन को स्थलाकृति, भूकंप विज्ञान, खनिज पहचान और वितरण, सतह रासायनिक संरचना, शीर्ष मिट्टी की थर्मो-भौतिक विशेषताओं और कमजोर चंद्र वातावरण की संरचना के विस्तृत अध्ययन के माध्यम से चंद्र वैज्ञानिक ज्ञान का विस्तार करने के लिए डिजाइन किया गया था लेकिन इसमें थोड़ी खामी रह गई थी, बावजूद इसके इस मिशन की दुनिया के बड़े देशों द्वारा भूरी भूरी प्रशंसा की गई थी। वर्तमान में चंद्रयान-3 मिशन के तहत उन प्रयोगों का विस्तार किया गया है, जो भविष्य में चंद्रमा पर मानव जीवन की संभावना का संकेत देते हैं। उल्लेखनीय है कि 15 अगस्त, 2003 वह दिन है जब हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा चंद्रयान मिशन की औपचारिक रूप से घोषणा की गई थी। वास्तव में, चंद्रयान-3 भारत का तीसरा मून मिशन है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि चंद्रयान-2 की तरह ही चंद्रयान-3 का मकसद भी चांद के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करना है। दक्षिणी ध्रुव वो स्थान है जहां पर आज तक दुनिया का कोई भी देश नहीं पहुंच सका है। अब पाठकों के मन में यह सवाल उठना स्वाभाविक ही है कि आखिर चांद पर लैंडिंग में दक्षिणी ध्रुव का चुनाव ही क्यों किया गया है? तो इसका उत्तर सीधा सा है। दरअसल, कुछ अंतरिक्ष विज्ञानियों का यह मानना है कि दक्षिणी ध्रुव पर पानी की बर्फ अधिक है, जो मूल्यवान संसाधन है? साथ ही यहां लैंडिंग में आसानी भी रहती है। वहीं, कुछ वैज्ञानिकों का यह भी कहना है कि चांद का दक्षिणी ध्रुव सौर ऊर्जा, भौतिक संसाधनों के मामले में उत्तरी ध्रुव से कहीं अधिक बेहतर है। पाठकों को यह जानना चाहिए कि दक्षिणी ध्रुव चांद का ऊंचे पहाड़ों और गड्ढों से भरा काफी अंधेरे वाला इलाका है। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि हमेशा ठंडी रहने वाली चांद की इस क्षेत्र की उपसतह पर पानी और बर्फ मिल सकते हैं।

वैज्ञानिकों का कहना है कि चांद का दक्षिणी ध्रुव ऐटकेन बेसिन में है। यह एक विशाल गड्ढा है। यही जगह दक्षिणी ध्रुव को भौगोलिक रूप से काफी पसंदीदा बनाता है। उम्मीद है कि सतह या उसके पास चंद्रमा की गहरी परत और ऊपरी मेटल हो। कुल मिलाकर दक्षिणी ध्रुव में स्थायी छाया और ठंडे तापमान वाला इलाका काफी ज्यादा है, इसलिए माना जाता है कि वहां पानी की संभावना ज्यादा है।हालांकि चांद के दोनों ध्रुवों के बीच अंतर कुछ खास नहीं है। वैज्ञानिकों का कहना है कि चांद के दोनों ध्रुव पर ऐसी जगहें हैं, जहां हमेशा धूप खिली रहती है। चंद्रमा पर सूर्य की रोशनी पहुंचती है और सूर्य से प्रकाशित टॉप 20 जगहों में सात उत्तरी ध्रुव के पास हैं। दक्षिणी ध्रुव के मुकाबले उत्तरी ध्रुव पर सूर्य का प्रकाश ज्यादा समय तक रहता है।यहां यह भी उल्लेखनीय है कि वर्ष 1990 के दशक में कई मून मिशन भी दक्षिणी ध्रुव पर ही फोकस्ड थे। इसी वजह से आगे के चंद्रमा पर भेजे जाने वाले मिशन में दक्षिणी ध्रुव को तरजीह दी जाने लगी।यहां पाठकों को यह भी बता दूं कि चांद के दक्षिणी ध्रुव पर सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि अमेरिका और चीन समेत दुनिया की नजरें भी हैं। चीन ने कुछ साल पहले दक्षिणी ध्रुव से कुछ दूरी पर अपने एक लैंडर को उतारा था। इतना ही नहीं, अमेरिका तो जल्द ही चांद के दक्षिणी ध्रुव पर अंतरिक्ष यात्रियों को भेजने की तैयारी भी कर रहा है। हाल फिलहाल चंद्रयान-3 को 14 जुलाई को लॉन्च कर दिया गया है, लेकिन इसे चांद तक पहुंचने में डेढ़ महीने का समय लगेगा। अनुमान है कि 23 या 24 अगस्त को चंद्रयान-3 चांद की सतह पर लैंड कर सकता है।अगर चंद्रयान-3 का विक्रम लैंडर वहां सुरक्षित और सॉफ्ट लैंडिंग कर लेता है तो ऐसा करने वाला भारत दुनिया का पहला देश बन जाएगा। इतना ही नहीं, चांद की सतह पर लैंडर उतारने वाला चौथा देश बन जाएगा। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि चांद की सतह पर अब तक अमरीका, रूस और चीन जैसे देश ही पहुंच चुके हैं। सितंबर 2019 में इसरो ने चंद्रयान-2 को चांद के दक्षिणी ध्रुव पर उतारने की कोशिश की थी, लेकिन तब लैंडर की हार्ड लैंडिंग हो गई थी। वर्तमान मिशन में इसरो के वैज्ञानिकों ने मिशन में काफी सुधार करते हुए चंद्रयान 3 में कई तरह के बदलाव किए गए हैं। हालांकि चंद्रमा का साउथ पोल का कुछ एरिया लगातार अंधेरे की आगोश में रहता है, क्योंकि वहां सूरज की रोशनी बिल्कुल ही नहीं पहुंचती है और यही कारण भी है कि वहां पर तापमान शून्य से 235 डिग्री तक नीचे रहता है। इतने कम तापमान में न सिर्फ किसी मशीन का काम करना भी काफी मुश्किल होता है बल्कि चंद्रमा के साउथ पोल पर तमाम क्रेटर्स के होने की वजह से भी लैंडिंग करना काफी मुश्किल है। यहां अपने पाठकों को यह भी बता दूं कि अब तक जो भी मिशन चांद पर भेजे गए हैं वे खासतौर पर इक्वेटर या विषुवत रेखा (चंद्रमा के बीचों-बीच से गुजरने वाली और उसे उत्तरी व दक्षिणी ध्रुव में बांटने वाली आभासी रेखा) पर या उसके आस-पास के एरिया तक ही पहुंचे हैं। अब तक इक्वेटर से सर्वाधिक दक्षिण में 40 डिग्री अक्षांश तक नासा द्वारा सर्वेयर-7 को भेजा गया है।चीन का चांग-4 भी 45 डिग्री अक्षांश पर चंद्रमा के फार रीजन (जो पृथ्वी से कभी नहीं दिखता) में उतरा था।अमरीकी स्पेस एजेंसी नासा ने एक रिपोर्ट में बताया था कि ऑर्बिटरों से परीक्षणों के आधार पर कहा जा सकता है कि चांद के दक्षिणी ध्रुव पर बर्फ है और यहां दूसरे प्राकृतिक संसाधन भी हो सकते हैं। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1998 में नासा के एक मून मिशन ने दक्षिणी ध्रुव पर हाइड्रोजन की मौजूदगी का पता लगाया था। नासा का कहना है कि हाइड्रोजन की मौजूदगी वहां बर्फ होने का सबूत देती है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि यह भारत की बहुत बड़ी उपलब्धि है, जिस पर गर्व किया जा सकता है। चंद्रयान- 3 की लांचिंग से भारत का कद अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यकायक बढ़ गया है।आज दुनिया के विकसित देश भी यह मानने लगे हैं कि भारत अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रहा है और जल्द ही यह दुनिया के विकसित देशों को अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में पीछे छोड़ देगा।

> **“ दक्षिणी ध्रुव के मुकाबले उत्तरी ध्रुव पर सूर्य का प्रकाश ज्यादा समय तक रहता है।यहां यह भी उल्लेखनीय है कि वर्ष 1990 के दशक में कई मून मिशन भी दक्षिणी ध्रुव पर ही फोकस्ड थे। इसी वजह से आगे के चंद्रमा पर भेजे जाने वाले मिशन में दक्षिणी ध्रुव को तरजीह दी जाने लगी।यहां पाठकों को यह भी बता दूं कि चांद के दक्षिणी ध्रुव पर सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि अमेरिका और चीन समेत दुनिया की नजरें भी हैं।**

अब सार्थक बहस हो एवं सुचारु चले संसद

विपक्षी गठबंधन इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस (इंडिया) ने मोदी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव का निर्णय लेकर अपनी राजनीतिक अपरिपक्वता, नासमझी एवं विवेकहीनता का ही परिचय दिया है, यह प्रस्ताव स्वीकार भी हो गया। अब प्रतीक्षा है उस पर बहस की। आइएनडीआइए भले ही अविश्वास प्रस्ताव को अपनी जीत समझ रहा हो और यह मानकर चल रहा हो कि उसे संसद में अपनी एकजुटता एवं ताकत दिखाने का अवसर मिलेगा, लेकिन एक तो इस प्रस्ताव का गिरना तय है, दूसरा विपक्षी एकता एवं शक्ति के दावे भी खोखले साबित होने है। जब प्रस्ताव का गिरना पहले से ही तय है तो क्यों विपक्ष अपनी किरकिरी कराने पर तूली। विपक्षी दलों का मणिपुर पर प्रधानमंत्री के वक्तव्य की अपनी मांग पर अडे. रहना भी हास्यास्पद है। क्योंकि प्रधानमंत्री ने पहले ही मणिपुर के हालात पर क्षोभ व्यक्त करते हुए संसद भवन परिसर में कहा था कि यह घटना किसी भी सभ्य समाज को शर्मसार करने वाली है और इससे पूरे देश की बेइज्जती हुई है। बावजूद विपक्ष की जिद्द इसलिये भी बचकानी एवं बेहूदी कही जायेगी क्योंकि कोई भी मामला जिस मंत्रालय संबंधित होता है, उसके ही मंत्री को उस पर वक्तव्य देना होता है।

सोचने वाली बात है कि विपक्ष यदि वास्तव में मणिपुर पर दुःखी होता तो चार दिन संसद का काम रोक कर न तो नारेबाजी और न हठधर्मिता में अपनी ऊर्जा खपा रहा होता और न ही गृह मंत्री को सुनने से इन्कार कर रहा होता। विपक्षी दलों की चिंता मात्र एक दिखावा ही अधिक प्रतीत हुई है। विपक्ष का चेहरा जनता के सामने बेनकाब हुआ है, जो कुछ बाकी रहा है प्रधानमंत्री अविश्वास प्रस्ताव पर अपने वक्तव्य में उसे उघाड़ देंगे, इस नए गठबंधन की कथित एकजुटता की पोल भी खोल ही देंगे और उसकी आपसी खींचतान को भी उजागर कर ही देंगे। विपक्षी गठन इंडिया के गठन के बाद वे कितने राजनीतिक रूप से शक्तिशाली हुए है और प्रधानमंत्री को चुनौती देने की स्थिति कितने सक्षम बने हैं, इन स्थितियों का भी पदार्पाश होगा। बात जब तीर से निकली है तो दूर तक जायेगी, अविश्वास प्रस्ताव की बहस केवल मणिपुर तक सीमित नहीं रहने वाली, क्योंकि हालिया पंचायत चुनावों के दौरान बंगाल में जो भीषण हिंसा हुई, कोई भी उसकी अनदेखी नहीं कर सकता-मोदी सरकार तो बिल्कुल भी नहीं। यह सही है कि अविश्वास प्रस्ताव लाकर विपक्ष ने अपने इस उद्देश्य को हासिल कर लिया कि मणिपुर के मामले में प्रधानमंत्री को सदन में बोलना ही पड़ेगा, लेकिन उसने उन्हें अपनी राजनीतिक हठधर्मिता को बेनकाब करने का अवसर भी दे दिया है। एक तरह से अपने पांव पर खुद कुल्हाड़ी चला दी है।

यह पूरे देश की जनता को मालूम है कि इस अविश्वास प्रस्ताव से मोदी सरकार को कोई खतरा नहीं है क्योंकि इसके पास अपने बूते पर सदन में जबर्दस्त बहुमत है और 538 की वर्तमान सदस्य संख्या वाली लोकसभा में भाजपा व इसके सहयोगी दलों के 332 सांसद हैं जबकि इंडिया दलों के 142 व निरपेक्ष या संकट के समय मोदी सरकार का साथ देने वाले दलों के सदस्यों की संख्या 64 है। यह अविश्वास प्रस्ताव सांकेतिक है और इस बात का प्रयास है कि इसके माध्यम से विपक्षी गठबन्धन देश के लोगों के बीच अपने समर्थन में जन-अवधारणा का निर्माण कर सके। लेकिन विपक्षी दलों का यह न्यूसेंस भरा ध्येय अधूरा ही रहने वाला है। अविश्वास प्रस्ताव संसदीय लोकतन्त्र में प्रायः सरकारों के खिलाफ जन अवधारणा सृजित करने के लिए ही लाये जाते हैं क्योंकि भारत के संसदीय इतिहास में अब तक 28 अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत किये गये, जिनमें केवल तीन बार ही सत्तारूढ़ सरकारें इनके माध्यम से सत्ता से बेदखल की गई हैं। मोदी सरकार अपने इस कार्यकाल में पहली बार अविश्वास प्रस्ताव का सामना कर रही है, इसके पहले 2018 में भी मोदी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया गया था, तब भी उसे पराजय का सामना करना पड़ा था और उस समय ही मोदी ने भविष्यवाणी करते हुए कहा था कि 2023 में फिर से अविश्वास प्रस्ताव लाने का आपको मौका मिले। मौका तो विपक्ष को मिल ही गया है, पिछली बार की तरह इस बार भी ऐसा ही सुनिश्चित सा दिख रहा है, कि प्रस्ताव औंधे मूंह गिरेगा। हालांकि लोकतंत्र के सर्वोच्च मंच संसद पर सत्ता पक्ष और विपक्ष की ऐसी रस्साकशी कोई नई बात नहीं है। इसे स्वस्थ लोकतंत्र का लक्षण भी कहा जा सकता है। लेकिन इस तरह की कवायद एवं मंथन से जनता के हित में कुछ निकलना चाहिए, वह निकलता हुआ दिख नहीं रहा है। मणिपुर में जिस तरह के दृश्य पिछले दिनों देखने को मिले, उसके मद्देनजर इस तरह की रस्साकशी की बजाय सार्थक बहस का माहौल बनाकर समस्या के समाधान का रास्ता निकला जाता तो वह आशा की किरण बनता। बेहतर तो यही होता कि विपक्ष और सरकार आपस में बातचीत से सहमति की कोई सूरत निकाल कर मणिपुर पर विस्तृत चर्चा कर लेते और इसके लिए अविश्वास प्रस्ताव की नौबत न आती।

अविश्वास प्रस्ताव से तीन बार ही सत्तारूढ़ सरकारें सत्ता से बेदखल की गई हैं। इनमें सभी सरकारें गठबंधनों की खिचड़ी सरकारें थीं और एक बार 1999 में तो अटल बिहारी वाजपेयी की साझा सरकार केवल एक वोट से ही गिर गई थी। जबकि इससे पहले 1990 में वीपी सिंह की दो खड़ाऊ भाजपा व वामपंथियों के समर्थन पर खड़ी सरकार बुरी तरह लोकसभा में हार गई थी और 1997 में कांग्रेस के समर्थन पर टिकी देवेगौड़ा सरकार का हश्र भी ऐसा ही हुआ था।

> “ सोचने वाली बात है कि विपक्ष यदि वास्तव में मणिपुर पर दुःखी होता तो चार दिन संसद का काम रोक कर न तो नारेबाजी और न हठधर्मिता में अपनी ऊर्जा खपा रहा होता और न ही गृह मंत्री को सुनने से इन्कार कर रहा होता। विपक्षी दलों की चिंता मात्र एक दिखावा ही अधिक प्रतीत हुई है। विपक्ष का चेहरा जनता के सामने बेनकाब हुआ है, जो कुछ बाकी रहा है प्रधानमंत्री अविश्वास प्रस्ताव पर अपने वक्तव्य में उसे उघाड़ देंगे, इस नए गठबंधन की कथित एकजुटता की पोल भी खोल ही देंगे ।

विधायक रमेश जायसवाल के नेतृत्व मे जायसवाल क्लब का प्रतिनिधिमंडल मुख्यमंत्री से मिला

भगवान सहस्त्रबाहु की मूर्ति लगाने व श्रद्धेय डा काशी प्रसाद के नाम पर बोर्ड का गठन करने की मांग पर मुख्यमंत्री ने दिया शीघ्र कार्रवाई का आश्वासन

सुरेश गांधी

लखनऊ। चंदौली के दीन दयाल नगर विधायक व जायसवाल क्लब के संरक्षक रमेश जायसवाल के नेतृत्व में गुरुवार को जायसवाल क्लब का प्रतिनिधिमंडल मुख्यमंत्री आवास पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मिला। इस दौरान विधायक ने जायसवाल क्लब के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोज जायसवाल का मुख्यमंत्री से परिचय कराने के बाद पांच सूत्रीय मांग पत्र मुख्यमंत्री को सौंपा और डॉ काशी प्रसाद जायसवाल की लिखी कुछ पुस्तके भेंट की। मुख्यमंत्री ने सभी मांगों पर कार्रवाई का आश्वासन देते हुए कहा कि डॉ काशी प्रसाद जैसी प्रतिभा को वह भलीभांति जानते है। इसके अलावा विधायक ने अपने विधानसभा के विकास के लिए विस्तार मुख्यमंत्री से चर्चा की।

विधायक रमेश जायसवाल ने कहा कि मुख्यमंत्री को सौंपे गए मांग पत्र में जायसवाल समाज के कुलदेवता भगवान सहस्त्राबाहु की मूर्ति वाराणसी में लगाने, स्वागत द्वार बनाने, मिजार्पुर में श्रद्धेय काशी प्रसाद जायसवाल के नाम विश्व विद्यालय की स्थापना कर वैश्य समाज को सम्मान देने सहित समाज के पुरोधा व शिक्षाविद डॉ काशी प्रसाद जायसवाल के नाम से एक बोर्ड का गठन कर समाज के उत्थान करने की मांग प्रमुख है। मुख्यमंत्री ने काफी विस्तार से मांगों पर विचार विमर्श कर कार्यवाही का आश्वासन भी दिया। खास बात यह है कि प्रतिनिधि मंडल से मुख्यमंत्री ने स्वयं कहा की काशी प्रसाद जी एक प्रकांड विद्वान थे। इसके अलावा मांग पत्र में अपने क्षेत्र के विकास के लिए सुभाष पार्क से चकिया तिराहे तक एलिवेटेड पुल, हसनपुर परमानंदपुर में गडही नदी पर पुल का निर्माण, पड़ाव क्षेत्र में सरकारी बालिका इंटर कॉलेज के निर्माण, खरगीपुर में सरकारी प्रा पा बनवाने, विधानसभा में प्रस्तावित छोटे बड़े 32 पुलियां की स्वीकृत प्रदान कर उसे बनवाने की भी मांग की है और मुख्यमंत्री ने कार्रवाई का आश्वासन दिया है। प्रतिनिधिमंडल में विधायक की धर्मपत्नी एवं पूर्व चेयरमैन श्रीमती रेखा जायसवाल, जायसवाल क्लब के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोज जायसवाल, लक्ष्मण जायसवाल, रमेश जायसवाल हाइडिल, आरडी गुप्ता, विधायक प्रतिनिधि संजय कन्नोजिया आदि शामिल थे। बता दें, विधायक रमेश जायसवाल ने पहले भी वाराणसी में मूर्ति लगाने व स्वागत द्वार बनाने के साथ ही श्रद्धेय काशी प्रसाद जायसवाल के नाम पर उनके गृह जनपद मिजार्पुर में विश्व विद्यालय की स्थापना करने की मांग सदन में उठा चुके है। जायसवाल क्लब के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोज जायसवाल ने कहा कि यह गर्व की बात है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी सहित पूरे देश में जायसवाल सहित वैश्य समाज की एक बड़ी आबदी है। अगर उनकी मांगे पूरी हुई तो समाज के लोगों का दिल जितने में मुख्यमंत्री सफल होंगे। उन्होंने कहा कि विधायक रमेश जायसवाल की तत्तपरता दशार्ता है कि वह समाज के लिए दिल से समर्पित है। विधायक जी पहले नेता है, जो समाज के लिए न सिर्फ समर्पित है, बल्कि उनके हर दुख सुख में भागीदारी कर उनका हौसलाफजाई करते है और समाज का उत्पीड़न करने वालों के खिलाफ सीना तानकर खड़े हो जाते है।

> “ विधायक रमेश जायसवाल ने कहा कि मुख्यमंत्री को सौंपे गए मांग पत्र में जायसवाल समाज के कुलदेवता भगवान सहस्त्राबाहु की मूर्ति वाराणसी में लगाने, स्वागत द्वार बनाने, मिजार्पुर में श्रद्धेय काशी प्रसाद जायसवाल के नाम विश्व विद्यालय की स्थापना कर वैश्य समाज को सम्मान देने सहित समाज के पुरोधा व शिक्षाविद डॉ काशी प्रसाद जायसवाल के नाम से एक बोर्ड का गठन कर समाज के उत्थान करने की मांग प्रमुख है। मुख्यमंत्री ने काफी विस्तार से मांगों पर विचार विमर्श कर कार्यवाही का आश्वासन भी दिया। खास बात यह है कि प्रतिनिधि मंडल से मुख्यमंत्री ने स्वयं कहा की काशी प्रसाद जी एक प्रकांड विद्वान थे।

अधिवक्ताओं में सामाजिक बदलाव लाने की ताकत है

शिवानन्द गिरि, अधिवक्ता

अधिवक्ताओं को ऑफिसर ऑफ द कोर्ट, विद्वान साधु, संत, ,क्षमा, दान ,ध्यान, दया, त्याग, एवं धैर्य का रूप माना जाता है परंतु क्या अब अधिवक्ताओं में ये सब गुण रह गए हैं? निसंदेह ये सभी गुण पहले कभी अथिवक्ताओं में होते थे परंतु जिनमें सामाजिक बदलाव लाने की ताकत थी वह समय के बदलाव में सभी कुछ बदल गए, अधिवक्तागण पहले समाज सेवा के लिए एवं न्याय की आवाज बनने के लिए वकालत के क्षेत्र में आते थे परंतु अब सच्चाई यह है कि रोजगार के रूप में देखते हुए वकालत को नए युवा अधिवक्तागण इस व्यवसाय में आ रहे हैं और जब वे इस व्यवसाय में आते हैं तो उन्हें पता चलता है कि वकालत करना इतना आसान भी नहीं है इसमें कई दशक अपने आप को स्थापित करने में बीत जाते हैं, जब जिंदगी जीने का समय होता है उस वक्त वह संघर्ष करते हुए बुढ़ापे की ओर बढ़ जाते हैं और जब बुढ़ापा में उनकी वकालत चलती भी है तो उनकी किसी भी सपने को सच करने का समय उनके पास नहीं होता है बहुत सारे अधिवक्तागण अपने स्वाभिमान एवं मान सम्मान को ताक पर रखकर वकालत में वे हर हथकंडे अपनाते हैं जो उन्हें नहीं अपनाने चाहिए या यूं कहें कि जो वह कॉलेज के दिनों में लॉ बुक्स को पड़े हैं वह लॉ बुक्स में लिखी गई बातें व्यवहारिक धरातल पर वकालत करने में इस्तेमाल नहीं होते हैं क्योंकि जो वाकई में विद्वान अधिवक्तागण होते हैं जिन्हें कानून की गहराई से जानकारी होती है उनसे दलाल काम करवा कर उन्हें थोड़ी सी राशि देकर सारी राशि वे अपने पास खुद रख लेते हैं और इस तरह से काम कोई और करता है नाम किसी और का होता है, इन्हीं सब बातों को देखते हुए अधिकांश अधिवक्तागण बहुत निराश हो गए हैं क्योंकि उनका सीधे संपर्क क्लाइंट से नहीं हो पाता है हालांकि ऐसा भी नहीं है कि पूर्व में वकालत में ऐसा नहीं होता था सच्चाई यह है कि पूर्व में भी कुछ लोग इस प्रकार की वकालत करते थे गौरतलब है कि पूर्व में वकालत करने के लिए अधिवक्ता जमींदार घरानों से या कहें उच्च घरानों से ही आते थे कालांतर में बेरोजगारी की समस्या एवं पढ़ने लिखने वालों की संख्या जब

> “ अधिवक्तागण पहले समाज सेवा के लिए एवं न्याय की आवाज बनने के लिए वकालत के क्षेत्र में आते थे परंतु अब सच्चाई यह है कि रोजगार के रूप में देखते हुए वकालत को नए युवा अधिवक्तागण इस व्यवसाय में आ रहे हैं और जब वे इस व्यवसाय में आते हैं तो उन्हें पता चलता है कि वकालत करना इतना आसान भी नहीं है इसमें कई दशक अपने आप को स्थापित करने में बीत जाते हैं, जब जिंदगी जीने का समय होता है ।

बढ़ी तो छात्र वकालत के क्षेत्र में व्यवसाय करने के उद्देश्य से भी आने लगे

आज न्यायालयों में व्याप्त दोषपूर्ण व्यवस्था के कारण भी अधिवक्तागणों में काफी असंतोष व्याप्त हो गया है क्योंकि कुछ अधिवक्तागणों का बेल न्यायालयों में पहले सुन लिया जाता है और कुछ अधिवक्तागणों का फाइलिंग पकड़ाने में कई महीने लग जाते हैं, इस प्रकार की दोहरी व्यवस्था के कारण भी अधिवक्तागणों में असंतोष व्याप्त हो गया है, फेस वैल्यू एक शब्द न्यायालयों में बहुत प्रचलित है वह फेस वैल्यू ही दोषपूर्ण व्यवस्था का सबसे बड़ा प्रमाण है न्यायालयों में जिस प्रकार का कंप्यूटरीकरण हुआ है उसकी दोषपूर्ण व्यवस्था तो सबसे ज्यादा अधिवक्ताओं में असंतोष पैदा करती है क्योंकि अधिकांश केस के रिकॉर्ड का डेट सीआईएस पर गलत चढ़ा हुआ है जिसके आधार पर रिकॉर्ड को खोजने में अधिवक्ताओं को काफी परेशानी होती है साथ ही माननीय पटना उच्च न्यायालय के आदेशानुसार ि2ि का आर्डर शीट भी ऑनलाइन सीआईएस पर चढ़ाना है परंतु ऐसा नहीं हो रहा है व्यवहार न्यायालय में लगाए गए डिस्प्ले बोर्ड एवं सीसीटीवी कैमरा कभी स्टार्ट ही नहीं हुआ और कभी स्टार्ट हुआ भी तो आज के डेट में अधिकांश सीसीटीवी कैमरा बंद है और डिस्प्ले बोर्ड तो केवल कोर्ट रूम की शोभा बनी हुई है उससे किसी भी अधिवक्ताओं को कोई फायदा आज तक नहीं हुआ है सिविल कोर्ट का रिकॉर्ड नाजायज क्लर्क के भरोसे चल रहा है, मोटी वेतन पाने वाले ओ/सी ,बी/सी नाजायज क्लर्क रखकर कोर्ट का काम करवा रहे हैं।

ऐसा कहा जाता है कि न्यायालय के सामने सभी बराबर होते हैं परंतु सच्चाई क्या ऐसा है? न्यायालयों में परिवारवाद वंशवाद इसका प्रमुख उदाहरण है` क्या न्यायाधीशों के बच्चे ही कानून के ज्यादा जानकार होते हैं और साधारण परिवार से आए हुए अधिवक्ता को कानून की कम जानकारी होती है जो वह जुडिशरी का एग्जाम पास नहीं कर पाते हैं? आप सर्वे करा कर देख लीजिए न्यायालयों में चाहे पेशकार ,चपरासी या जुडिशल मजिस्ट्रेट, न्यायधीश जितने भी काम कर रहे हैं 50% से ज्यादा किसी न किसी प्रकार से न्यायाधीश के खानदान से जुड़े हुए हैं।

न्यायालय में दोषपूर्ण व्यवस्था तो एक तरफ विद्यमान है ही दूसरी तरफ अधिवक्ताओं की संस्था बार काउंसिल ऑफ इंडिया या स्टेट बार कौंसिल भी दोषपूर्ण व्यवस्था से अछूती नहीं है क्योंकि पिछले वर्ष ही कोरोनावायरस के काल में अधिवक्ताओं के लिए बार काउंसिल ऑफ इंडिया या अन्य स्टेट के बार काउंसिल ने अधिवक्ताओं के लिए क्या किया है यह किसी अधिवक्तागणों से छिपी हुई नहीं है और जब अधिवक्तागण खुलकर इस व्यवस्था का विरोध करने लगे तो अधिवक्ताओं की आवाज को बंद करने के लिए एक कानून लाने का प्रयास किया गया जिसमें न्यायपालिका या बार काउंसिल के किसी पदाधिकारी के खिलाफ बोलने वाले किसी भी अधिवक्ता पर कानूनी कार्रवाई करने एवं उनका वकालत का लाइसेंस रद्द करने का प्रावधान किया गया जिसका कठोर विरोध राष्ट्रीय स्तर पर सभी अधिवक्ता गणों ने किया और तब मजबूर होकर बार काउंसिल ऑफ इंडिया उस कानून को वापस ली थी हमारा संविधान भी बोलने के अधिकार देश के आम नागरिकों को देता है और अधिवक्ता तो समाज का आवाज होता है और उसे ही बोलने के अधिकार से वंचित करने का प्रयास करना एक जघन्य अपराध की तरह था जिस पर अधिवक्ताओं के मन में घोर असंतोष, एवं निराशा व्याप्त हो गई थी बार काउंसिल ऑफ इंडिया ,स्टेट बार कौंसिल या जिला अधिवक्ता संघ कोई भी अपने आमदनी एवं खर्चों का डीटेल्स अपने वेबसाइट पर ऑनलाइन नहीं डालती है ताकि ट्रांसपेरेंसी हो सके 24 सितंबर 2022 को पटना के बापू सभागार में बीसीआई एवं बिहार स्टेट बार काउंसिल ने संयुक्त रूप से भव्य कार्यक्रम कराया था जिसमें अधिवक्ताओं के करोड़ों रुपए खर्च हुए थे परंतु उसका परिणाम क्या निकला अधिवक्ताओं के खाने के वीडियो वायरल हुए जिसमें उस कार्यक्रम की कुव्यवस्था उजागर हुई उस कार्यक्रम में सीजेआई साहब ने वकीलों के मान सम्मान में बहुत कुछ बातें कहीं उन्होंने कहा कि "वकीलों में सामाजिक बदलाव लाने की ताकत है"। जो देश की न्यायिक प्रक्रिया है उसके विरुद्ध जनाक्रोश जायज है, अभी हाल फिलहाल में भारत के गृह मंत्री श्री अमित शाह ने आईपीसी एवं सीआरपीसी में महत्वपूर्ण बदलाव के लिए एक ड्राफ्ट बनाकर पार्लियामेंट में पेश करने की बातें कही हैं जिससे कानूनी प्रक्रिया में बहुत बड़े बदलाव संभव हो सकते हैं माननीय सुप्रीम कोर्ट ने अपने कई निर्णयों में अधिवक्ताओं को "ऑफिसर ऑफ द कोर्ट" के नाम से भी सम्मानित किया है और न्यायालय के प्रत्येक निर्णयों में अधिवक्ताओं के लिए "लर्नेड काउंसिल' या विद्वान अधिवक्ता शब्द का इस्तेमाल किया जाता है परंतु सच्चाई क्या ऐसी है ? केवल अधिवक्ताओं को खुश करने के लिए इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जाता है जब सुप्रीम कोर्ट यह मानती है कि "एडवोकेटस आर ऑफिसर ऑफ द कोर्ट" तो एडवोकेट एक्ट 1961 में "अधिवक्ता" की परिभाषा में "एडवोकेटस आर ऑफिसर ऑफ द कोर्ट" शब्द को क्यों नहीं समाहित कर दिया जाता है इस पर संसद एवं सर्वोच्च न्यायालय को अवश्य ध्यान देना चाहिए क्योंकि अधिवक्तागणों के बैठने , लाइब्रेरी, शौचालय एवं स्वास्थ्य की जांच के लिए अस्पताल, दवा जैसी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए भी कोई व्यवस्था नहीं है। यह भी गौरतलब है कि आज तक जितनी भी राजनीतिक दलें है बनी है उन्होंने अपनी चुनावी घोषणा पत्रों में अधिवक्ताओं के वेलफेयर के लिए एक भी स्कीम को नहीं रखा है और सभी राजनीतिक दलों ने एक षड्यंत्र के तहत हर दल नें लीगल सेल का गठन कर के अधिवक्ताओं की एकजुटता को तोड़ने का प्रयास किया है` अधिकांश अधिवक्तागण किसी पार्टी के लीगल सेल से जुड़े हुए हैं और वह अपने पार्टी के लाइन से हटकर कोई गलत बयान अपने पार्टी के खिलाफ नहीं दे सकते हैं चाहे ऐसा करने से उनके अधिवक्ता भाइयों के हितो की हत्या ही क्यों ना हो जाए और इतना ही नहीं हर राज्यों में अधिवक्ताओं के हितों की रक्षा की लड़ाई लड़ने के लिए छोटे बड़े दर्जनों अधिवक्ताओं के मंच, संगठन, परिषद ,फोरम संस्थाएं इत्यादि बनाए गए हैं जो अधिवक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए किसी दूसरे अधिवक्ताओं के मंच संस्था की बातों का समर्थन नहीं करते हैं और इस वजह से अधिवक्तागण आपसी फूट एवं वैमनस्यता के वजह से भी संयुक्त एवं संगठित रूप से अपने हितों की रक्षा के लिए आवाज ना ही बार काउंसिल ऑफ इंडिया या स्टेट बार कौंसिल या सरकार के सामने उठा पाते हैं।

इसलिए अगर अधिवक्ताओं में सामाजिक बदलाव लाने की ताकत को मजबूत करना है तो सबसे पहले अधिवक्ताओं को मजबूत करना होगा एवं अधिवक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए बनाए गए बार काउंसिल ऑफ इंडिया या स्टेट बार काउंसिल में अच्छे एवं ईमानदार पदाधिकारी को चुन कर भेजना होगा क्योंकि अधिवक्तागणों के पदाधिकारीगण ही अधिवक्ताओं के शुभचिंतक नहीं दिख रहे हैं इसलिए अधिवक्ताओं के प्रतिनिधि एक अच्छे विचारवान एवं अधिवक्ता समाज के हितों की रक्षा के लिए तत्पर अधिवक्ता हो ना कि वह न्यायाधीशों एवं सांसदों की दलाली चापलूसी करने वाले।

"ऐसा कहा जाता है कि न्यायालय के सामने सभी बराबर होते हैं परंतु सच्चाई क्या ऐसा है? न्यायालयों में परिवारवाद वंशवाद इसका प्रमुख उदाहरण है` क्या न्यायाधीशों के बच्चे ही कानून के ज्यादा जानकार होते हैं और साधारण परिवार से आए हुए अधिवक्ता को कानून की कम जानकारी होती है जो वह जुडिशरी का एग्जाम पास नहीं कर पाते हैं? आप सर्वे करा कर देख लीजिए न्यायालयों में चाहे पेशकार ,चपरासी या जुडिशल मजिस्ट्रेट, न्यायधीश जितने भी काम कर रहे हैं 50% से ज्यादा किसी न किसी प्रकार से न्यायाधीश के खानदान से जुड़े हुए हैं।

मेष कर्म स्थान का शनि मेहनत के बाद ही सफलता देगा।शनिबार की संध्या में लड्डू गरीबों में बांटे।सेहत का ध्यान रखें। गुरु की कृपा से भाग्य की बृद्धि होगी।भगवान श्री सूर्यनारायण को अर्ध्य प्रदान करें। शुभ अंक 1 और शुभ रंग लाल है।

बृषभ जीवन में आनंद का वातावरण बनाने के लिए दुर्गासप्तशती का पाठ करें।विद्यार्थी के लिए और प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल अवसर हैं। मन खिन्न रहेगा।बहुत मेहनत के बाद सफलता मिलेगी।शुभ अंक 2 और शुभ रंग सफेद या ऑफ वाइट।

मिथुन दशम सूर्य आपके जीवन में विशेष कृपा बनाएगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।प्रतिष्ठा तो मिलेगी। परेशानी होगी।अष्टम शनि के लिए चांदी का टुकड़ा अपने पास रखें। लेकिन धनागमन में थोड़ी मा के महालक्ष्मी रूप की पूजा करें। शुभ अंक 3 रंग हरा और लाल।

कर्क प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल समय है।हनुमान जी की आराधना करें। सेहत का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। घर के स्त्री पक्ष का सेहत चिंता का कारण बनेगा।बजरंगबाण का पाठ करें। शुभ अंक 7। शुभ रंग- गुलाबी

सिंह मत्र के वेश में छुपे शत्रु से सावधानी की जरूरत है।श्री लुक्ष्मी नारायण की पूजा से धन लाभ होगा।संध्या प्रहर घी का चतुर्मुख दीपक अपने घर के मुख्यद्वार पर प्रतिदिन जलाए।उत्सव और मांगलिक कार्य की बातें करने का उपयुक्त समय है। शुभ रंग नीला। शुभ अंक 8।

कन्या पंचम शनि करियर के क्षेत्र में अच्छे अवसर देंगे।विद्या व बुद्धि से सफलता प्राप्त होंगे।गुरु के प्रभाव से लीवर या पेट की समस्या रहेगी। महामृत्युंजय मंत्र का जाप या श्रवण करें। शुभ रंग पीला। शुभ अंक 3।

बृश्चिक आपके आराध्य श्री लक्ष्मी नारायण की कृपा से धन आगमन का योग है।भाई के लिए समय अनुकूल नही है।बाएं सुर बाले पीले गणपति का तस्बीर घर में रखें।प्रतिष्ठा व सम्मान का योग है। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 5।

तुला भाग्य का राहु राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे।गुरु की कृपा से शत्रु व रोग का नाश होगा।शनि माता के स्वास्थ्य के लिए ठीक नही है।चांदी के पात्र से गाय का कच्चा दूध नदी में बहाएं।अनुकूलता बनी रहेगी। शुभ रंग लाल। शुभ अंक 4।

मकर जिद्द छोड़ना होगा।बाएं हाथ की कलाई में पीला धागा बांधने सेनुक्सान कम होगा।राहु अचानक व विचित्र परिणाम दे सकता है।कालभैरव जी की पूजा करें। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 7।

कुम्भ झूठ से नफरत होगी।झूठे लोगों से सामना होगा।लाभ होंगे लेकिन मन के अनुकूल नही।लेकिन मान सम्मान बढेगा।मंगल कार्य के लिए आगे बढ़े।आवश्यकता को कम करें।चोट चपेट से बचना होगा।हल्दी का गांठ अपने पर्स में रखें।ॐ नमो नारायणाय का जाप करें। शुभ रंग-गुलाबी। शुभ अंक 8।

धनु धन का आगमन होगा।लेकिन सूर्यास्त के बाद दूध व दही का सेवन नही करें।आत्मभिमान से बचना होगा।अहंकार को हावी नही होने दे।हनुमान चालीसा का पाठ करें। शुभ अंक 6। शुभ रंग हरा।

मीन सूर्य की कृपा से पद व प्रतिष्ठा की बृद्धि होगी।गुस्सा पर नियंत्रण रखें।दुश्मन से सचेत जरूरी है।नजर बचना होगा।घर की शांति राहु के कारण नियंत्रण में नही रहेगा। दोस्तों से बचें। बिना कारण वाद-विवाद ना करें हानि हो सकती है। सफेद कपड़े में सिंधा नामक घर के मुख्य द्वार पर बांधे। शुभ रंग -हरा। शुभ अंक 9।

नये शिक्षा सत्र का करें हम अभिनंदन

शिक्षण संस्थानों में नया शिक्षा सत्र प्रारंभ हो चुका है। प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में प्रायः नया शिक्षा सत्र अप्रैल महीने में आरंभ हो जाता है, किन्तु उच्च शिक्षा के संस्थानों में जुलाई से ही नये शिक्षा सत्र का प्रारंभ होता है। यदि देखा तो वास्तव में सभी शिक्षण संस्थानों में नया शिक्षा सत्र जुलाई महीने में ही आरंभ होता है। इससे पूर्व का समय तो शिक्षण संस्थानों में प्रवेश लेने, पुस्तकें, स्टेशनरी, बैग और यूनिफॉर्म आदि खरीदने में व्यतीत हो जाता है। जो समय मिलता है, उसमें विद्यार्थी अपनी नई पुस्तकों से परिचय करते हैं। प्रायः विद्यार्थी भाषा की पुस्तकें पढ़ते हैं, क्योंकि उनमें कहानियाँ और कविताएं होती हैं, जो बच्चों को अति प्रिय हैं। कुछ समय विद्यालय जाने के पश्चात ग्रीष्म कालीन अवकाश आ जाता है। यह ग्रीष्म कालीन अवकाश ग्रीष्म ऋतु के मध्य में आता है। इस समयावधि में अत्यधिक भीषण गर्मी पड़ती है। प्रायः ग्रीष्म कालीन अवकाश मई के अंतिम सप्ताह से लेकर पूरे जून तक रहता है। इस समयावधि में उच्च तापमान के कारण सभी विद्यालय एवं महाविद्याल बंद रहते हैं। बच्चे ग्रीष्मकालीन अवकाश की वर्ष भर प्रतीक्षा करते हैं, क्योंकि इसमें उन्हें सबसे अधिक दिनों का अवकाश प्राप्त होता है। बच्चों के लिए ग्रीष्म कालीन अवकाश किसी पर्व से कम नहीं होता। इस समयावधि में उन्हें कोई चिंता नहीं होती अर्थात उन्हें न तो प्रातःकाल में शीघ्र उठकर विद्यालय जाने की चिंता होती है और न ही गृहकार्य करने की कोई चिंता होती है। प्रायः ग्रीष्म कालीन अवकाश में बच्चे अपने माता- पिता के साथ अपनी नानी के घर जाते हैं। वहां वे अपने ननिहाल के लोगों से मिलते हैं। सब उन्हें बहुत लाड़-प्यार करते हैं। नानी उन्हें बहुत सी कहानियां सुनाती हैं। नाना और मामा उन्हें घुमाने के लिए लेकर जाते हैं और उन्हें उनके पसंद के खिलौने दिलवाते हैं। आज के एकल परिवार के युग में बच्चे अपने माता- पिता के साथ अपने दादा-दादी के घर भी जाते हैं। वहां भी उन्हें बहुत ही लाड़- प्यार मिलता है। नानी की तरह दादी भी बच्चों को कहानियां सुनाती हैं। इन कथा- कहानियों के माध्यम से वे बच्चों में संस्कार पोषित करती हैं, जो उनके चरित्र का निर्माण करते हैं। यही संस्कार जीवन में उनका मार्गदर्शन करते हैं। अपने पैतृक गांव अथवा नगरों में जाने से वे वहां की संस्कृति से जुड़ते हैं। अपने सगे-संबंधियों से मिलते हैं। इससे उन्हें अपने संबंधों का पता चलता है। उनमें अपने संबंधियों के प्रति स्नेह का भाव पैदा होता है। वे अपने संबंधियों के प्रति अपने दायित्व को भी समझते हैं। बच्चों में संबंध मूल्य और जीवन मूल्य की समझ बनती है। सम्मान और स्नेह का भाव उपजता है। ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान बच्चे अपने माता- पिता के साथ पर्यटन स्थलों पर भी जाते हैं। अधिकतर लोग ऐसे स्थानों पर जाते हैं, जहां तापमान कम रहता है। ये पहाड़ी क्षेत्र होते हैं। इससे वे वहां की संस्कृति

एवं रीति- रिवाजों के बारे में जान पाते हैं। इसके अतिरिक्त वे धार्मिक स्थलों एवं ऐतिहासिक महत्त्व के स्थलों पर भी घूमने जाते हैं। घूमने का अर्थ केवल सैर सपाटा और मनोरंजन करना नहीं है, अपितु पर्यटन से बहुत सी शिक्षाएं मिलती हैं। धार्मिक स्थलों पर जाने से मन को शान्ति प्राप्त होती है तथा बच्चे अपने गौरवशाली संस्कृति से जुड़ पाते हैं। उन्हें अपने ईष्ट देवी-देवताओं के बारे में जानने का अवसर मिलता है। उनमें आस्था का संचार होता है। उनका आत्मबल एवं आत्म विश्वास बढ़ता है। ऐतिहासिक स्थलों पर जाने से उन्हें अपने इतिहास को जानने का अवसर प्राप्त होता है। ये व्यवहारिक ज्ञान है, जो उन्हें आने- जाने से प्राप्त होता है। यह उनके लिए आवश्यक भी है। वे जिन चीजों के बारे में पुस्तकों में पढ़ते उनके बारे में उन्हें सहज जानकारी प्राप्त होती है। इसका उनके मन- मस्तिष्क पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

शिक्षकों द्वारा ग्रीष्मकालीन अवकाश के लिए भी विद्यार्थियों को गृहकार्य दिया जाता है। इस दौरान विद्यालय अवश्य बंद रहते हैं, किन्तु ट्यूशन सेंटर खुले रहते हैं। बच्चे ट्यूशन के लिए जाते हैं और अपना गृहकार्य भी करते हैं। इसके अतिरिक्त ग्रीष्म कालीन अवकाश के दौरान बहुत से संस्थान अनेक प्रकार के कम समयावधि वाले कोर्स प्रारंभ करते हैं, उदाहरण के लिए चित्रकला, संगीत, गायन, नृत्य, मिट्टी के खिलौने बनाने, सजावटी सामान बनाना आदि। इस समयावधि में बच्चों को अपनी रुचि के अनुसार कार्य करने एवं नई- नई चीजें सीखने का अवसर प्राप्त होता है।

बिहार के उद्योग मंत्री माननीय श्री समीर महासेठ को सप्रेम जनपथ न्यूज का स्मृति चिन्ह भेट करते हुए सम्पादक राकेश कुमार

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

राकेश कुमार

समाचार संपादक

उभरता बिहार

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

अमर राज यादव

असिस्टेंट कमांडेंट

सीआरपीएफ

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

राधेश्याम प्रसाद

कृष्णा मार्केटिंग

एग्जीविशन रोड, पटना

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

रोहित कुमार

स्काई हाऊस

शाही कॉम्प्लेक्स, न्यू डाकबंग्ला रोड

पटना - 800 001

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. राकेश कुमार

आर्थोपेडिक सर्जन

मातृछाया आर्थो एंड हेल्थ केयर, जी/43 पीसी कॉलोनी कंकड़बाग, पटना - 20

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

उपेंद्र प्रसाद

अधिवक्ता

पटना उच्च न्यायालय

पटना

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

अरविंद राय

उपाध्यक्ष

नुआंव प्रखंड

राजद

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

वीणा कुमारी जायसवाल

अधिवक्ता

पटना उच्च न्यायालय, पटना

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस
कृष्ण जन्माष्टमी एवं रक्षाबंधन
की हार्दिक शुभकामनाएं

धीरज सिंह कुशवाहा

प्रदेश महासचिव
जदयू, बिहार

FORD HOSPITAL, PATNA

A NABH Certified Multi Super-Speciality Hospital

PATNA

A 105-Bedded Hospital Run by Three Eminent Doctors of Bihar

उत्कृष्ट एवं अद्वितीय की अनुभूति

Dr. Santosh Kr.

Dr. B. B. Bharti

Dr. Arun Kumar

PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE

NABH

PRE ACCREDITED

हृदय रोग चिकित्सा के लिए बेहतरीन टीम

2nd Multi Speciality NABH Certified Hospital of Bihar

Best Promising Multi Speciality Hospital 2018 Bihar.

फोर्ड हॉस्पीटल में उपलब्ध सेवाएं

क्लीनिकल सर्विसेस

- कार्डियोलॉजी
- क्रिटीकल केयर
- न्यूरोलॉजी
- स्पाईन सर्जरी
- नेफ्रोलॉजी एवं डायलेसिस
- ऑर्थोपेडिक एवं ट्रॉमा
- ओब्स एवं गॉयनेकोलोजी
- पेडिएट्रिक्स
- पेडिएट्रिक सर्जरी
- साइकियेट्री एवं साइकोलॉजी
- रेस्पिरेट्री मेडिसिन
- यूरोलॉजी
- सर्जिकल ऑन्कोलोजी

Empanelled with CGHS, ECR, CISF, NTPC, Airport Authority, Power Grid & other Leading PSUs, Bank, Corp. & TPS

New Bypass (NH-30) Khemnichak, Ramkrishna Nagar, Patna- 27
Helpline ; 9304851985, 9102698977, 9386392845, Ph.: 9798215884/85/86
E-mail : fordhospital@gmail.com web. : www.fordhospital.org